

ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

ISSN २२२९- ५४७X VIDEHA

'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२)



ऐ अंकमे अछि:-

ऐ अंकमे अछि:-

१ संपादकीय संदेश

२ गद्य

२.१ कैलाश कुमार मिश्र- सुग्गा आ सुगा(?)गान: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे

२.२ जगदीश प्रसाद मण्डल- लघु कथा- मुड़ियारल घर

२.३ चन्दना दत्त- आलेख- बाबा बालदास

२.४ अंकुर- लघु कथा संग्रह- नाम बिलास साहु

३ पद्य

३.१ आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल

३.२ **ओम प्रकाश- गजल**

३.३ बाबा वैद्यनाथ- आजाद गजल

३.४ जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल- गजल

३.५ पल्लवी मण्डल- समय

४ बालानां कृते- डॉ **शशिधर कुमर- उद या उदबिलाड़ि (बाल कविता)**

घो तो तहे लिंक बेलो फोर दोनलोअद ओल्द इस्सुएस ओफ विदेह मैथिली मागाजिने इन् पदफ फोरमात अन्द मैथिली औदिओ/ विदिओ/ बोओक्स/ पाइन्तिन्ग्स/ फ्होतो फिलेस् विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो वीडियो पोथी चित्रकला फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

હોમિ ૅડ઼યિ૭િ વ઼િદિહ ડાયેવોક ગ્રુપ

Google સમૂહ હોમિ વ઼િદિહ ગૌગ૭ગ્રુપસ

ઢો૭ળી ઋો૭ડ઼યિ૭િ વ઼િદિહ થૌતિ઼ેત઼ ળ વૉ ઁેગુ૭ત઼ વ઼િદિહ ડ઼િ જલોદયાસળસ ળહ્યુગહ શ્રેત઼સિયોપે.

વ઼િદિહ ળા૭વ઼ ૃત઼ળક ડસિકસળ શ્રેત઼મપત઼ ળાઉ઼

સંપાદ્દકીય

પ્ત઼વોય સમ્માળસઁ સમ્માળતિ શ્ત઼ી યળ્દ્ત઼ભાનુ સહિ સ્વ઼ર્ગીય ભડ઼ ગે૭। શ્ત઼દ્ઘાંજ઼ળ૭િ।

વ઼િદિહક હાળપ:વ઼િદિહ઼યોતિ ૧ ળનવ઼ળી ૨૦૧૭ કેત઼ અંક નકિ૭તિ વ઼િદિહ દસમ વત઼્પ્પમે પ્ત઼વેશ કડ઼ ળાએત। અઽ અવસત઼પત઼ વ઼િદિહ ગીત-સંગીતક એ૭વમ કેત઼ સમીક્ષા આદિ પ્ત઼કાશતિ કત઼વાક નતિ઼્ત઼ય ૭૭ક અછિ। છિટપુટ પ્ત઼યાસક અતતિક્તિ શાયદ ઇ પહિ૭ અવસત઼ હૌ મૈથિ૭ી પત્ત઼િકાતિમે ળપ્પત઼ કોનો સાહિત્યિક પત્ત઼િકાક કોનો એકટા અંકમે શ્ત઼૭િમી ગીતક એ૭વમ વા કોનો સ્વ઼ત઼ંત્ત઼ ગીત-ગળ૭ક એ૭વમ કેત઼ સમીક્ષા દેવાક પ્ત઼યાસ વા નતિ઼્ત઼ય કએ૭ ગે૭ હુઅએ। સંગીત સમીક્ષક ૭કતસઁ આગ્ત઼હ ળે ઓ કોનો એ૭વમક કોનો ગીત-ગળ૭-સંગીત કી પૂત઼ા એ૭વમ કેત઼ સમીક્ષા પઠાવથિ। સમીક્ષા-૭પ્પ આદમિ ગીત-સંગીતક ભાવ પક્ષ, ટેક્નીક૭ પક્ષ, શવ્દ યયન પક્ષ, એડીટિંગ પક્ષ, માત્કેટિંગ પક્ષ આદિ કેત઼ વત્ત઼ાત઼ હુઅએ। ૭પ્પકેઁ ગગાળેતદત઼ા૦વ઼િદિહ઼યોમ પત઼ ૧ દસિમ્વત઼ ૨૦૧૬ ધત઼િ પઠાએ૭ ળાએ। એ અંકમે સમાત્ત઼ય ત઼યતા ઓ સ્થાયી સ્તંભ સભ સેહો ત઼હવે કત઼ત। પ્ત઼યાસ ત઼હત ળે વેસીસઁ વેસી ગીત-ગળ૭-સંગીત આકિ પૂત઼ા એ૭વમક સમીક્ષા આવએ।

ઇ-પત્ત઼

આદત઼ણીય ગળેદ્ત઼ ળી

નમસ્કાત઼

વ઼િદિહ કે ૨૧૦ મ અંક મે ડાક્ટત઼ શશધિત઼ કુમાત઼ કે વા૭ કવિતા યતિા આ ૨૧૧ મ અંક મે ૨.૧.૬□ કે૭ાશ કુમાત઼ મશ્તિ઼- મૈથિ૭ી ૭કગીતમે કૌઆ સમ્વાહક ખાસ ત઼ુયગિત ૭ાગ૭ અછિ। - પ્ત઼ત્તવ હા

ળેતા કી સભ ગોટા ળતૈ છી ળે વ઼િદિહ ૨૦૧૫ મે તીત ટા વિશિષાંક તીન સાહિત્યિકાત઼પત઼ પ્ત઼કાશતિ કે૭ક ળકત઼ માપદંડ છ૭ સા૭મે દૂટા વિશિષાંક ળીવતિ સાહિત્યિકાત઼ક ઉપત઼ ત઼હત ળઽમે એકટા ૬૦-૭૦ વા ઓઽસઁ વેસી સા૭ક સાહિત્યિકાત઼ ત઼હતા તઁ



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार सभ भारत आ नेपाल दुनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर आ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि आगूक विशेषांक कनिकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु आगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ जनवरी आ फरवरी २०१७ मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। सभ रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-नीचाँ भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना ३१ दिसम्बर २०१६ धरि ggajendra@videha.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (पद्मानदीक माझी, बांग्ला- मानिक वंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१२

२०१२ श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल कें "तरेगन" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकें "अम्बरा" (कविता संग्रह) लेल।

२०१२ युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "अर्चिस" (कविता संग्रह)

२०१३ अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार – श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "देवीजी" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकें "बेटीक अपमान आ छीनरदेवी" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकें "निश्तुकी" (कविता संग्रह) लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकें "मोहनदास" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (सखारी पेटारी- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)
२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)
२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,
सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- १७ पिता श्री लक्ष्मण झा
श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- १५ पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय
सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- १६, पिता- श्री वैद्यनाथ साह
श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- २३, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य
सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- १६, पिता- श्री हरेराम यादव
श्री अमीत रंजन, उम्र- १८, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला
श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना
श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- २३, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)
श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- ३०, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)
श्री बुलन राउत, उम्र- ४५, पिता- स्व. चिन्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)
श्री बहादुर राम, उम्र- ५५, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला
श्री जगदीश मल्लिक, ५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला
श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- ४५, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला
श्री झमेली मुखिया, पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति
श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री बुद्धी दास, गाम बेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान
- २०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-
(१) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)



(२) मो समसाद आलम सुपुत्र मो ईसा आलम, पता- ग्राम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(३) सुश्री अपराजिता कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- ग्राम- लक्ष्मीनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य-अभिनय-

(१) **श्री ब्रह्मदेव पासवान उर्फ रामजाजी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- ग्राम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(२) टाँसिफ आलम सुपुत्र मो मुस्ताक आलम, पता- ग्राम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मंगनी खवास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, ग्राम- सुलबरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मंगनी खवास सम्मानः मिथिला लोक संस्कृति संरक्षणः

श्री राम लखन साहु पे स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, ग्राम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(१) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- ग्राम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(२) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- ग्राम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(१) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- ग्राम- सनपतहा, पोस्ट- बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(२) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- ग्राम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हारमोनियाँ हारमोनियम

(१) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** ग्राम- बेलहा, वार्ड- नं ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(२) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर ६०, पता- ग्राम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक झैला ढोलकिया



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

(१) **શ્રી શ્રનુપ સદાય** સુપુત્ર સ્વ. , પના- ગામ- નુ઼ઉસિયાહિ, પોસ્ટ- મનોહ઼ર પટ્ટી, થાના- મરૌના, ળિઉ- સુપૌઉ (વહિાર)

(२) **શ્રી ક્રુઉર નામ** સુપુત્ર સ્વ. પ્યટ્ટર નામ, ઉમેર- ૫૦, ગામ- ઉક્ષ્મનિયાઁ, પોસ્ટ- છળના, ઝાયા- ઞરહિયા, થાના- ઊકહી, ળિઉ- મયુવની (વહિાર)

નસનયૌકી વાદક-

(१) વાસુદેવ નામ સુપુત્ર સ્વ. શ્રનુપ નામ, ગામ+પોસ્ટ- નિર્મઊ, વાર્ડ ન ૦૭ , ળિઉ- સુપૌઉ (વહિાર)

શાઉિપી-વસ્તુકઉ-

(१) શ્રી વૌકૂ મઉઉકિ સુપુત્ર દરવાની મઉઉકિ, ઉમેર- ૭૦, ગામ- ઉક્ષ્મનિયાઁ, પોસ્ટ- છળના, ઝાયા- ઞરહિયા, ળિઉ- મયુવની (વહિાર)

(२) શ્રી નામ વિઉાસ યનકિાર સુપુત્ર સ્વ. ઠેઢાર યનકિાર, ઉમેર- ૪૦, પના- ગામ+પોસ્ટ- યનૌનાગંળ, ઝાયા- નમુનિયા, ળિઉ- મયુવની (વહિાર)

મૂર્તિકિઉ-મ઼ૂર્તિકિાર કઉ-

(१) **ઘૂરન પંડિત સુપુત્ર-** શ્રી મોહ઼ૂ પંડિત, પના- ગામ+પોસ્ટ– વેરમા, ઝાયા- નમુનિયા, થાના- હ઼ૂંહ઼ાપુર (શ્રાર્એસ શાવિનિ), ળિઉ- મયુવની (વહિાર)

(२) **શ્રી પ્રભુ પંડિત સુપુત્ર સ્વ.** , પના- ગામ+પોસ્ટ- ઞરહિયા, થાના- ઊકહી, ળિઉ- મયુવની (વહિાર)

કાષ્ઠ-કઉ-

(१) **શ્રી ળગદેવ સાહુ** સુપુત્ર શનીયર સાહુ, ઉમેર- ૩૬, ગામ- નિર્મઊ-પુરર્વાસ, ળિઉ- સુપૌઉ (વહિાર)

(२) **શ્રી યોગેન્દ્ર ઠાકુર સુપુત્ર સ્વ. વુદ્ધૂ ઠાકુર ઉમેર- ૪૫,** પના- ગામ+પોસ્ટ- વેરમા, ઝાયા- નમુનિયા, થાના- હ઼ૂંહ઼ાપુર (શ્રાર્એસ શાવિનિ), ળિઉ- મયુવની પિન- ८४७४१० (વહિાર)

કસિાની- શ્રાત્મનિર્ભર સંસ્કૃતિ-

(१) શ્રી નામ શ્રવતાર નાઉત સુપુત્ર સ્વ. સુવય નાઉત, ઉમેર- ૬૬, પના- ગામ+પોસ્ટ- વેરમા, ઝાયા- નમુનિયા, થાના- હ઼ૂંહ઼ાપુર (શ્રાર્એસ શાવિનિ), ળિઉ- મયુવની પિન- ८४७४१० (વહિાર)

(२) શ્રી નૌશન યાદવ સુપુત્ર સ્વ. કપિલેશ્વર યાદવ, ઉમેર- ૩૫, ગામ+પોસ્ટ– વનગામા, ઝાયા- ઞરહિયા, થાના- ઊકહી, ળિઉ- મયુવની (વહિાર)

શ્રહ઼ામહ઼ાર-

(१) **મો ળીવછ** સુપુત્ર મો વઉિટ મન્નૂમ, ઉમેર- ૬૫, પના- ગામ- વસહા, પોસ્ટ- વડ઼હાના, ઝાયા- શ્રન્યનાઠાઢ઼ી, ળિઉ- મયુવની, પિન- ८४७४०१

ળોગિયા-

શ્રી વચ્ચન મામ્ડઉ સુપુત્ર સ્વ. સીતાનામ મામ્ડઉ, ઉમેર- ૬૦, પના- ગામ+પોસ્ટ- વેરમા, ઝાયા- નમુનિયા, થાના- હ઼ૂંહ઼ાપુર (શ્રાર્એસ શાવિનિ), ળિઉ- મયુવની પિન- ८४७४१० (વહિાર)

શ્રી નામદેવ ઠાકુર સુપુત્ર સ્વ. ળાગેશ્વર ઠાકુર, ઉમેર- ૫૦, પના- ગામ+પોસ્ટ- વેરમા, ઝાયા- નમુનિયા, થાના- હ઼ૂંહ઼ાપુર (શ્રાર્એસ શાવિનિ), ળિઉ- મયુવની પિન- ८४७४१० (વહિાર)

પનાતી (પ્રભાતી) ગૌનહિાર શ્રા પ્યળની પ્યૌળની વાદક-

(१) શ્રી સુકદેવ સાસ્ત્રી

સુપુત્ર શ્રી ,

પના- ગામ રહ઼રની, પોસ્ટ- વેઉહી, ઝાયા- નિર્મઊ, થાના- મરૌના, ળિઉ- સુપૌઉ (વહિાર)

પનાતી (પ્રભાતી) ગૌનહિાર - (શ્રગહનસઁ માઘ-શ્રાગુન નક ગાશ્રોઉ ળાઇત)



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

(१) **सुकदेव शास्त्री** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ शास्त्री, उमेर- ७५, पता- गाम इटहनी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
(२) **ललटू दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- [illegible] (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
झरनी-
(१) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
(२) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र, उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)
नाल वादक-
(१) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(२) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुसुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघरडीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)
गीतधार्मिक गीत-
(१) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
(२) **सुश्री स्वाति कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)
खुरदक वादक-
(१) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(२) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
कॉरनेट-
(१) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(२) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
वेणू वादक-
(१) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं ०४, जिला- सुपौल (बिहार)
(२) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
भगैत गवैया-
(१) **श्री जीवछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहनी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
(२) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लप्पन मण्डल, पता- गाम- बढ़ियाघाट-रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)
खिस्सकर- (खिस्सा कहैवला)-



(१) श्री छुनछुन यादव उर्फ बालकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, ग्राम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(२) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(२) सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- ग्राम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मैथिली चित्रकला-

(१) सुश्री मैथिली कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'हीरूदास' पता- ग्राम- रसुआर, पोस्ट-- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(२) श्रीमती शोभा देवी पत्नी श्री दिलीप झा, उम्र- ३५, पता- ग्राम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. सविनि), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजनी खौजनी वादक-

(२) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- ग्राम- रसुआर, पोस्ट-- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

ढोल-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उम्र- ५५, पता- ग्राम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. सविनि), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सत्यलाल यादव, उम्र- ५०, ग्राम- हाँसपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(१) श्री पंची ठाकुर, ग्राम- पपिराही।

झालि- (झलिवाह)

(१) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री रुद्र कुमार कर्ण पता- ग्राम- नेवाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(२) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उम्र- ६०, पता- ग्राम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. सविनि), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बाँसरी (बाँसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री होटन मण्डल, उम्र- ३०, बाँसरी/बाँसली/बासुरी बजबै छथि।

पता- ग्राम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कलटीर झा, उम्र- ५०, पता- ग्राम+पोस्ट- कछुवी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री नरेन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- ग्राम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पचिकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उम्र- ५०, पता- ग्राम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. सविनि), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोटका झालि)



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

श्री रामपति मल्लिक सुपुत्र स्व. अर्जुन मल्लिक, पता- ग्राम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(१) श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्दर दास, उमेर- ७०, ग्राम- लक्ष्मीनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(२) श्री खप्पर सदाय सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- ग्राम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शविनि), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

तानपुरा सह बाल संगीत

(१) श्री रामविलास यादव सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, ग्राम- समिया, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघरडीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

तरसा तासा-

श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिट्टू राम, उमेर- ५०, पता- ग्राम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शविनि), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, ग्राम- महुआ, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

रमहारि कठहारि करताल वादक-

श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- ग्राम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शविनि), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री धनक मल्लिक सुपुत्र स्व. उचित मल्लिक, उमेर- ६०, रमहारि कठहारि करताल वादक, १९७५ ईसँ रमहारि बजबै छथि। पता- ग्राम- बढियाघाट रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

गुमगुमियाँ गुदुम बाजा

श्री परमेश्वर मल्लिक सुपुत्र स्व. बिहारी मल्लिक उमेर- ४१, १९८० ईसँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।

श्री जुगाय शास्त्री सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र शास्त्री, उमेर- ७५, पता- ग्राम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शविनि), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंका ढोल वादक

श्री बद्री राम, उमेर- ५५, पता- ग्राम रटहनी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिट्टू राम, उमेर- ५५, पता- ग्राम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शविनि), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंफा (होलीमे बजाओल जाइत)

श्री जगरनाथ चौधरी उर्फ चयिानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- ग्राम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शविनि), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- ग्राम+पोस्ट- यनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

नटुआ डगिनी-

श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- ग्राम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शविनि), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक कवि विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

विदेह_१५_०६_२००८.pdf विदेह_१५_०६_२००८_तिरहुता.pdf १२.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

विदेह_०१_११_२००८.pdf विदेह_०१_११_२००८_तिरहुता.pdf २१.pdf

३) बिहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

विदेह_०१_१०_२०१० विदेह_०१_१०_२०१०_तिरहुता ६७

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

विदेह_१५_११_२०१० विदेह_१५_११_२०१०_तिरहुता ७०

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

विदेह_१५_१२_२०१० विदेह_१५_१२_२०१०_तिरहुता ७२

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

विदेह_०१_०३_२०११ विदेह_०१_०३_२०११_तिरहुता ७७

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

विदेह_०१_०८_२०१२ विदेह_०१_०८_२०१२_तिरहुता १११

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

विदेह_१५_०३_२०१३ विदेह_१५_०३_२०१३_तिरहुता १२६

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

विदेह_१५_११_२०१३ विदेह_१५_११_२०१३_तिरहुता १४२

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६८ म अंक १ जनवरी २०१५

विदेह_०१_०१_२०१५

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८८ म अंक १ नवम्बर २०१५

विदेह_०१_११_२०१५

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १८९ म अंक १ दिसम्बर २०१५

विदेह_०१_१२_२०१५

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

विदेह_१५_०४_२०१६

विदेह_०१_०७_२०१६

लेखकसँ आमंत्रित रचनापर आमंत्रित रचनाकारक टिप्पणीक शृंखला

१ कामिनीक पांच टा कविता आ ओहपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

विहनिकथा २०९म सँ शुरू विदेहक दू सए नौम अंक

विदेह_०१_०९_२०१६



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

વ઼દિ઼હ ૬-પત્૧િકાિ઼ક વીછ૭ ૧યણાક સંગ- મૈથિઊિક સ૧્વ઼શ્૧ેષ્ઠ ૧યણાક એક્ટા સમાણાણ્ત૧ સંકઙ૧

વ઼દિ઼હ:સદેહ:૨ (મૈથિઊિ પ્૧વ઼ન્ય-ન઼વિન્ય-સમાઊેયના ૨૦૦૮-૧૦)

વ઼દિ઼હ:સદેહ:૩ (મૈથિઊિ પદ્ય ૨૦૦૮-૧૦)

વ઼દિ઼હ:સદેહ:૪ (મૈથિઊિ કથા ૨૦૦૮-૧૦)

વ઼દિ઼હ મૈથિઊિ વ઼હિના કિથા [વ઼દિ઼હ સદેહ ૫]

વ઼દિ઼હ મૈથિઊિ ઊઘુકથા [વ઼દિ઼હ સદેહ ૬]

વ઼દિ઼હ મૈથિઊિ પદ્ય [વ઼દિ઼હ સદેહ ૭]

વ઼દિ઼હ મૈથિઊિ નાટ્ય ઊ઼ત્સવ [વ઼દિ઼હ સદેહ ૮]

વ઼દિ઼હ મૈથિઊિ શશિ઼ ઊ઼ત્સવ [વ઼દિ઼હ સદેહ ૯]

વ઼દિ઼હ મૈથિઊિ પ્૧વ઼ન્ય-ન઼વિન્ય-સમાઊેયના [વ઼દિ઼હ સદેહ ૧૦]

માતિહઊિ જીૌકસ યાણ વે દીૌણઊોદેદ ૭ોમ:

હ઼ાતપસ્:સાિતિસ્ગીૌગઊેયોમ્ાવ઼દિ઼હ઼ાયોમ્વ઼દિ઼હ઼- પોતહ્ફ

માતિહઊિ જીૌકસ યાણ વે પુ૧યહ઼ાસેદ ૭ોમ:

હ઼ાતપ્:ીૌીમાઙેનિ્

ઢો૧ તહે ૭ન઼િસાત તમિ માતિહઊિ વીૌકસ યાણ વે ૧ોદ ો૧ કનિદ્ઊે - ૧ોદે૧સ્ જુય માતિહઊિ જીૌકસ નિ ય્નિદ્ઊે ૭ો૧માત (યુ૧ોસય વ઼દિ઼હ઼) ૭ોમ ામાઙે૧ કનિદ્ઊે સતો૧સ, તહેસે વીૌકસ ા૧ે દેઊવિ઼૧ેદ ી૧ઊદીૌદિ ીમિઊસસઊય:-

હ઼ાતપ્:ીૌીમાઙેન્યોમ્

શ્રપન મંતવ્ય ગગાળેણદ૧ા૦વ઼દિ઼હ઼ાયોમ પ૧ પઠાઊ।



ગળેન્દ્૧ ઠાકુ૧

ગગાળેણદ૧ા૦વ઼દિ઼હ઼ાયોમ

ઐ ૧યણાપ૧ શ્રપન મંતવ્ય ગગાળેણદ૧ા૦વ઼દિ઼હ઼ાયોમ પ૧ પઠાઊ।

૨.ગદ્ય

૨.૧.૭□ કૈઊાશ કુમા૧ મશ્ર્િ૧- સુગ્ગા શ્રા શ્૧ઁગા૧: મૈથિઊિ ઊોકગીતક પ૧ાદ્ઁશ્ય મે

૨.૨ળગદીશ પ્૧સાદ માણ્ડ઼ઙ- ઊઘુ કથા- મુ઼ડિયાઽ઼ઙ ઘ૧

૨.૩યણ્દના દત્ત- શ્રાઊેપ્ય- વાવા ઊાઙદાસ

૨.૪શંકુ૧- ઊઘુ કથા સંગ્૧હ- ૧ામ વ઼ઊાસ સાહુ

૭ૉ કૈઊાશ કુમા૧ મશ્ર્િ૧



સુગ્ગા આ શ્રૃંગારઃ મૈથિલી લોકગીતક પરિદૃશ્ય મે

ભારતીય લોક આ શાસ્ત્ર દૂનૂ પરંપરા મે સુગ્ગા અપન વિશિષ્ટ સ્થાન આદિ કાલ સ રખને અછિ। સુગ્ગા સિનેહ, પ્રેમ, જ્ઞાન આ શ્રૃંગાર કે પ્રતીક માનલ જાઇત અછિ। અનેક કથા સમસ્ત ભારતવર્ષ મે ભેટત જતએ સુગ્ગા અપન બુદ્ધિમિત્તા સ અલગ કીર્તિમાન સ્થાપિત કેલક। જાયસીક મહાકાવ્ય પદ્માવત મે હીરામન સુગ્ગાક ભૂમિકા કે નહિ બિસરૈત અછિ। જેના હિરામન રાજકુમારી પદ્માવતી અથવા પદ્મિની સંગ અપન સમય બીતબૈત છલ; જેના પદ્મિની અપન પ્રેમક બાત આ વિવાહ નહિ હોબાક ટીસ ઓકરા સંગ બાંટૈત છલી; આ જેના હીરામન સુગ્ગા સિંહલદ્વીપ કે રાજકુમારી પદ્માવતી આ ચિત્તોડગઢક રાજા રતનસેન કેર પ્રેમ મે સૂત્રધારક ભૂમિકા કે નિર્વહન કરૈત અછિ, કે બારે મે સબકે બુદ્ધિ અછિ। બાત મૈથિલી લોકગીત મે સુગ્ગાક સ્થાન પર ક રહલ છી તાહિ પદ્માવત કે પ્રસંગ પર વિસ્તાર સં નહિ જા રહલ છી।

અગર લોક વ્યવહાર કે બાત કરી ત મિથિલા સમાજ મે સુગ્ગા આ આરો ચિરૈ-ચુનમુન એવં જાનવર સબહક અપન ભૂમિકા અછિ। ઓકરા માનવીકરણ કએ ઓકર ભાવ કે દેખલ જાઇત છૈક। લોક અપન બચ્ચા, પ્રિય લોક, જમાય કે સુગ્ગા કહિ સંબોધિત કરૈત છથિ। ઓ બચ્ચા જકર સ્મરણ શક્તિ તીક્ષ્ણ હોઇત છૈક તકરા સુગ્ગા કહિ સંબોધિત કેલ જાઇત છૈક।માય, પિતિયાઇન, નાની, દાઈ ઇત્યાદિ અપન બચ્ચા કે સુગ્ગા કૌર, મેના કૌર કહિ કે બોલબ પસિનૈત છથિ। નાયક અથવા નાયિકા કે નાક અગર બડ઼ સુન્દર છૈક ત ઓકરા સુગ્ગાક ઠોર યા ચોંચ સ ઉપમા દેલ જાઇત છૈક। મધુર બોલી કે સુગ્ગા સનહક બોલી કહલ જાઇત છૈક। સ્ત્રીગણ સબ ક્રૂશેમ મે કુશ સ સુગ્ગા મેના બનબૈત છથિ મિથિલા ચિત્રકલા મે આ કોહબર ઘર મે સ્ત્રી આ પુરુષ સુગ્ગા કે સ્નેહાલિંગન અવસ્થા મે બાઁડ઼ર પર ચિત્રિત કેલ જાઇત છૈક। સ્નેહાલિંગન કે ઠેઠ મૈથિલી મે લટપટાયલ અવસ્થા કહલ જાઇત છૈક। મિથિલા ચિત્રકલા મે બાઁડ઼ર પર બૈસ લટપટાયલ સુગ્ગા આપસ મે એક દોસર કે પકડ઼ને ચોંચ મે ચોંચ સટૈને અંકિત રહૈત છૈક। કોબરઘર મે એહિ ચિત્રાંકન કેર ઉકેરબાક તાત્પર્ય ઇ રહૈત છૈક કિ જેના સુગ્ગા કે પતિ-પત્નીક જોડ઼ી મે પ્રેમ રહૈત છૈક તેહને પ્રેમ, સિનેહ આ આકર્ષણ એહિ વર-કનિયાં મે બનલ રહૈક। દુનુ એક દોસર સ કહિયો અલગ નહિ હો। દુલહિન સ્ત્રી સુગ્ગા આ દુલહા પુરુષ સુગ્ગા બનિ જાઇત છૈક। સુગ્ગા સ્નેહક સંગ-સંગ સૌન્દર્ય આ રંગક પ્રતિબિમ્બ સેહો બનિ જાઇત છૈક। અગર બડ઼ સુન્દર હરિયર રંગ કેર સાડ઼ી અથવા નુઆ છૈક ત ઓ સુગવા રંગ અથવા સુગાપંખી રંગ કહૈત। એહ રંગ કેર માન્યતા તખન સ્થાપિત હેતૈક જખન ઓકર તુલના સુગ્ગાક આઠ સ કેલ જેતૈક। સુગ્ગા સ સિનેહ અનેક જે ઓકરા સોનાક પિંજરા મે રખબાક કલ્પના કેલ જાઇત છૈક।

મૈથિલી લોકપરમ્પરા મે સુગ્ગા બડ઼ મહત્ત્વ રખૈત અછિ। દુટા એહેન દન્તકથા મિથિલા ભૂમિ મે વ્યાપ્ત અછિ જાહિ મે સુગ્ગાક ભૂમિકા કે બેર-બેર સ્મરણ ગર્વ સ કેલ જાઇત અછિ।પહિલ કથા સીતા સં સમ્બંધિત અછિ આ દોસર કથા આદિ ગુરુ શંકરાચાર્ય કે મહાપણ્ડિત મંડન મિશ્રક ગામક યાત્રા સં। એહિ આલેખ કે આગા બઢ઼ાબી ઓહિ સ પહિને ઇ દુનુ દન્તકથા કે બુઝબ જરૂરી।

પ્રારંભ સીતાક પ્રસંગ સં કરૈત છી। મિથિલા મે સુગ્ગા આ સીતા કે લ ક એકટા દન્તકથા પ્રચલિત અછિ। વસંત ઋતુક સમય છલ। શીતલ, મંદ પવન બહૈત છલ। સીતા દાઈ અપન સખી બહિનપા સંગ ફુલવારી મે ભ્રમણ ક રહલ છલી। સીતા કે ઇચ્છા ઝૂલા ઝૂલબાક ભેલનિ। એક સખી સ અપન ઇચ્છા વ્યક્ત કેલનિ। તુરત સખી બહિનપા સબ સીતા દાઈ કે ઝૂલા ઝુલાબએ લાગલથિ। બડ઼ મનમોહક દૃશ્ય બ ગેલૈક। સીતા હસૈત છલ આ સખી સબ હુલસૈત। જેક પ્રશંસા કરી સે કામ।



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हुए लागए प्रेमक डोरी।

हुएथि सीता प्यारी ना॥

सोहनगर-रसगर गीत गबैत सखी संग सीता आनंदक सागर मे गोता लगा रहल छली। गीतक स्वर हुनकर कान मे मधुर झनकार जकाँ छल। अहि बीच सीताक दृष्टि एक सुन्दर सुग्गाक जोड़ी दिस पड़लनि। ई सुग्गाक जोड़ी पति-पत्नीक जोड़ी छल। हरियर रंगक पाँखि, लाल-लाल ठोर। सुग्गाक भाषाक संग-संग मनुष्यक भाषा बाजऽ मे प्रवीण छल दुनू सुग्गा। सुग्गाक पत्नी वैह गीत गाबि रहल छल जे गीत सीतादाइ अपन सखी सहेलिया संग हुए हुएैत गाबि रहल छली। सुग्गा के जोड़ी पर सीता दाइ के हृदि लागि गेलनि। मोन भेलनि जे अहि सुग्गा के राजमहल मे आनि पिंजरा मे राखब आ प्रतिदिन एकर मधुर बोल सुनि उठब त कतेक नीक रहत!

राजमहल मे अबितहि सीता दाइ अपन सेवक के बजेलथि आ आज्ञा दैत कहलथिन: "देखू, फुलवारी मे सुग्गाक एक जोड़ी बसिरा लेने अछि। बड़ड सुंदर जोड़ी छैक। जीवै युगयुग के संग-संग र जोड़ीमनुष्यक आवाज मे मधुर गीत सेहो गबैत अछि। अहाँ एखन फुलवारी जाउ आ ओहि जोड़ी मे स एक सुग्गा हमरा लए पकड़ि क आउ"।

सेवक सीता दाइ केर आज्ञा के पालन करैत झट दनि फुलवारी दिस विदा भेल। थोड़ेक कालक बाद ओहि सुग्गाक जोड़ी मे स एकटा सुग्गा पकड़ि कऽ लऽ अनलक। आब ओहि सुग्गा के एक सोनाक पिंजरा मे बन्द कऽ सीता दाइ लग ऐल। सुग्गा के अपना सामने सोनाक पिंजरा मे देखि सीता दाइ आनन्दविभोर भऽ गेली।
गलती स ओ सुग्गा मादा सुग्गा छल आ गर्भ स रहै। ओकर पति सीता दाइ के सेवक सँ निवेदन केलक जे ई मादा सुग्गा ओकर पत्नी छैक आ गर्भ स छैक ताहि ओकरा पर करुणा देखबैत स्वतंत्र क दैल जाय। पुरुष सुग्गा बाजल : "बरुहमर पत्नी के बदला मे अहाँ हमरा ल चलु पिंजरा मे बन्द कऽ सीता लग"। मुदा सीताक सेवक ओकर अनुनय-विनय के नहि स्वीकार केलक आ मादा सुग्गा के राजमहल लऽ अनलक।

अपन पत्नी के प्रेम मे मातल पुरुष सुग्गा हारि नहि मानलक। पाछा-पाछा ओहो राजमहल मे आबि गेल। ओकरा आशा रहैक जे सीता जुकि स्वयं करुणाशील कन्या छथि, ओ निश्चयति रूप स ओकर पत्नीक अवस्था पर द्रवित भ पिंजरा स मुक्त कऽ देथिन!

बेचारा सुग्गा सीता दाइ लग जाए नोर बहबैत मोन पड़ल। नोर थमक नामे नहि लैक। आर्त भाव स बाजल: "हे करुणामयी राजकुमारी सीता, र सुग्गा जे आहाँक सेवक पकड़ि अनलक अछि रे हमर पत्नी थिक आ गर्भ सऽ अछि। एकर पेट मे हमर सन्तान पलि रहल अछि। हम अहाँ लग ई निवेदन करबाक हेतु आयल छी जे अहाँ एकरा पर करुणा देखबैत पिंजरा स मुक्त क दियौक। अगर अहाँ के सुग्गा राखबाक इच्छा अछि त हमरा राखि लिय!"

कहल नहि किएक सीता दाइ के सुग्गाक अनुनय दिस ध्यान नहि गेलनि। ओ अपना मे मस्त रहली। जखन सब उपाय स सुग्गा थाकि गेल आ राजमहल मे कियोक ओकर वेदना सुनबा लेल तैयार नहि भेलैक त लाचार सुग्गा दर्द आ क्रोध स खिन्न भ गेल। तामसे घोर होइत सुग्गा सीता दाइ के सम्बोधित करैत बाजल: "हे जानकी! हम बड़ड आश लऽ कऽ अहाँ लग



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

आइल रही जे न्याय भेटत। न्याय त दूर अहाँ हमर वेदना सुनबाक लेल तैयार नहि छी। आहाँक जखन अपन विवाह हैत तखने अहाँ अहि वेदना के बुझि सकैत छी।आब हद भ गेल! हम व्यथित मोन वापस जा रहल छी मुदा जैत-जैत अहाँ के श्राप देने जा रहल छी। हम पति-पत्नी आगाँ जन्म धोबि-धोबनि बनि जन्म लेब आ हमरा सभक कारण सऽ आहाँक पति अहाँके गर्भावस्था मे घर स निकालि देत"।

आब सीता के होश जागलनि। मुदा आब किछु नहि भ सकैत छल। सीता सुग्गा के श्राप के स्वीकार्य कऽ लेलनि। दन्तकथा के अनुसार ओहि सुग्गा के श्राप के कारण जखन सीता गर्भ सं छलि त राम सनहक पति एक धोबि-धोबनि के कहला पर हुनका घर स निकालि देलथिनि।

आब दोसर दन्तकथा दिस बढ़ी। दोसर दन्तकथा शंकराचार्य आ महापण्डित मंडन सं जुड़ल अछि। मिथिला मे अनेक पण्डित आ विद्वान सभ शास्त्रार्थ केर सभ कोनस अबैत छलाह। आर अर्थात मिथिला मे परम्परानुसार एक बेर मे अनेक दिन धरि चलए बला शास्त्रार्थ मे जीवन-जगत सं संबंधित विषय एवं उप-विषय पर वाद-विवाद चलैत छल। जे विद्वान शास्त्रार्थ मे जीतत छल हुनका विशेष सम्मान होइत छल। मान्यता ई अछि जे शंकराचार्य मिथिला के परम विद्वान आ कुमारिल भट्ट केर शिष्यमहापण्डित मंडन मिश्रक प्रसिद्धि सं प्रभावित भ स्वयं हुनका सं भेंट करक हेतु आ शास्त्रार्थ करबाक हेतु भ्रमण करैत मंडन केर गाम पहुँचल। गामक इनार पर पनिहारिनि सब पानि भरैत आपस मे संस्कृत मे वार्तालाप क रहल छलि। शंकराचार्य पनिहारिनि सबके पुछलथिनि: "महापण्डित मंडन मिश्रककुन घर छनि?" पनिहारिनि मे स एक महिला आगाँ अबैत बजली: "आगाँ बढ़ल जाउ। जाहि दरबज्जा पर सुग्गो आपस मे शास्त्रार्थ करैत हो, वैह घर महापण्डित मंडन मिश्रकहेतनि"। शंकराचार्य अपन शिष्य मण्डलीक संग आगू बढ़लनि। कदम, पोखरि, बसवट्टी, फुलक कियारी, लहलहाइत हरियर धानक खेत होइत थोड़ेक काल मे महिषी गाँव पहुँचल। महापण्डित मंडन मिश्रक घर ताक मे कुनो दिक्कत नहि भेलनि। एक घर के दरबज्जा पर पिंजड़ा मे सुग्गा आपस मे शास्त्रार्थ क रहल छल। शंकराचार्य के बुझइ नहि रहलनि जे वैह घर महापण्डित मंडन मिश्रक छनि।

आब लेखनी केर आंगन मे प्रवेश करी आ देखी जे सुग्गा अपन कहेन स्थान बनेने अछि। एक नायिका के दर्द देखू बेचारी के पति परदेस गेल छैक। बहुत दिन भ गेलैक परदेस स गाम एला। अषाढ़ मास समाप्त होम पर छैक लेकिन खरही काटि घर लऽ जमा करैत अछि। कथी लेल? जे घर के छारत। मनुष्यक त बात छोड़ दिऔ जाओ चिड़ि-चुनमुन सब एक-एक खर के चुनि अपन खोता अथवा नीड़ के निर्माण क रहल अछि। सब आब मधुमास अर्थात बरसात मे अपन-अपन जोड़ी संग रहत। मधुमासक मणि यामिनीक सुख भोगत। देह आ नेह एक बनतैक। मुदा हाय रे दुर्भाग्य! बेचारीक कंत त एखनो परदेसे मे छैक।लगैत अछि जे नायिका अहि वियोग स शरीर ने त्यागि दि!

अषाढहि मास अषाढी रोप कि निव खरही सब काटए लेल

चिड़ै चुनमुनी सब खोता लगाएल कहि मोरो कंत रहल

ઘર છોડિ કહિ હમ નહિ જઈહેં।

છઠિ માતા કે પ્રસન્ન કરવાક હેતુ મહિલા સબ રંગ-બિરંગક ગીત ગબૈત ઘાટ દિસિ જૈત છથિ। હિનેક ગીત મે પ્રસાદ સામગ્રી કે વર્ણન, વૈદિક વિધાન, માતા કે ગુણગાન, આ સુર્યદેવક પ્રતાપક વર્ણન રહૈત છૈક। એક ગીતક દૂ પાંતિ દેખૂ જે કેના ઓહિ મે સુગા કે વર્ણન અછિ। કાંચ બાંસ કે આધાર બના કેરાક દૂ ઘૌર કે બીચો બીચ સૂતા દેલ ગેલ છૈક। દુનુ કાત ઘૌર મે હરિયાક હરિયા પાકલ-પાકલ પીયર-પીયર કેરા લટકલ છૈક। કેરા કે આકર્ષણ દેખિ હુમ્મડક હુમ્મડ સુગ્ગા ઓહિ પર ઉતરિ રહલ છૈક। પરતીતિ મનુષ્ય જકાં સુગ્ગા કે બુઝૈત છથિ કે હે સુગ્ગા ઈ કેરાક ઘૌર છઠિ મહરાની કે નિમિત્ત છૈક। એહિ પર તો ચોંચ મારિ એકરા અપવિત્ર નહિ કર। જખન પૂજા પૂરા ભ જેતૈક ત તોરા તોહર હિસ્સા ભેંટ જેતૌક।સમ્વાદ એહેન જેના સુગા એક એક શબ્દ કે બુઝૈત હો આ આજ્ઞા કે માનબક હેતુ તત્પર। ઈ ભેલ લોક પરમ્પરા મે મનુષ્ય આ ચિરૈ કે બીચ તારતમ્ય આ સામંજસ્ય।

કાંચહિ બાંસ કે બહંગિયા બહંગી લચકત જાએ

કેરા જૂરલ ઘૌર સ ઓહિ પર સુગા મંડરાય

છઠિ મહરાની કે દોસર ગીત મે કની પરતીતિ તમસા જૈત છથિ કિયેક ત સુગ્ગા કની ઉચરિ-ઉચરિ કે આવશ્યકતા સ અધિક પરેશાન ક દેને છની। અહિ બેર ગીત મે ઓકરા સાવધાન ભ જએબાક લેલ કહૈત છથિ: "દેખ સુગ્ગા! બડ્ડ ભ ગેલ લાખ બુઝેલાક બાદો તો સમરહ કે નામ નહિ લ રહલ છૈ। કહિ દેલ્હુક ને જે ઈ કેરાક ઘૌર છઠિ મહારાની કે નિમિત્ત છૈક! મુદા તો આજિજ ક દેલૈ। આબ કિછુ નહિ કહબૌ। ચૌઆ કે પતિજી આબિ રહલ છથિ બન્દુક હુનકા સંગે છની। ગોલી મારિ દેથુન। ફેર હમરા નહિ કહિહેં જે સાવધાન નહિ કેલીયૌક?" ઈ ભેલ લોકક ચરિ આ જુગ્મુગ કે પ્રાતિ સિનેહ। જેના માય અપના બચ્ચા કે ડરબૈત છથિ તહિના ઓહી સિનેહ આ અનુરાગ સ પરતીતિ સુગ્ગા કે ડરા રહલ છથિ। ગોલી મરબાક બાત હોસ્ત છૈક। મારલ નહિ જૈત છૈક। એહેન અવસ્થા મે જો પ્રકૃતિ આ સંસ્કૃતિ મે સમન્વય નહિ બનત ત કોના બનત?

જખન વર બરિયાતી સંગે કન્યા કે ઘર પર પ્રવેશ કરૈત અછિ ત બરક સુન્દર છવિ દેખિ સાસુ ગદગદ ભ જૈત છથિ। બરક મનમોહક છવિ કે તુલના સુગ્ગા સં કૈલ જૈત અછિ। મહાકવિ વિદ્યાપતિ સેહો અપન પદાવલી મે એક ગીત મે વરક સુન્દરતા સુગ્ગા સ કરૈત છથિ।જમાએ કેર તુલના સોનગાર સુગ્ગા સં કરૈત સાસુ આ બૂઢ પુરાન મહિલા સબ પ્રસન્ન ભ રહલ છથિ। ધિયા કે ભાગ્ય પર ગુમાન ભ રહલ છની। ગીત ગાબિ-ગાબિ સોચૈત છથિ જે ઈ જે ઓતેક નિક સુગ્ગા રૂપી જમાએ છથિ સે કત સ આબિ કે નેહ લગેને છથિ? ઈ સબહક મનમોહના કત બસેરા બનેને છથિ? ઈ સોનગાર સુગ્ગા અપન ગાઁવ સ આબિ સાસુર મે બસેર કેને છથિ આ સાસુરક લોક સભ સં નેહ લગેને છથિ। હુનકર સસુર પિંજરા બના ઓહિ મે એહિ બેર રૂપી સુગ્ગા કે બન્દ રખને છથિ। પિંજરા શબ્દ દુલહિન લેલ કૈલ ગેલ છૈક સુગ્ગા જખન પિંજરા મે રહત ત ઓકરા આહાર ચાહી। સે આહાર દેબાક જિમ્મેદારી સાસુ કે દેલ ગેલ છની। એહેન આહાર દેથુ જાહિ સ સુગ્ગા કે ઉચાટ નહિ લગૈ। સંગહિ સાસુ કે ડરો ડર ભ રહલ છની જે સુગ્ગા કે જખન પાઁખિ હિમટગર આ મજબૂત ભ જેતૈક ત ભાગિ ને જાય? તાહિ સાસુ એહો કહૈત છથિ જે એહેન સુગ્ગા કે પોસને કી લાભ?ઓકરેબ દિનક બાદ ઈ અપન ઘર ચલિ જાયેત। આખિર જમાએ રૂપી સુગ્ગા કતેક દિન સાસુર રૂપી પિંજરા મે સાસુ હાથક ચારા અર્થાત વ્યન્જન ખા રહત? વિદ્યાપતિ કહૈત છથિ જે ઈ ગૌરી રૂપી દુલહિન કે ભાગ્ય છની જે સાક્ષાત્ મહાદેવ રૂપી મનમોહક વર ભેટ ગેલ છની। હે દાસ-માસ હુલસિત ભ ગીત નાદ ગાઊ આ વિધિ-બેબાર કરૂ।



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

कहमाँसँ सुगा आयल, नेह लायल।

कहमा लल बसेरा सुगा मन मोहल।

अप्पन गामसँ सुग्गा आयल, नेह लायल।

अप्पन गाम लल बसेरा, सुग्गा मन मोहल।

अप्पन ससुर पठिरा गाछ आओल, सुग्गा बहाओल।

हे अप्पन सासु देखु आहर सुग्गा मन मोहवा।

एहन सुग्गा नहि पोसब जे पोस ने मानत।

हे सुगवा होयत उड़ँत, अपन गृह जायत।

एहन सुग्गा हम पोसब जे पोस मानत।

हे सुगवा होयत बुधियार, पढ़ि लिखि आओत।

जनहि विद्यापति गाओल, सभ पाओल।

हे गौरी कैं बड्नु अहिवात, सुन्दर वर पाओल।।

विवाह के समय मे जखन बरिआत के संग वर अपन सासुर विवाह करक हेतु प्रस्थान करैत अछि त दरवज्जा परदाई-माई सब बरिआती लल गंग विनिगाक गीत समवेत आ उच्च स्वर मे गबैत छथि। प्रस्थान होइत अछि बरिआतकि साज के, शृंगार के, उत्साह के, तैयारी के, वस्त्र विन्यास के। वरक पितामह एक रोचक व्यवस्था त पितामह के भाई दोसर रोज केर व्यवस्था मे लागल छथि।कियो बाजा-गाजा के व्यवस्था मे त कियोकआन रोजक। एक आदमी हरियर सुग्गा के पिंजरा के सजा रहल छथि कारण विवाह मे सुग्गा नहि जैत से कोना? गीत रहो बजैत अछि जे बरिआती दल के सदस्य के कत-कत ठहराएल जैत। सुग्गा सेहो आना योने ने जैत? पूरा बनि ठनि कि जैतायिवि नूपी सुग्गा वरक ससुर के पोखरिक भीड़ पर याजन गाछ के डारि पर बैसत आ वर नूपी सुग्गा अपन सासु के बनाओल कोहवर घर मे दुलहिन संगे बैसत।सुगा के अप्पन भोजन करक लल देल जैतैक आ रहवाक लल सोनाक पिंजरा। बरिआत सब दरवज्जा पर विश्राम करत। आंगन केर सोहा मे आजन-बाजन बाजल जैत। बरिआती सब के लाल पीयर बोरी पहिरक हेतु देल जइतैक। सुग्गा, सुग्गा संग सोनाक पिंजरा आ अप्पन भोजन जेना अनिवार्य होइक? बरिआतक लोक सब बोरी पावि प्रसन्न भ जेता आ जमाए बेटी देखि खुश भ जेता।

कोने बाबा साजल आजन बाजन



કોને વાવા સાળુ વનિશ્રાન હે।

કોને વાવા સળથુ હનિયિન સુગવા

સુગા ઉપ ળાયવ વનિશ્રાન હે।

વડ઼કા વાવા સાળઉ શ્રાળન વાળન

મહ્ઉિ વાવા સાળુ વનિશ્રાન હે।

છોટકા વાવા સાળથુ હનિયિન સુગા

સુગા ઉપ ળાયવ વનિશ્રાન હે।

કહ્મા વૈસાયવ શ્રાળન-વાળન

કહ્મા વૈસાયવ વનિશ્રાન હે।

કહ્મા વૈસાપ્વ હનિયિન સુગા

સુગા ઉપ ળાયવ વનિશ્રાન હે।

પોપ્પનિ વૈસાયવ શ્રાળન-વાળન

દુશ્રને વૈસાયવ વનિશ્રાન હે।

પળિડ઼ે વૈસાયવ હનિયિન સુગા

સુગા ઉપ ળાયવ વનિશ્રાન હે।

કથી ઉપ ળાયવ વનિશ્રાન હે।

કથી ઉપ વુહ્ાયવ વનિશ્રાન હે।

કથી ઉપ વુહ્ાયવ હનિયિન સુગા

સુગા કથી ઉપ વુહ્ાયવ ળમાર હે।

ટાના ઉપ વુહ્ાયવ શ્રાળન-વાળન

ધોની ઉપ વુહ્ાયવ વનિશ્રાન હે।

શ્રઉ ઉપ વુહ્ાયવ હનિયિન સુગા

વેટી ઉપ વુહ્ાપ્વ ળમાર હે।



एहेन जमहरिया कतहु ने देखल

सुग्गा लए आयल बरिआत हे।

दोसर बरिआत गीत मे एहेन कल्पना कैल गेल अछि जे दुल्हा घुमबाक हेतु तथा खेलबाक हेतु बहुत दूर हरियर क्षेत्र दिसि चलि गेल छथि। रस्ता मे अनेक तरहक गाछ-वृक्ष, पोखरि, झुलबारी बैसल छलि। गेल-गेल एक गाछ पर सोहनगर हरियर कचोर सुग्गा बैसल छल जकरा पकड़ि क ल अबैत छथि। सुग्गा मांड़ आंगन मे बैस गेल अछि आ नुका रहैत अछि जे ओकरा सेहो बरिआती जएबाक छैक। मुदा बरिआती मे ओना थोरे ने गेल सुग्गा। सुग्गा के ओहि लेल अँगरिया आ टोपी चाही। ओ सजि कि सुन्दर बनि कि बरिआत मे जाए चाहैत अछि। सुग्गाक अनेक मानवीकरण केवल लोकगीत मे भ सकैत अछि। आगा- आगा देखैत जाउ सुग्गा के नखरा। सब बरिआतिकि सदस्य दरबज्जा पर स्थान ग्रहण केलक। अतए सुग्गा के एकाएक यादि छी ताहि बातक अनुभूति भेलैक। ताहि बरिआती के कन्या पक्ष के ओतए पहुचल उत्तर सुग्गा एक आमक गाछक डारि पर चढ़ि गेल आ ओतए स सब विधि व्यवहार देखि पुलकित होइत रहल। सुग्गा के डर बड्ड रहनगर। जेहने सुग्गा के डर तेहने वरक डर। सासु आनंदे बताहि प्रेमाधिक्य मे मातलि कखनो सुग्गा के डर नहिरथि त कखनो जमाय के डर आ नैन नक्श। सासुरानी के हेनो रहो डर बीच-बीच मे भ रहल छलि जे कियेक दाई-माई कुनो करामात ने क देथि! की पता नजरि लागि जैक सुग्गा के, जमैइया के, या दुनु के? रहो सोचैत छथि जे सुग्गा त बनक प्राणी अछि ताहि अंतत बन मे वापस चलि जैत मुदा बेटी आ जमाए त कम-स-कम थिर भ क रहत ने!

हमरो दुल्हा के अबो दुल्हा

खेल जेता बड़ी दूर हे।

ओत स जे लएला दुलरुआ हरियर सुगवा

सुगवा बरसल माँहे डर हे।

सज केओ साजल जाइ बरिअतिया

सुग्गा लेल अंगुरी पसारहि हे।

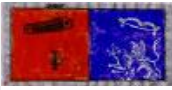
हमहु त लेब बाबा अँगरिया टोपिया

हमहु त जायब बरिआत हे।

सज बरिअतिया अटकल दरबज्जा

सुगवा अटकल आमक डारि हे।

सज केयो निरिखथि जाइत बरिअतिया



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सासु ननदिया सुग्गा ठेन हे।

आरे हे मारे पुर हे पड़ोसनि

सुग्गा पुरनी नगरी बिआउ हे।

वनहि के सुगवा वनहि उड़ि जायत

नहि जायत योअहि जमाई हे।

हरनी जे मिथिलाक मुसलमान महिला सब आ ओकरा संगे कतौ-कतौ हिन्दू सब सेहो दहा संगे यहैत नहैत अछि आ गबैत नहैत अछि। यद्यपि हरनी उदासी के तरह पर आ तेज़ी स यहैत वटगवनी जकां गेल जैत छैक जाहि मे मक्का मदीना आ हसन हुसैन के सहादत केर गुणगान तथा हुनकर सौन्दर्य एवं सौर्य केर गाथा गेल जैत छैक। माहोल उदास मुदा जोश आ ओज सं भरलोक अही वहाने हसन आ हुसैन के कुर्बानी के याद करैत अछि। हसन आ हुसैन मोहम्मद साहेब केर नाति छला। इस्लाम, न्याय आ शांति के रक्षा के लेल अपन जान गमा लेला मुदा सत्य केर रस्ता सं नहि भटकला। हुनकर सहादत केर गाथा कतौ अजादारी त मिथिला मे हरनी के रूप मे गेल जैत अछि। केवल यतित्र अरब के लेश छैक मुदा यतियाम स्थानीय भावक अनुकूल उपमा आ अलंकार वैह जे मिथिलाक लोक उदासी मे अथवा आन कुनो कारुणिक गीत मे प्रयुक्त करैत छथि। गीत गेवा मे सेहो हिन्दू महिला जकां मुसलमान महिलाक प्रावल्य।

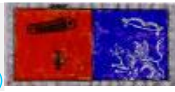
एक हरनी मे छाती पीटित महिला सब गबैत छथि हाय अलला सुन्दर आ सोहनगर लाल सुग्गा के जन्म कोन ठाम भेल आ कोन ठाम ई दुनु भाई अर्थात हसन आ हुसैन जन्म लेलाह? एकर उत्तर मे वर्णन छथि जे परवत पर हरियर गाछ पर ललका सुग्गा जन्म लेलक आ अरब के मक्का शहर मे हसन आ हुसैन दुनु बबुआ के जन्म भेलैक। हे दाई- माई, कथी खुआक क लाल सुग्गा के हम पोसब आ कथी खुआ क दुनु बबुआ के? याना अथवा आहार खुआ क सुग्गा के पोसब आ दूध पिया क हसन आ हुसैन दुनु बबुआ के प्राण बचायब। सोना के पिंजरा मे सुग्गा के पालब सिखायब आ इसकुल मे भेज क दुनु बबुआ के पढ़ायब। अगिला अंश मे उदासी प्रखर भ जैत छैक। गीतक बोल कहैत छैक जे लाल सुग्गा उड़ैत भेला पर कत उड़ि जैत आ बबुआ नमहर भेला पर कत यलि जैत? प्रश्न आ उत्तर के तरह पर हरनी गेल जैत अछि। एहि प्रश्न के उत्तर मे कहल जैत छैक की उड़ैत भेला पर सुग्गा सेहो परवत पर उड़ि जैत आ दुनु बबुआ नमहर भेलाक बाद मक्का यलि जेतैक कारण ओकरा धर्म केर रक्षा करबाक छैक।

एहि हरनी के गंभीरता स देखल आ मनन केल सं ई अनुभूत होइत छैक जे उदासी आ हरनी मे कतेक समानता छैक। जमाए के जखन सुग्गा स तुलना हिन्दू महिला सब अपन गीत मे करैत छथि त कहैत छथि "वनक सुग्गा वने उड़ि जायत", "सुगवा हैत ओड़ियात अपन घर जायत" आदि। अतए पहाड़ स सुग्गा अबैत छैक आ पहाड़ मे वापस यलि जैत छैक।

हाय-हाय कहमा जनम लेल लाल एक सुगवा

कहमा जनम दुनू बबवे हाय।

हाय-हाय परबत जनम लेल लाल एक सुगवा

મક્કા ળ૭મ દુનૂ વયવે હાયા

હાય-હાય કથયિ પ્યશ્રિયવર હમે ૭ાા૭ એક સુગવા

કથયિ પ્યશ્રિયવર દુનૂ વયવે હાયા

હાય-હાય શ્રાહ્ના પ્યશ્રિયવર હમે ૭ાા૭ એક સુગવા

દુયવા પ૭િયવર દુનુ વયવે હાયા

હાય-હાય કથયિ પઢેવર હમ ૭ાા૭ એક સુગવા

કથયિ પઢેવર દુનૂ વયવે હાયા

હાય-હાય પળિડે પઢેવર હમે ૭ાા૭ એક સુગવા

રસકુ૭ પઢેવર દુનૂ વયવે હાયા

હાય-હાય કહઁ ૩ડિ ળોર ૭ાા૭ એક સુગવા

કહઁ યડિ ળોર દુનૂ વયવે હાયા

હાય-હાય પનવન ૩ડિ ળોર ૭ાા૭ એક સુગવા

મક્કા યડિ ળોર દુનૂ વયવે હાયાા

મુસ૭માન મહિ૭િ મે હનયિન નંગા કે સાની શ્રથવા શ્રાની વસન્ત કે કનેળ નહૈન છૈક। હનયિન કે હનની મે સુગવા નંગા કહ૭ ળૈન છૈક। એક શ્રન્ય હનની મે મહિ૭િ સવ શ્રપન ૩ત્સવ શ્રા સંગિનક યન્ય કનૈન છથિ। શ્રને સ્થાન, ૩પમા, શ્ર૭ંકાન, વયિાન સવ પ્યાંટી દેસી ન ળૈન છૈક।હનની કે પ્નકૃતિ પ્નશ્ન શ્રા ૩ત્તન સં છૈક। એહિ ગીન મે ગીન ગાઈન સવ શ્રપને મે યન્ય કનૈન પ્નશ્ન કનૈન છથિ ળે હાળીપુન, પટના શ્રા વેનયિા શહન કે ળા નહ૭ છૈક? શ્રેન ૩ત્તન દૈન કહૈન છથિ, પનિાળી હાળીપુન, ળૈયા પટના શ્રા પનદિવ વેનયિા શહન ળા નહ૭ છથિ। કથી ૭ે૭? પનિાળી સુગ્ગા નંગક સાની ૭ેવાક ૭ે૭, ળૈયા કંગના ૭ેવાક ૭ે૭ શ્રા પનદિવ મથક સનિ્દુન ૭ેવાક ૭ે૭। દેખૂ કોના સ્થાનીય પનંપના મે નંગા ળૈન છથિ મુસ૭માન સ્ત્નીગન મથિ૭િ મે। સનિ્દુન શ્રા સોહાગ કે મહત્ત્વ એકાએક પ્નવ૭ ન ળૈન શ્રછિ। યન્મ શ્રપન સ્થાન પન મુદા સ્થાનીયના કુનો કમ થોને? શ્રગાન સનિ્દુન હિન્દૂ સ્ત્નીક શ્રનંગાનશ્રરહવહીવાક પ્નમાણ ન મુસ૭માનસ્ત્નીગન કે૭ે૭ કયિક નહિ શ્રેન ગીન ૭ખ્યિનહિાન શ્રા ગેનીહાનકિ કે નોકિ સકૈન શ્રછિ?

હાય-હાય કે ળયનૈ હાળીપુન કે ળયનૈ પટના



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

કે ળયહૈ વોયિા શહ્નવે હાયા

હાય-હાય વાવા ળયહૈ હાળીપુન મૈયા ળયહૈ પટના

સ્વામી ળયહૈ વોયિા શહ્નવે હાયા

હાય-હાય કે ઊયહૈ સાની સુગવા કે ઊયહૈ કંગના

કે ઊયહૈ સનિ કે સનિદુન્વે હાયા

હાય-હાય વાવા ઊયહૈ સાની સુગવા મૈયા ઊયહૈ કંગના

સ્વામી ઊયહૈ સનિ કે સનિદુન્વે હાયા

હાય-હાય કે પહ્નહૈ સાની સુગવા કે પહ્નહૈ કંગના

કે પહ્નહૈ સનિ કે સનિદુન્વે હાયા

હાય-હાય શ્રમ્મા પહ્નહૈ સાની સુગવા મઊળો પહ્નહૈ કંગના

હમે પહ્નવે સનિ કે સનિદુન્વે હાયા

હાય-હાય શ્રાટળિયહૈ સાની સુગવા ટૂટી ળયહૈ કંગના

ન્હળિયહૈ સનિ કે સનિદુન્વે હાયા

શ્રપન એક છોટ કવિતા શ્રૂઊડાઊીક કનેન મે કવિ ક્ષ્ણમોહ્ન હ્ા ઊપ્પિત છથિ

ળઊિવીક કાઁટ ળકાઁ

હ્મ શ્રહાઁક યાનક ઊવા સન તન્વા મે ગાડ઼િ ળાયવ

શ્રા કછુિ દનિ યન્ વિસિવસિાયવા

યતુ્થીક શ્રૌઠિ શ્રા વન્સાશ્નક મેહ્દી ળકાઁ

હ્મ શ્રહાઁક વ઼કિઊ સંસ્ગ મે શ્રાયવ

શ્રા શ્રસંપ્પ્ય સુગ્ગા વનિ

શ્રહાઁક મોન મે ઉડ઼ળિાએવા



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

कवि नायकि के अंतःकरण के बुझैत छथि। हृदय मे प्रवेश करबाक हिम्मत रखैत छथि। कहैत छथिन जे झुम्मक झुम्मड सुग्गा जकां नायकि के स्मृति मे बेर-बेर आबि अपन होबाक प्रमाण देत। नायकि टीस मे पतिक अथवा प्रेमीक अनुभूति करैत रहती।

भगवान केर भजन, प्रीति, उदासी आदि मे मनुष्य त मनुष्ये भगवानो के सन्निहितसुग्गा बना क हुनकर सौन्दर्य, वात्सल्य, मनोहर स्वरूप के लोक स्मरण करैत अछि। कृष्ण लल सुग्गा मनमोहन त जन-जन के कंठ मे जेना रचल बसल हो।भगवान कृष्ण केर मथुरा सं द्वारका केर यात्रा लोक के अनेक दुखी क दैत छैक जे सभी वहनिया सब अपन जीवन के उद्देश्यहीन बुझैत छथि। पूरा नगर उदास अछि। कखनो मोन होइत छनि जे यमुना के कारी, तीव्र गति सं बहैत अथाह पानि मे डूबि क आत्महत्या क लैथि त कखनो होइत छनि जे जहर-माहुर खा प्राण के समाप्त क ली। हे निर्मोही कृष्ण कोना अहाँ मथुरा छोड़ि सबके हृदय दुखा सुग्गा जकां पजिरा सं बाहर निकलि द्वारका चलि गेलौं? कनिकबो देरी नहि भेल?

अहि तरहे लोक अपन व्यवहार, संस्कार, संस्कृति सं सुग्गा आ अन्य चिरै-चुनमुन संग प्रेम आ सामंजस्य स्थापित केने अछि। हलांकि तथाकथित आधुनिकता, विज्ञान, विज्ञानक प्रयोग आ मनुष्य केर नित नूतन खोज एहि तरहक परम्परा के शनै शनै कमजोर केने जा रहल अछि। लोक सब अहि तरहक सामंजस्य के बिसरल जा रहल अछि। ई कुनो अर्थ मे नव बात नहि। सुग्गा आ मैनाक कथा ग्रामीण जीवन स समाप्त भेल जा रहल अछि आ कविता मे सिमटल जा रहल अछि। खेत खरिहान, जंगल, पर्वत, पोखरि, गाछ सब खत्म भेल जा रहल अछि। सुग्गे नहि आनो चिरै-चुनमुन धीरे-धीरे अतीतक वस्तु बनल जा रहल अछि।अगर संस्कृति के ओ स्वरूप जे सब के संगे चलबाक सामर्थ्य रखैत अछि समाप्त भ जैत त किछु नहि बचत।सब के एहि विषय पर गंभीरता स सोचबाक चाही आ संतुलन के सिद्धांत के मानबाक चाही।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

जगदीश प्रसाद मण्डल- लघु कथा- मुड़ियाएल घर

जगेश्वर काका दुनू परानी दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैस बेरुका चाह पीबै छल। फागुनक समए, परसु शिवरात्रि छी। जाड़क सरपोष नहाएल समए वसन्ती नीद पेब सोलहन्नी तँ नहि मुदा आधासँ बेसी जाड़क जकड़न तियागि चुकल छल। एक तँ अढ़ाइ-तीन बजेक बेरुका समए, तैपर मन्द-मन्द पुरबाक लहकी सेहो लहलहाइत। ओना चाहक रंग-रूप आ सुआदो आन दिनसँ नीक अछि। नीकक कारण अछि जे तँ बकेन महीसकि दूध तैपर जगेश्वर कक्काक भातीज जे दार्जिलिंगमे रहि चाह कम्पनीमे नोकरी करै छैन, ओ आया काल्हिक चाहक पॉकेट देने रहैन, बएह टटका चाहपत्ती। ओना, बनौनिहारि पुतोहुक गुनमे कोनो बढ़ोत्तरी नइ भेल छेलैन। मुदा काजोक तँ शुभ संजोग होइते अछि। मानसिक सएह सुचनीकेँ भेलैन, जइसँ चाहक सेप्पियो आ रंगो-सुआद नीक बनलैन।

जगिआएल मन जगेश्वर कक्काक, तँए पहिने चारि-पाँच घोंट चाह एक-लम्हारि पीलैन। चारि-पाँच घोंट चाह पील। पछाति जगेश्वर कक्काक मन फुरफुरेलैन। फुरफुराइते बजला-

“चाह तँ निम्मन बनल अछि मुदा एहेन सभ दिन हुअए तखन ने।”



जागेश्वर कक्काक बात सुनि रामजी काकीक मन रमकलैन नहि, असथिर भेलैन। असथिर होइते पुतोहुक ऊपरि मन पहुँच नचलैन। नचति उठलैन- जँ परिवारक जनसभा नीक भोजन, नीक भोजनक अर्थ नीक वस्तुए-टा नहि सुआदो, बनबैथ तँ भोजन केनिहारक मनो आ पेटो परिपूर्ण हेबे करत। जखने मनो आ पेटो परिपूर्ण होइत तखने ने बातो आ विचारोमे परिपूर्णता एबे करत, जइसँ प्यार-पीरितक ह्रास परिवारसँ मेटबे करत। मुँहक चाहकेँ कप्पसँ नियियाँ उतारि रामजी काकी बजली-

"गामक बहुत गोटे काल्हि जनकपुर जेता।"

ओना जागेश्वर काकाकेँ सेहो केते गोटे तीन-चारि दिनसँ कहलकैन अछि जे शिवरात्रि दिनि वाजीश्वरी भगवतीक दर्शन करए चलू। तीन-चारि घन्टाक रस्ता टेम्पूसँ अछि। शिवरात्रिसँ एक दिन पहिने दुपहरक पछाति विदा होएब आ चारि-पाँच बजे तक पहुँच जाएब। ओतै राति विश्रामो करब आ साँझमे शिव उपासक अलहानो करब। मुदा जागेश्वर काका सबहक बात सुनैत गेला, कनिको किछु कहलखिन नहि। नइ कहैक कारण रहैन जे मने-मन उदयपुरक सभकेँ चिन्हैत रहैथ, माने गौआँ सभकेँ। जे केकरो जड़ि-छीपक ठेकान नइ अछि। बाजत किछु आ करत किछु। करनी-धरनी एहने रहने अछि आ दर्शन करत वाजीश्वरी भगवतीक। मुदा विचारसँ उनैर जागेश्वर कक्काक मनमे एलैन जे जखन गामक लोक सभ जाइए रहल अछि आ अपनो केते दिनसँ विचारैत आबि रहल छी जे वाजीश्वरी भगवतीक दर्शन दुनू परानी मिलि करब, मुदा ने कहियो गर लागल आ ने जा भेल। ओना रामजी काकी वाजीश्वरी भगवतीक स्थानक चर्च नइ केने छेलखिन, मुदा जतारसँ बएह मतलब रहैन। तैपर, जबाबमे जागेश्वर कहलखिन-

"जखन गामक भेड़िया-धसान लोक दर्शन करए जेबे करता तँ अपनो दुनू परानी अही बाटमे चलि कऽ दर्शन कऽ लिअ।"

पतिक विचारसँ सहमत होइत रामजी काकी मुड़ी डोलबैत बजली-

"भेल तँ शिवरात्रिसँ एक दिन पहिने जाएब आ शिवरात्रिक परात भने चलिए आएब। मोटा-मोटी दू दिन भेल।"

पत्नीक विचारमे सहमत जनबैत जागेश्वर काका बजला-

"हँ से तँ सएह भेल। काल्हि बारह बजेक पछाति निकलब आ तेसर दिन बारह बजेसँ पहिने घुमि कऽ आबिए जाएब।"

पतिक विचारमे अपन विचार सटबैत रामजी काकी बजली-

"जखन दुनू परानी घरसँ निकैल बाहर जाएब तखन बेटा-पुतोहुकेँ जना देब नीक हएत। ओना अपनो दुनू परानी बहुत दिनसँ, बहुत दिनसँ कि सभ दिन वाजीश्वरी भगवतीक आराधना-उपासना करैत आबि रहल छी तँए भगवतीए धाममे उपासक अलहानो करब तँ जिनगीक परीछे देब हएत किने।"

पत्नीक विचार सुनि जागेश्वर कक्काक मन खुलि गेलैन। खुलिते बजला-

"जखन उदयपुरक लोक जाइक मन बना लेलैन तखन संग-साथमे अपनो दुनू परानीक जाएब उचित हएत। मुदा ओ सभ अपन-अपन सवारीक व्यवस्था करता, अपना दुनू गोटे अलग व्यवस्था करब।"

ओना जागेश्वर काका पत्नीक अभ्यन्तरक बात अपनो बुझै छला। अपना बुझैक कारण व्यवहारिक छेलैन। व्यवहारिक ई जे कहैत तँ सभ (गौआँ) वाजीश्वरी भगवतीक दर्शन करए जेता मुदा घरसँ बाहर धरिक जे बोलि-बाजीक रूप बना लेने

छैथ, से की अपने वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन करता, ओ तँ अप्पन दर्शन भगवतीकेँ देथिन। मुदा जे होउ, एके गाममे सभ रहै छी, मुदा।

अपन बियारकेँ तहियबैत अवोध जकाँ जागेश्वर काका बजला-

“जेना-जे बियार हएत से करब।”

सुनैमे उदयपुर छोटे गाम छल। मुदा मिथिलांचलक घर-घराड़ीकेँ कमला-कोसीक बाढ़ि जहिना उपटाए उपटौलक सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। केतेको तरहिनक गामक मनुष्यक घराड़ी बीच भऽ माछ-कौछुक घराड़ी बनि गेल अछि जेकरो तँ नकारल नहियेँ जा सकैए। मुदा तँए ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे बदनीसोअना गाम अहिना भऽ गेल अछि। पएर जेतए जे भेल से भेल, मुदा उदयपुरक उदयमे सब दिन बाढ़ि ऐछे। ने यमुना तीरक उपद्रव आ ने कोसी-कमला घाटक घटवारसँ भेँट, जइसँ गाममे कहियो कोनो विघटन कहि हएत। तँए दिन-दिन बढ़िते गेल। आने-आन गामसँ उजरल-उपटल लोको आ उदयपुरक महत बुझनिहारो तँ आबि-आबि उदयपुरमे बसल छैथ। तैसंग नव-नव एवो करति छैथ। गाममे बासभूमिक कमियोँ छइहे नहि जे घराड़ीक अभावक दुआरे कियो बसि निह सकै छैथ, आकि अपनामे रगड़ा-झगड़ा करता। तँए कि गाममे नियमस पेत नइ अछि, कोनो चोर-चूर नइ अछि, ओ गामे ने बासभूमि भेल। तँए केतेको परिवार आन गामसँ आबि बसला तैयो उदयपुरमे बासक कमी नहियेँ हएत।

अनुकूल मौसम बनने जहिना बरखा होइए, अनुकूल मौसम बनने जहिना वसन्त अबैए, अनुकूल मौसम बनने जहिना ठनका खसैए तहिना बासभूमिक अनुकूलते ने घरवासकेँ गामवास सेहो बनबैए। जखने घरवास गामवास बनए लगैए तखनेसँ ने बियारवासी विविकवासी बनि बास करए लगैए। से तँ गाममे ऐछे।

जहिना श्रीपंचमीमे बीणा पुस्तक-धारिणी सरस्वतीक आ हाथ सजलक संग लक्ष्मीक पूजा[1] एके दिन एके समए- प्रभात बेलाक शुभ मुहूर्तमे लोक करै छैथ तहिना ने जनिगारियोक प्रभात बेला अछि।

वाणीश्वरी भगवती धामक धरमशालामे दुनू परानी जागेश्वर काका एकटा कोठली सबा रूपैआ दैछना दऽ कऽ लेलैन। तीन मंजिला मकानक नमहर धरमशाला ऐछे, जइमे छोट-पैघ अनेको कोठली भीतर अछि। उदयपुरक तँ मात्र पचहत्तर-बीसटा यात्री छैथ जे आनो-आनो गामक अनेको यात्री रहितो धरमशालाक किछु कोठली खालीए अछि ओना, धरमशालाक भाड़ा होटल आकि भाड़ावला आन मकान जकाँ बेसी नहियेँ अछि। तेकर कारण अछि जे धरमशाला वाणीश्वरी भगवतीक स्थानक छियनि। जे स्थानक चन्दा-चढ़ौआसँ बनल अछि। भाड़ा नामक किछु ने छै मुदा ओकर रख-रखावक जे बेवस्थामे खर्च होइ छै, बस ओहि रूपक भाड़ा बनल अछि।

सूर्यास्त भऽ गेल। स्थानक अप्पन बिजली बेवस्था, माने जेनेरेटरक बेवस्था तँए स्थान जगमग माने वाणीश्वरी भगवती-मन्दिरक संग आनो केते छोट-पैघ मन्दिरो तँ ऐछे। तैसंग धार्मिक-पुजेगरीक रहैक बासक संग नमहर धरमशाल अछि आ बीचक जे आँगन अछि, जइमे रंग-रंगक दोकान-दौरी अछि, तैबीच भरि राति एके रंगक इजोतक बेवस्था तँ चाहबे करी, जे ऐछे। पावर-हाउसक बिजली जकाँ नहि, जे कखनो रहत आ कखनो नइ रहत। होइतो तँ ऐछे जे दिनमे जखन बिजली इजोतक जरूरत नइ रहै छै तखन बिजलियो रहैए आ रातिमे जखन अन्हार होइ छै तखन रहबे ने करैए। तइसँ सैयो कयछे वाणीश्वरी भगवतीक स्थानक तँ ऐछे। दिनमे जखन इजोतक खगता नइ रहै छै तखन जेनेरेटर बन्द रहल आ जखन



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जेते काल खगता भेल, तेते काल चलल। परञ्च ई जिनगीक ओ उपलब्धि पड़ाव छिऐ जेतए लोककेँ अपन जिनगीक काज अपना हाथमे आबि जाइए, जइसँ अपन मनोनुकूल कार्यक्रमक बीच जिनगीक चक्की चलैत रहैए।

सूर्यास्त होइते भगवतीक सहि दुआरिक घड़ी-घण्ट बाजल। घड़ी-घण्ट बजिते सभ उपासी– शिवक उपास केनिहार आकि केनिहारि–क मनमे उपासनाक फलहारक आशा जगलैन। जहिना तुलसी बाबा कहने छैथ जे, जेहने जेकर मनक भाव रहत तेहने रामक दर्शनसँ भेँट हएत। 'रामो रामो' कहनिहारक कमी अछि, केतौ ठक-ठकुर-चोर महि जपैए तँ केतौ रस्ता-पेरामे रामक जप लुटाइए! लूटि लिअ जेकरा जे लूटैक अछि। भगवती स्थानक घण्टीक अवाज सुनि रमानी काकीक मन चपचपाइत थलथल कऽ जलजल गेलैन। जलजलाइते परिदिसि तकैत रमानी काकी बजली-

"गामेसँ फलहारक सभ फल अनने छी। पहिनि दुनू परानी नहा कऽ नव वस्त्र पहिरि लिअ, पछाइत डाली साजि भगवतीक मन्दिरमे फल चढ़ा दुनू गोरे शिवरातिक उपासनाक फलहार कऽ लेब।"

होइते अहिना छै जे भूख आगू किछु खेबाक बौस आ पियासल आगू पानि आबि गेलापर जहिना मनमे सब्रक बोधक अंकुर जगैए तहिना जागेश्वर काकाकेँ सेहो भेलैन। कोठीक खिड़की खोलि जागेश्वर काका गौआँ यात्रीक कोठी दिसि तकल तँ देखलैन जे कनिको अपन घरक फलहारक फल नइ छैन, तँए सभ झोरा लऽ लऽ दोकान दिसि जा रहल छैथ।

अवसरक लाभ उठबैक परियास करैत, समयक उपयोग करैत जागेश्वर काका बजला-

"नहेला पछाइत ई भगवतीक डाली सजब। अपन सभ यात्री फलहारक फल कीनैले दोकान-दौरी टहैल रहल छैथ, स्नानक घाट खाली अछि।"

दुनू परानी जागेश्वर काका नहेला पछाइत नव वस्त्र धारण केलैन। पुरना वस्त्र घाटपर खीच-पखारि कऽ पानि गाड़ि कोठरीमे पसारि लेलैन।

थर्मसमे गाइक दूध, पाकल केरा, दारीम, लताम आ खीरा मोटरीसँ निकालि रमानी काकी काकाकेँ कहलखिन-

"सभ अपने चास-बासक छी।"

एक तँ यात्राक पछाइत स्नानक सुख, तैपर सँ वामीश्वरी भगवतीक सरोवरक घाट टपल जागेश्वर काका रहबे करैथ, मन गुदगुदा गेलैन। गुदगुदाइते बजला-

"भगवतियोकेँ अपन-चास-बासक फल देख मने-मन खुशी हेबे करतैन।"

ओना जागेश्वर काका संगी-साथी जकाँ वामीश्वरी भगवतीकेँ बुझि बजला मुदा से रमानी काकीकेँ नीक नइ लगलैन। ओना, अनसोहाँतो नहियेँ लगलैन, मुदा एक धान एक चाउर होइतो किछु एहनो तँ ऐछे जे सुगन्धित अछि, एकर माने ईहो नइ जे सभ सुगन्धित अछि। मुदा ईहो केना कहल जाएत जे चाउरक जे अपन सुगन्ध अछि ओ फलाँ चाउरमे नइ अछि। ओ तँ उपरागमि उपजल सनरियो धानक चाउर हुअए कि तुलसी फूलक आ चाहे चीनीमे उपजल बेलौर- दसरियो आकि पाखैने-परियैन कहिए ने हुअए मुदा चाउरक जे अपन गुण-धर्म-सुगन्ध छै ओ तँ छइहे। ओना मने-मन जहिना जागेश्वर काका चाउर-गुड़ चिबबै छला तहिना रमानियोँ काकी चिबबिते छेली, मुदा बजली नहि, अपन फलहारक ओरियानमे अपनाकेँ लगौने सभ फलकेँ ओरिया-ओरिया सैत-सैत डाली सजबैत रहली।

डाली सजिते जागेश्वर काका टोन मारलैन-

“जे सभ खूब कामेश्वरी माइकेँ चढ़बैत से तँ मंत्र जकाँ कहि दैबैत छथि?”

ओना जागेश्वर काकाक मनमे होइत रहैत जे मानसिक पत्नीकेँ ई्हो बात नीक नइ लगतैन, मुदा से बुझितो भेल, रमामी काकीकेँ नीक लगलैन। दुनू पीठापर हाथ रखैत बजली-

“ई भेल उतरीक खूब जेकरा डाँड़मे, अपन खूब जकाँ तागतो ने छै जे अपने भने गढ़ो हएत मुदा खूब तँ एहेन ऐछे जे गाछक सैयो खूबसँ लम्हरो आ सुथरगरो ऐछे।”

बचियेमे टोन दैत जागेश्वर काका बजला-

“मुदा पीना मीठ कहाँ होइए?”

रमामी काकीकेँ सुतरैला बजली-

“मीठ केकरा कहै छै से अपैन नइ कहबा जाबे आम पातरो लेहना-सोना तइसँ पहिने अगुआ कऽ भगवतीक दर्शन करब बेसी नीक हएत।”

हत्थो भनि गौरिया केराकेँ दहिना हाथसँ उठा रमामी काकी लगिहारि-लगिहारि देखए लगली जे चारू घारक कलकतिया-आम जकाँ डाम-डीम पोरैया टांगिल अछि। बचियेमे जागेश्वर काका टोनियैत बजला-

“केरा सड़ल जकाँ बुझि पड़ैए!”

हपटैत रमामी काकी बजली-

“सड़ल नइ अछि, पकसाएल अछि। असल तँ चएह भेल जे पकसाद बनि पकसाइबला सेहो छी। तोहूमे आम-लताम गाछ जकाँ कनिको हड्डी-पसलीबला गाछक खूब छी। लल-लल, थल-थल, पल-पल गाछक पेटसँ निकलल खूब छी।”

ओना रमामी काकीक बात सुनि जागेश्वर काका भकचका गेला। भक-चकीमे पड़ल मनकेँ जाबे सोझरबैथ तइ बचियेमे दालीमकेँ देखैत रमामी काकी बजली-

“केते सुन्दर चरीक अकारक गोल खूब हाड़-हाड़ीमे लुकाएल रहैए।”

रमामी काकीक मुहसँ निकैलते जागेश्वर काका बजला-

“कोनो कहि हाड़ीक-हाड़मे खूबटा लुकाएल रहैए, खूबक तरोमे खूबहार लुकौने रहैए। तेहेन भारी चोर अछि जे पीना आकिलाम जकाँ गुद्दा-बीआ आकि रस-पोरैया एकबट्ट केने रहैए, सभटा जकाँ कोठी बना-बना अपनाकेँ सजने रहैए।”

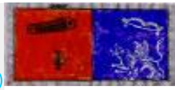
ओना रमामी काकीक मनमे उपकैत रहैत जे कहथिन- मुँहक दाँत जहिना रखै छी आ चोरो छी, तहिना ने अनारो अछि, मुदा बकवासमे समैकेँ हाथसँ छोड़ब नीक नहि, तँए रमामी काकी चुपे रहि थरमस निकालि दूधक रंग देखए लगली। बकेन गारक दूध।

डाली सजि रमामी काकी जागेश्वर काकाकेँ कहलखिन-

“चलू, भगवती-माइक दर्शन कराए दी। खूबहारीक बेर उनैह जाएत।”

रमामी काकीक बात सुनि जागेश्वर काका बजला-

“हम तँ लहेरा पछाइतोसँ दर्शन करैले तैयार छी मुदा बीचमे अहीं ने लटघाँइर लगौने छी।”



પતિક વાત નમામી કાકી સોહોઅના નઝ સુનિ પૈઠી। ઑખ્પિ ઉઠા તકઠી તેં સોહે પતિક મુઁહ પટપટાઇત દેખ્ખઠી, ળેના મને-મન કયિો મંત્ર-ળપ કરૈ છૈથ, તહિના વામીશ્વરી ભગવતી ળેના આગૂ આવિ ઠાઢ ભઽ અપન નૂપ દર્શન કરવએ ઠાગ઼ ોહોનિ તહિના નમામી કાકી અનસૂન ભઽ ગેઠી। અનસૂન હોઇતે મન નાચએ ઠાગૈન। નચાતિ ઑખ્પિક સોહ્મે ભગવતીક તીન નૂપ ચમકએ ઠાગૈન। મનુખ્મે દેવ ળોગા વએ઼ ને ભેઠ ળે વચિાનકેં વિવેકક કસૌટીક મુખ્પાડી વાન્હિ વાઇન વના જ઼્મકિ નામજ઼્મમિ ળીવન ચાત્ના કરૈત ચઠએ।

વામીશ્વરી ભગવતીક દર્શન આ શ્ઠહાર કેઠા પછાઇત દુનૂ પનાની ળાગેશ્વર કાકા ચનમશાઠાક આેર કોઠનીમે આવિ વૈસઠા, ળે સવ઼ા નૂપૈઆ દૈછના દઽ દૂ દનિ નહૈઠ ભેને છઠા। ભનઠ મન દુનૂ પનાનીક નહ્વે કરૈન। નૌતુકા ખ્વેવોક ખ્યાતા નહિઁ વુહિ પઙૈન। ળાગેશ્વર કાકા પત્નીકેં કહઠખ્પનિ-

"એક વેર ગૌઆે-ઘનૂઆેકેં દેખ્ય અવએ ચઠૂ।"

એક તેં આેહુના નમામી કાકી પતિ ભિક્ત, તૈપર વામીશ્વરી ભગવતીક સ્થાન, વતુિ 'હઁ' 'હૂઁ' વળને ઉઠિ કઽ ઠાઢ ભઽ ગેઠી। દુનૂ પનાની ળખ્પન કોઠનીસઁ નકિઠ આનો-આનો ચાત્ની આ અપન ગૌઆઁ-ચાત્નીકેં દેખ્પૈન તેં મને-મન હઁસી ઠાગએ ઠાગૈન। મુદા ને કયિો હઁસવે કેઠા આ ને કછુિ વળવે કેઠૈન। ચુપચાપ દેખ્ય-સુનિ કઽ અપન કોઠની આપસ આવિ ગેઠા।

ળહિના અનુકૂઠ મૌસમ પૌને પ્રક઼ૃતિમે સેહો અનુકૂઠતા આવિ ળાઇ છૈ, તહિના દુનૂ પનાની ળાગેશ્વર કાકાક વીચ સેહો ઐઠૈન।

પત્ની દસિ દેખ્પૈત ળાગેશ્વર કાકા વળઠા-

"અનેને દુનિયાઁક નીક-અધઠા દેખ્પૈ પાછૂ અપન ળતિગી આ કર્તવ્ય છોઙિ મુઁહ તકૈત નહી, હમના વુહને સે નીક નહિ।"

ળહિના કેકરો-કેકરો ઠોભપર વરી પકૈએ, માને કોનો વાતક વચિાર ઠાગૈ કઽ દેવ, તહિના નમામી કાકીકેં સેહો ભેઠૈન। વળઠી-

"એકરા કે કાટત।"

પત્નીક સમર્થનમે ળાગેશ્વર કક્કાક મન હનયિા ગેઠૈન। હનયિા ઈ ગેઠૈન ળે વચિાનો નાની-પુરુખ્પક ભેદ નચાિ દુનૂકેં દૂ દશિામે મોઙિ દૈઠૈન। તૈઠામ ળઁ પતિ-પત્ની આેર ભેદકેં સહોઠ વનવૈત ળતિગીક સંગી વનિ ળીવન-ચાત્ના કરૈ છૈથ તેં આે નસિચાતિ ને નીક ભેઠ।

ળાગેશ્વર કાકા વળઠા-

"વેકતી નૂપમે નર આ નાની ભેઠ, દુનૂક સમ્વન્ધે ને ઘર-પરવિારક નર્માિણ કરત। ળે સભ નાનીક ળતિગીક દાયત્વિ વનિતે અછિ।"

વચિ઼ચમે નમામી કાકી વળઠી-

"પુરુખ્પ-નાનીક સમ્વન્ધ આેર પરવિાર-ઠે અનવિાર્ય ભેઠ ળે અતીત-સઁ-ભવસિ ચનકિ પરવિાર ભેઠ, મુદા પરવિાર તેં અસગાનોક હોઇ છૈ આ નસિચાતિતસઁ ઠેક ળીવન-ચાત્ના કરૈએ।"

પત્નીક વચિાર સુનિ ળાગેશ્વર કાકા વળઠા-

“हँ, से त' भेल मुदा ओ संयुक्त परिवार भेल। संयुक्त परिवार ई जे जेहने रहब तेहने परिवार भेल, कोनो गाम-समाज आकि देश-कोस नइ भेल। मुदा जे भेल से भेल, अपना त' से नहि अछि तँए जे अछि तहीसँ ने विचारबो करब आ करबो करब।”

जागेश्वर कक्काक विचार रमाली काकीकेँ जँचलैन। जँचिते बजली-

“अपन जइ चालिमे छी ओ त' तखने यन्त्रस्थल हएत जखन ओइ मन्त्रकेँ मन्त्रस्थलमे बसा कन्त्रस्थलमे समरपित करब।”

रमाली काकीक विचार नीक जकाँ जागेश्वर काका नइ बुझला। एकर माने ई नहि जे जागेश्वर काकाकेँ बुझैक अवगति नइ छेलैन। विचार व्यक्त करए जाइए पात्रक माध्यमसँ। जँ एक रंग पात्र रहल त' एक-चालिमे चलैए आ जँ पात्रमे भेद रहल, अन्तर रहल त' केतौ-केतौ बाधा-रुकावट होइते अछि सएह जागेश्वर काकाकेँ भेलैन। मुदा करियेँ-काकलक पछाति जेना मनक ओल्हरी सोल्हरी गेलैन तहिना मन बिहुँसलैन। बिहुँसैत जागेश्वर काका बजला-

“जहिना नर-नारीक बीच परिवार बनल अछि तहिना ने एक नर दोसर नरक बाबा भेल।”

ओना रमाली काकी अपन तक नरक माने ‘पुरुष’ बुझै छेली आ नारीक माने ‘महिला’। मुदा जागेश्वर काका नरक अद्वैत रूपमे चर्चा केने छला, द्वैत रूपमे नहि माने ओकर खण्डित रूपमे नहि तँए रमाली काकीकेँ कनी बुझैमे भेद भेबे केलैन।

नारिमल- नारिजल रमाली काकीक हृदय, बजली-

“नीक नहाँति नइ बुझि पेली।”

हँसैत जागेश्वर काका कहलखिन-

“द्वैत-अद्वैतक बीच परिवार चलैए। कखन ‘द्वैत’ ‘अद्वैत’ हएत आ ‘अद्वैत’ ‘द्वैत’, सएह ने?”

पतिक विचार सुनि रमाली काकी रमैत जनिगीमे रमि गेली।

○

शब्द संख्या : २३८३, तिथि : ११ अक्टूबर २०१६

---

[१] कृषि कार्य हेतु हर ठाढ़ करए जाइए

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

चन्दना दत्त- आँखि- बाबा लक्ष्मीदास



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

“जे क्यो ई कथा मनदय सुनतीह तनिकाँ सन्तति, सम्पत्ति एवं सौभाग्यक वृद्धि होयतन्हि अन्तकाल तक धर्मराजक प्रसादेँ निर्भय रहतीह।”

प्रातः स्मरणीय माँ सावित्रीकेँ गोड़ लागि सभ स्त्रीगण बड़क गाछमे जल ढारए लगलीह।

“ईकथा बड्ड नीक लागि अछि सुनबामे, तँए गाछ तर बैसल रहैत छी पंक्ति माइक आसमे। हुनकेँ लग छन्हि ई पोथी, एक गोटा बजलीह। सुनि हमर माइक ठोरपर मुस्की आबि गेल।”

‘हमर परबाबा लिखने छथि’ गर्वोक्ति छलनि हुनकर कथमे।

माइक संग हमहूँ गेल छलहुँ बड़ए गाछ तर। खिस्सा-पिहानी नीक लागि छल सुनबामे। ताहि दिनमे स्त्रीक लेल ‘सम्पत्ति, संतति आ सोहाग’क महत्ता की अछि से बुझल कहाँ छल? जखनजखन लेखपर ध्यान लेल जे ई पोथी ‘स्त्री धर्म शिक्षा’ हमर माइक परबाबाक लिखल छन्हि, जनिकाँ ओ बहुमूल्य थाती जकाँ राखने छलीहकहिएक तँ हमर माएकेँ दहेजमे ई पोथी भेटल छलनि। ओ छलाह महाकवि पण्डित लालदास।

कतेक अल्प शब्दमे बाबा लालदास कतेक पैघ आशीर्वाद स्त्रीगणकेँ देलथिन्ह अछि ई हुनक विद्वान एवं लेखनीक विशेषता छन्हि।

कोनो नारी लेल संततिक की महत्व अछि ई हमरा सभकेँ सहृदयपरबस नारीक ठकुरेलक मुस्की देखि बुझना जाइत अछि जे कोरमे शिशुकेँ लए जखन स्तनपान करबैत छथि तँ अपन तमाम कष्ट बिसरि जाइत छथि जे ओहि बालककेँ जन्म देबा काल उठौने रहैत छथि।

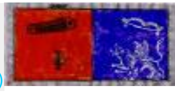
सम्पत्तिक महत्ता तँ आदिकालसँ सभ स्वीकार कयने छथि मुदा स्त्रीगणक लेल अपन घर-गृहस्थीकेँ सुचारू रूपसँ व्यवस्थित रखबाक लेल सम्पत्ति भेनाइ अत्यावश्यक रहैत छन्हि। भनहि ओ धन सम्पत्तिक अर्जन नहि करैत छथि मुदा सम्पत्तिक संरक्षण करबामे कतेक व्योंत लगबय पड़ैत छन्हि एहि बातकेँ संयुक्त परिवारमे रहनिहार बाबा खूब जनैत छलाह।

सौभाग्य तँ स्त्रीकेँ नीक पति भेटलाक उपराँत प्राप्त होइत छन्हि ताहि सौभाग्यक लेल सावित्री पति, नारद मुनि आ अन्त धरि धर्मराजोसँ अपन बात मनबा कऽ रहलीह। एहि कथामे ईहो लिखने छथि जे मिथिलामे माए सभ अपन पुत्रीकेँ बाल्यावस्थासँ लिखाय-पढ़ाय, उत्तम उत्तम उपदेश आ गृह परिचर्या आदि स्त्री धर्मसँ सुशिक्षित कय लेक हेतु आदर्श बनबैत छथि।

कोनो धर्म-संस्कृति वा संस्कारक प्रचार-प्रसार वा संरक्षण समाजमे स्त्रीगणेँ द्वारा होइत आएल अछि। आइ जँ विद्यापति विश्वप्रसिद्ध भेला तँ एहिमे हुनक काव्यकेँ अपन गोसाउनि गीत बनाय, अपन स्वरलहरी देबय बाली स्त्रीगणक महत्व कनेहु कम नहि कहल जा सकैछ।

आइ जखन स्त्री-शिक्षापर विश्व स्तरपर जोर अछि। ‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ’क नारा बुलन्द भऽ रहल अछि ओतय आइसँ सैकड़ो वर्ष पूर्व मिथिलाक बेटी सीता-सावित्री अपन आचरण, धर्म-शास्त्रक प्रमाणसँ विश्वक लेल आदर्श उपस्थित कयने छथि। महाकविक लेखनी स्त्री धर्म शिक्षासँ रामायण तकमे अपूर्व चललनि।

महाकवि लालदासकेँ विश्वास छलनि जे सीता हुनका रामायण लिखबाक लेल प्रेरित कएल। ‘ब्रह्मवैवर्त पुराण’क अनुसारेँ लक्ष्मीक जन्म कुशध्वजक पुत्रीक रूपमे भेलनि। एकापति रावण अहंकार मदसँ भरल छल ओ हुनक सौन्दर्यपर



आकृष्ट भए लक्ष्मीसँ विवाह करबाक लेल उद्दत छल। लक्ष्मी रावणक एहि प्रकारक व्यवहारसँ क्षुब्ध भए सराप देलथिन्ह आ तकरे परिणामस्वरूप सीताक रूपमे मिथिलामे जन्म लऽ जे रावण सपरिवार समूल नष्ट भए सकए।

लालदास कविवरक हेतु सीता वा माँ मैथिली सर्वशक्तिमान छथि।

मैथिली साहित्यमे लालदास सीताकेँ गरिमा प्रदान कएलनि आ मिथिलाक बेटीकेँ सर्वोच्च स्थान देलनि।

"सीता चरित लेल अनुमानि।

रामकथा भए कहब बखानि।।"

महाकवि लाल दास अपन रामायणमे मिथिलाक सभ्यता एवं संस्कृतिक चित्रण विशद रूपेँ कएलनि अछि। मुख्य रूपेँ गिरिजा अर्चना, सीता अर्चना, परदा प्रथा, विवाहोत्सव, अतिथि सत्कार, मधुपर्क, डहकन, उचिती, वधिकरी, द्विरागमन, समदाउन, भार-दउर केर विशेष वर्णन कएलनि अछि।

अपन मातृभूमिक प्रति महाकविकेँ प्रेम हुनक लेखनीकेँ मिथिलाक गौरव गान करबामे द्रष्टव्य अछि-

"जन्मभूमि नैहर सीताक। जतय स्वयं शिवरूप पिताक।।

शक्तिपीठ उत्तम स्थान। उग्रभूमि सभ भाँति महान।।"

अपन मातृभूमिक वर्णन कए महाकवि मिथिला राज्यक शोभा सुन्दरता, मिथिलाक उद्यान, नदी, जलाशय, खेत-पथार संगहि मिथिलावासीक सदाचारिता, तपस्या, धर्मपरायणता प्रभृतिक वर्णन अनेक दृष्टिसँ कएलनि। ई मर्त्यलोकमे मिथिलाक तुलना सुरलोकक विभुतासँ कयने छथि-

"आसमान मिथिलापुरी, रवि सन तेज प्रचण्ड।

बुद्धि पड़ अनुमप देश जनि, महिमा स्वर्गक खण्ड।।"

मिथिलाकेँ प्राकृतिक सौन्दर्य अनुपम अछि। गाछ-बिरीछ, नदी, पोखरि, जीव-जन्तु चिड़ै-चुनमुनीक विविधता कविवरक लेखनीमे मुखरित भए आएल अछि। यथा-

"कति विधि मृग पशु-जन्तु विशाल

से जनि तपसिक प्रजा-समाज,

गरजे मृगपति वैर-विहीय

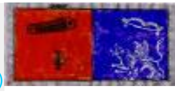
मुनि पहरा तनि पड़ए सदाय,

शुक पिक चातक चक्र चकोर

गुंजय मधुकर मधुर सुराग

वीण वाद्य सम सुनि प्रिय लाग।।"

ऐ प्रकारेँ हम कहि सकैत छी जे बाबा लालदास जे उद्भट विद्वान, शक्ति पूजक, गद्यकार, चित्रकार, लिपिकार, भाषाविद्, कलाकार, समाज सुधारक, राष्ट्रीय चेतनाक सम्पोषक, ओजस्वी वक्ता छलाह।



हुनक विराट व्यक्तित्व आ नवीन मार्ग प्रदर्शक तथा उदार दृष्टिकोणक स्वरूप हम कहि सकैत छी गर्वसँ कहि हम एहन जातिसँ छी जतय सन महर्षि साक्षर छथि आ ई महाकविक देन छथि। कियैक तँ देखल स्वरूप एहन अनमोल पोथी बेटीकेँ देल जाइत छल जे आ बेटी सन दुर्लभ कुलक नाम रौशन करैत छथि।

महाकवि विद्यापति नहि भाषानुरागी छलाह। माँ मैथिलीक संग अपन मातृभाषाक हुनक प्रेम मैथिलीक प्रति विद्यापति एहि पंक्तिसँ देखल जा सकैछ-

“नहि भाषा जननी नहि देश

स्वर्गोसँ जाइथ जिन वेश।”

आइयोजिमे हम ज्यौतिषाक माटि-पानिक प्रति अपन भाव कहबा हमर माँ-पापाक विवाहक पचासम वर्षगाँठ छल- १६ मई २०१२ केँ। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति नहि निवास आयाप्रयपूर्वीमे, छोट-छीन कार्यक्रमक संग हम सब भाए-बहिन आ बहुत रास परिजनक संग हमर प्रपित नानी सेहो उपस्थित छल। पूजा-पाठ भोज भातक पश्चात नातिन नाति-नातीन, पोता-पोती सांस्कृतिक कार्य-क्रमक आयोजन केल। सब खूब आनन्दित छल।

बधिया-पुताक नाच-गानक पश्चात हम मायसँ पुछलहुँ- “अहाँ अपन विवाहक पश्चात पापासँ गप्प-सप्पक कहिं प्रसंग कहू।”

माँ बजलीह- “ई तँ विवाहेक रात्रिसँ हमरा अंग्रेजी सम्बिनय लागल, मुदा हम विद्यापतिक परपोती अपन मैथिली कोना छोड़ितहुँ।”

तहिपर हमर बड़की बहिन ‘पकी दीदी’ चुटकी लेलक-

“अंग्रेजीक विभागाध्यक्ष हमर बाबूजीकेँ माँ मैथिली सम्बिना कऽ मानल तहन ने साहित्य अकादमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित भेलाह।”

सम्पर्क-

गाँटी (मधुबनी)

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** ggajendra@videha.com पर पठाउ।

अंकुर

लघु कथा संग्रह

राम विलास साहु



समापन भाव

अन्हरिया राति

इजोतक नै कोनो उपाय

सोचै छेलौं केना भागत

ई बरियारि

सोचैत मनमे आएल

सहजे एक उपाय सुझाएल

एक दीप जराएल

किछु अन्हार भागल-पड़ाएल

मुदा सोचलौं ई अन्हरिया

बेर-बेर आबि दोहराएत!

मन पड़ल

ज्ञानक दीप

कथाक सङौर-

डोमक आगि

स्वर्गक सुख१३

स्कूलक पियड़ी१७

चोर-सिपाही१९

श्मानदानीक पाठ२०

बौआ बाजल२२

घूसहा घर २४

गंगा नहाएब२७

शिक्षाक महत् ३३

ई छी हमर मजबुरी ३७

बाउ बेर् ३८

अविश्वास् ४६

जातिक भोज् ५०

जात् ५५

हवेली ५८

बुजुर्गक दुख के हरत? ६३

बहिर रस्ता कटअक् ६८

छुगहर् ७२

मोछक बड़ाइ् ७८

केते उचित् ८४

रजजक सवाद् ८५

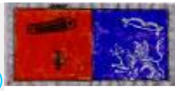
वेगक मन्थी १००

डोमक आगि

जेठैत कक्काक मृत्यु सए वर्षक उमेरमे भेलैन। सौंसे गाममे सोग पसैर गेल। गाममे चर्चा शुरु भऽ गेलै जे आइ गामक माणिक्य अन्त भेने एकटा युगक अन्त भऽ गेल। जेठैत कक्काक चाक जहिना गामक लोक मानैत रहिना आदरो करैत। मुइल पछाइत समुच्या गामक लोक दाह संस्कारमे पँचकठिया दरबे पहुँचल छल। भीड़ बहुत मुदा अप्पन चरि अछियामे आगि ने पड़ल छल। लोक सब थाहा-थाही ठाढ़, कियो बैसल कनस्तुसकी करैत आ कछु लोक निर्गुण भजन गबैत रहए-

"हंसा उड़ि गेलै असमना बनि हि।"

"सब दिन होत ने एक समाना।"



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कियो ई गबैत-

"आया है सो जाएगा राजा रंक फकीरा।"

भिनसरसँ दुपहर भेल जाइत रहै। अप्पन यरि लोक कोन आशामे समए बितबै छल, तेकर कोनो थाह-पता नहि छल। जखन बैसल-बैसल लोकक मन अगुताए लगै, भूखसँ पेटमे बिहाड़ि कुदए लगै, तखन जा कए

बहिनक कारामक पता लगबए लागल।

मलकिपना-बल बात, के हिम्मत करत आ आगू भए पुछैले जाएत। अपनामे गुदुर-फुसुर करैत रहए। कियो आगू जेबे ने करए। तखने रौदी बाबा पहुँचल। पहुँचते बजल-

"अप्पन तक अछियामे आगियो ने पड़ल। कहि एतो अबेर भेल। यथा-पुता सभ भूखे लहालोट होइए!"

सभ कियो रौदी बाबाकेँ कहलकैन-

"अहाँ बुढ़ो-पुरान छी आ गामक अनुभवी सेहो छी, से करी हब-दे पता करियौ जे।"

अगुताएल रौदी बाबा लोकक बीचे-बीच टाटीपर राखल मुरदा लग पहुँचल। ओइ ठाम जेठैत कक्काक परिवारक सभ लोकक संग पहुँचल कुटुम सभ अपनामे कहा-सुनी करै छल।

लगमे जा रौदी बाबा जोरसँ पुछलखिन-

"यौ, अहाँ सभ लाशकेँ जरबैले एलौं हेन आकि गंगा लेबैले?"

जेठैत कक्काक जेठका बेटा- रूपचन्द- कहलकैन-

"दादा, सभ किछु तैयार अछि, मुदा बौकू डोमक इन्तजारमे छी।"

रौदी बाबा पुछलखिन-

"से किए?"

रूपचन्द-

"लोक सभ कहैए जे असमसान घाटपर डोमक हाथक आगि कीनि लाशकेँ जरौलासँ मोक्षक प्राप्ति होइ छै तँए करी बौकू डोमक बाट तकै छी।"

रौदी बाबा बजल-

"अहीले एतो अबेर होइए आकि आरो कोनो बात छह? गाममे डोम, सभ कियो भोरसँ आएल अछि ओकरा कानमे खबैरो ने छै।"



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

નૂપચન્દ-

"નર હૌ કાકા, કાઉહયિ વૌકૂ સમયયિૌના ગેઉ નહए, ખવૈન મ઼ગેઉ છૈ। ઓ ળખ્ખન-ને-ઘખ્ખને પહુઁચૈए-વઉ ઓछि।"

નૂપચન્દક વાત સુનાતિ ઉગમે વૈસઉ શવિઉઉ કાકાકેં અનનગઉ ઉગઉૈના ઘડ઼વાક ઉઠૈન મગળ યનિ પહુઁચ ગેઉૈના ળોનસઁ વાળए ઉગઉ-

"ગામક એોક વડ઼-વુળુનગ ળે આएઉ છૈથ ઓ વુડ઼વિકે છૈથ કૌ! ળખ્ખન એો વુહૈ છहक ળે ડોમક હાથક આગિ કિોનિ ક઼ ઓર આગસિં મુખ્ખાગ્નિ કિનવ તઁ પહિનિ ડોમકેં વળા ઉરાહ। પછારાઘ ઉક સબકેં વળૈવાહ। બનિસનસઁ દુપહન મ઼ ગેઉ, સબ ઉક નૂખ્ખે-પચિાસે ઉહાઉડ઼ મ઼ નહઉ ઓછિ ઓ વૌકૂ ડોમક અપ્પનો કોનો થાહ-પતા નર છह! "

કનૌકાઉ નહિ સ્ઠૈન વળઉ-

"આર-કાઉहकि નવ-નૌતાન સવहक નવ-નવ કાનૂના ળખ્ખન ળે મનમે સુઉૈए સहए કન઼ ઉગૈए! નવ-નવ ળોગોકેં મનિ દેह ટીક્કા! "

શવિઉઉ કક્કાક તમસારા વોઉ સુનાતિ ઉક સબ ઉગ અવ઼ ઉગઉ। સબકેં હોર કખ્ખન हवदे આગિ પિડ઼ૈ ળે ઉક પઁચકડ઼િયા સ્ઠેક નિહાર-સોનારઉ યઉ ળાएਤ। મુદા અપ્પનો યનિ વૌકૂ ડોમ નહિ પહુઁચઉ।

સૌતાનામ દાસ ઉગ આવિ વાળઉ-

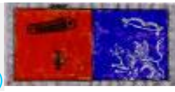
"હૌ નૂપચન્દ માઉકિ, કથી-ઉ એો ઉટ મ઼ નहઉ છૈ હૌ?"

વાળિ સૌતાનામ મને-મન સોચए ઉગઉ। ળખ્ખન વુહૈ છિિ ળે ડોમ સમાળક ઉઉ એો પૈઘ ઉક છૈ, વનિ ડોમક આગસિં ઉકકેં મનઉમે મુક્તિ નિર મેટૈ છૈ, તખ્ખન ડોમકેં એો નચિયા કિિ વુહૈ છિિ। ળખ્ખન કિ ળૌવૈતમે સબ ડોમસઁ છૂવાર છી, આ મુરઉાપન પૈઘ વુહૈ છી। ડોમો તઁ અહી સમાળક ઉક છી, મુદા ગામસઁ हटि ક઼ વેચાના સબ ગામમે વસૈए। સબ કચિો ઓકના અછોપ વૂહિ આર યનિ ઉગ વૈસ ખેનાર તઁ દૂન ળે વાતો ને કનૈए। एक ઉગ્ગ સ્ઠકિસઁ પુછ-પાછ કનૈए। ऐવેનમે કોન અસોકન્ળ હુઅ ઉગૈए।

નગ-વનિગાક વાત સૌતાનામ કક્કાક મનમે નચ઼ ઉગઉૈના મથિઉિક સમાળકિ પદ્યતિ વનાવટપન યચિાન ગેઉૈના ળાનો મન ળેના આનો ચૌતનસ્ઠ વૌઅए ઉગઉૈના વેવસ્થાક ળઉચિાएઉ નૂપ સબ સોહા અવ઼ ઉગઉૈના કછુ વાળિ નિર નहઉ છઉ।

તખ્ખને વૌકૂ ડોમ हहाएઉ-સુહાएઉ આएઉ। વૌકૂ ડોમસઁ આગિ કિોનઉ ળાएત તેકન મોઉ-ળોઉ હુઅ ઉગઉ। પુછઉાપન વૌકૂ વાળઉ-

"ળેડ઼ૈત કાકા ગામેક માઉકિ છઉ તઁ हमनो માઉકિ। हमना કોનો ઉબ-ઉઉચ નર અછિ મુદા દાન-દછિાિમે ળે દેવ સે ખુશી-ખુશી દ઼ દિઅ।"



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

નૂપચન્દ એકટા યાનીક સકિ્કા દ઼ શ્રાગ઼ કીન઼ શ્રાગૂ વઢ઼ઊ। નપ્પને શવિ઼ઊઊ કાકા, ગૌદી વાવા શ્રા સીનાનામ દાસ શ્રપનામે વ઼યિાન ક઼ વળઊ-

"ઈ ઉચિત નઇ ભેઊ઼ નૂપચન્દ। ળેકના પ્યાનિ ભોનસઁ દુપહ઼ન ભ઼ ગેઊ, શ્રસમસાન ઘાટપન ઊશ પડ઼ઊ શ્રછિ, નેકના શ્રહઁ એગો યાનીક સકિ્ક઼! ળેઽમૈન કાકા ગામક માઊકિ છઊ, શ્રો એને શ્રનળ દિને છૈથ ળે નીનો પીઢ઼ીમે નઇ સયના શ્રપનો સમાંગ વૂહિ વૌકૂકેઁ ળે દેવૈ સે દયિ઼ૌ, નપ્પન ને વૌકૂશ્રો શ્રપ્પન વૂહ઼ના"

સએહ ભેઊ। મુપ્યાગ્નિ ભેઊ પછાશ્ના સભ કાળક શ્રન્ના કમૈન સભ કયિ઼ૌ શ્રાગૂએ નકૈન વ઼દિ। ભેઊ। નપિ્ગુન ગૌનહિનકેઁ ળેના વસિવ઼ાસ શ્રાનો વઢ઼ ગેઊૈના। પુનઃ ગાવએ ઊગઊ-

"સભ દનિ હોન ને એક સમાન઼॥"

શ્રો

સ્વ઼ન્ગાક સુપ્પ

કોસી નદીક છીટપન વૌકૂ સદાય઼ પ્યોપડ઼ી વના નહૈ છઊ। શ્રગઊ-વગઊમે શ્રાનો ઊક સભ કાશ-પટેનક પ્યોપડ઼ી વના નહૈ છઊ। કોસીક કટનયિ઼ાઁ ભેને મુસહની ટોઊ ઉળૈન ગેઊ।

માઘ માસક સમએ વ઼સ્ન્નક શ્રભાવ઼સઁ ળાડ઼ક માનઊ વૌકૂ ઽઠુિમૈન ઘૂન નપૈ છઊ। ળપ્પને ઘૂનમે શ્રાગ દિઊક શ્રાકિ વૌકૂક વેટા-વેટી સટ ક઼ વૈસ શ્રાગ પ્યોન-પ્યોન નાપએ ઊગઊ। પત્ની વઊવાવ઼ાઊ પ્યોપડ઼ીસઁ વકની નકિાઊૈન ળોનસઁ વળઊ-

"નાનયિ઼ૌ સદિહાક શ્રભાવ઼મે સભ કોઇ ભુપ્પઊ સુના નહઊૌ, શ્રાવ દનિોમે વાઊ-વચ્યા કી પ્યાએના। ભૂપ્પસઁ નમૈપ કી વાઊ-વચ્યાક સંગે કોસીમે ડુમ મિનવા"

વૌકૂ સદાય઼ વાળઊ-

"ભોને-ભોન એહેન શ્રશુભ વાન નઇ વાળૂ। શીનઊહની ભન કોનો નનહૈઁ પનાન વઁયાઉ। પનાન વઁયન નઁ ઊપ્પો ઉપએ કનવ। કનકિ્કો સમએ શ્રનાયિ હેનૈ નઁ પ્યાઇ-પીવૈક ળોગાન કનવ। એક નઁ કોસી મૈય઼ાક માનઊ છી દોસન ભગવ઼ાનો વેમુપ્પ શ્રછિ"



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

शीतलहरीक कोनो ठेकान नइ अछि मुदा भूख तँ समैपर लागयि कारण बेटा-बेटी रातिमे किछु ने खेलक। भिनसर होइते जोर-जोरसँ खाइले माँगए लागल।

बलबालाल पड़ोसीसँ दू सेर अल्हुआ पैच आनि घूरक आगिमे पका-पका बेटा-बेटीकेँ देलक। अपनो दुनू परानी खेलक। ऊपरसँ पानि पीब-पीब भूख मेटेलक।

कुहेस कमति रौदक दर्शन भेल। बलबालाल पतिकेँ कहलकैन-

"दू दिनसँ सुखल रोटी आ अल्हुआ खा कऽ कोनो तरहेँ दिन कटलौं मुदा आइ भातक कोनो जोगार करू।"

बौकू जाड़क कोनो परवाह नइ करैत धोतीक तर-ऊपरा ओढ़ैत बाजल-

"सब मिलि चलू परसा चौरीमे धानो लोढ़ब आ घोंघी-डोका सेहो बीछि आनब।"

साबकिसँ परसा चौरीक सगिना-बेलौड़ आ सतनाज धान नामी अछि।

चौरी पहुँचते बौकू बेटा-बेटीकेँ कहलक-

"तूँ सभ घोंघी-डोका बीछि-बीछि छिट्टामे राख आ हम दुनू गोटे धान बीछै छी।"

दुनू गोटे मिलि करीब पसेरी भरि धान लोढ़लक। बेटा-बेटी घोंघी-डोका छिट्टामे उठौलक।

जखन घर चलैले तैयार भेल तँ बौकूक पत्नी बाजलि-

"सुतैल एकटा गोनैर अछि किछि नार सेहो लेने चलू। बिछौना मोटसँ देबै।"

नार बीछैकाल बौकू एकटा अढ़ैया भरिक काछुकेँ देखलक। देखते बौकू काछुकेँ उनटौलक।

काछुकेँ उनटा देने भागल नइ होइ छै। उठा कऽ तौनीमे बान्हलक। धान आ नार पत्नीक माथपर देलक आ अपने बौकू घोंघी-काछु लऽ बेटा-बेटीकेँ संग केने विदा भेल।

घर पहुँचते धान रौदमे पसारलक। पड़ोसीसँ उक्खैर-समाठ आनि धान-कुटि कऽ चाउर तैयार केलक। काछुक मासु बना रान्हलक। दोसर बरतनमे भात रान्हलक। सभ कोइ संगे खेनाइ खाइले बैसल।

जाड़क समैमे सगिना-बेलौड़ आ देसहरिया धानक चाउरक लाल-लाल भात तेलगर आ स्वादिष्ट होइते अछि। तैपर सँ काछुक मासु अपने तेलसँ ऐंठल-ऐंठल, भातपर पड़िते भातो तेलसँ तर-बतर भऽ गेल। बौकू बमरोटिया हाथसँ भात-मासु बँटबो करए आ खेबो करए। खेनाइ अधपेटा भेल तँ पानि पीब पियास मिझा नमहर साँस लैत बाजल-

"एहेन खेनाइ भागशालीए लोक खाइए। राजा-महराजाकेँ नसीब नइ होइ छै। ई खेनाइ देखते केहेन-केहेन साधु-बबाजीकेँ सेहो मन ललिया जेतइ।"



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

भोजन केलापर बौकू घूर पजारि देह टनकौलक। बलबाबाली अरामसँ सुतैत देहुन भरि राति बच्चैलक आ बाल-बच्चाक संग ओइपर सुतल। आ ऊपरसँ गोनैर ओढ़ि लेलक। कनीकालक पछाइत सबहक देह गरमा गेल।

बलबाबाली हाँसी करैत पतिकेँ कहली-

“औढ़का मेहनत साथल भेल। एहेन बढ़िया समैमे एहेन खेनाइ आ एहेन ओढ़ना बच्चैना मलिल।”

नीक अवसर देख बौकू बाजल-

“ई छी स्वर्गक सुख। एहेन सुख राजो-रजवारकेँ सुन्दर महल आ सजल पलंगपर नइ भेटैए। अपना देखियौ तर नारायण आ ऊपर गोविन्द छै आ बीचमे बौकूक परिवार अरामसँ सुतल छै। नइ कोनो चोर-भर छै आ बगलमे कासी मैयाक दर्शन-भाति पहरा पड़ै छै।”

ओ

स्कूलक खिचड़ी

एकटा अभिभावक तमसा कऽ स्कूल पहुँचला। हेड मास्टरकेँ उपराग दैत बजला-

“पढ़ाइ-लिखाइ तँ जएह-सएह होइए, खाली खिचड़ीयेमे बेहाल रहै छी। जखन बच्चा-बुच्चा पढ़बे ने करत तखन तँ हाकिम-हुकुमक तँ बाते छोड़ू चपरासियो ने बनत। एसँ नीक तँ प्राइवेट स्कूल ने जइमे दूटा पाइये ने लगै छै, पढ़ाइ तँ नीक होइ छै। आइ तक ऐ स्कूलक बच्चा पढ़ि कऽ कोन नाम कमेलक।”

मास्टर सहाएब शान्त भावसँ अभिभावककेँ समझबैत बजला-

“देखू, तमसाउ ने कोनो हम खाइ छी खिचड़ी। ई तँ सरकारक योजना छी। ऐ योजनासँ लाभो बहुत छै। नीचियासँ ऊपर चरासिभ माल-माल होइ छै।”

अभिभावक बजला-

“से केना?”

मास्टर सहाएब कहलखिन-

“સહીમે પ્રાઇવેટ સ્કૂલક બચ્ચા સભ પઢ઼િ-લિખિ હાકિમ-હુકુમ બનૈ છૈ। આ ઇહો દેખૈત હેવૈ જે ઓ સભ માએ-બાપ, ગામ-સમાજકેં છોડ઼િ એવં માતૃભૂમિકેં બિસરિ જાઇએ, બૂઢ઼ બૌર જાઇએ। સે તેં એ સ્કૂલક બચ્ચામે નૈ હોઇએ।”

ઓ

ચોર-સિપાહી

માઘ માસ અન્હરિયા રાતિ। ઓસ-કુહેસસઁ હાથો-હાથ ને સુઝૈત। એકટા ચોર ચોરિ કઽ ભાગલ જાઇ છલ। તખને એકટા સિપાહી ગશ્તીમે આબિ રહલ છલ। ચોર સિપાહીકેં દેખિતે ભાગલ। ચોર બૂઢ઼ છલ મુદા સિપાહી બઙ઼ છલૈ। ભાગૈત ચોરકેં રપેટ કઽ પકડ઼લક સિપાહી। પકૈડ઼ હાજત લેને જાઇ છલ।

ચોરકેં ઠંઢાસઁ દેહ થરથરાઇ છલ। મને-મન ઇહો સોચૈ છલ જે કેના એ યમરાજક હાથસઁ બચબ। થોડે આગૂ ચલિ કઽ સડ઼કસઁ હટિ એકટા ઘૂર રહૈ। આગિ દેખિતે ચોર બાજલ-

“સર, અહાઁ એતૈ રહૂ આ હમ ઓઇ ઘૂરાસઁ કની બીડ઼ી લેસને અબૈ છી?”

સિપાહી કને સોચિ કઽ બાજલ-

“અરે, તૂઁ હમરા મૂર્ખ બુઝૈ છેં રે! આ જઁ તૂઁ ભાગિ જેમે તેં હમ તોરા પતાલમે ખોજબૌ? ચૂપચાપ એતએ બૈસ હમ અપનેસઁ બીડ઼ી સુનગેને અબૈ છી।”

ઓ

રામદાનીક પાઠ

બનુઆઁ પુછલક કનુઆઁસઁ-



"जैआ आइ-काल्हि तँ गामोक स्कूलमे बड़ सुविधा भेटै छै आ पढ़ाइओ होइ छै तैयो विद्यार्थी सभ शहरक स्कूलमे किए पढ़ै छै?"

कनुआँ जवाब देलक-

"गामक स्कूलमे इमानदारीक पाठ आ शहरक स्कूलमे रोजगारक पाठ पढ़बै छै।"

"से केना?" -ननुआँ पुनः पुछलक।

कनुआँ उत्तर देलक-

"गामक स्कूलमे एहेन पाठ पढ़बै छै जे कहुना साक्षर भऽ जाए, गाए-भैंस चराबए आ नमहर भेलापर हर-जोत जोतए, खेती करए अन्न उपजा कऽ अपनो खाए आ आनोकेँ खियाबए ई छिऐ ने इमानदारीक पाठ मुदा शहरक स्कूलमे विद्यार्थी सभकेँ रोजगारक पाठ पढ़बै छै। ओ सभ पढ़ि-लिखि रोजगार लऽ आन-आन शहर चलि जाइ छै। अपन घर-परिवार आ समाज सेहो छुटि जाइ छै। समाजसँ बेमुख भऽ जाइ छै। आब तोंही कह जे इमानदारीक पाठ के पढ़तै?"

ओ

बौआ बाजल

पढ़ल-लिखल बेरोजगार छी मुदा दिन केना कटै छल तकर कोनो सुधि-बुधि नै छल। ऊपरसँ परिवारक बोझ, आगू पढ़बाक इच्छा रहितो किछु नै कऽ सकलौं। एक दिन मनमे सुझाएल जे किछु नेना-भुटकाकेँ पढ़ाएल जाए। अहुना तँ हम बुड़िआएल छी ओनो बुड़िया जाएब।

एक दिन भोरमे बौआ-बुच्चीकेँ ओसारपर पढ़बै छलौं। दुनू बेरा-बेरी प्रश्न पुछए आ हम उत्तर दइ छेलिऐ। अहिना स्थितिमे बौआ पुछलक-

"ठीक एते मेहनतसँ किए पढ़ैए, जे पढ़ैए सेहो आ जे नै पढ़ैए ओहो तँ एक ने एक दिन मरिए जाइए?"

बौआकेँ हम समझबैत कहलिऐ-

"जीवन-मरण तँ प्रकृतिक नियम छी। ओ निश्चित होइत रहैत अछि।"

बौआ फेर पुछलक-



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

“નપની લોક કરિ પઢૈए?”

“મનુષ્ય પઢ઼િ-લિખિ જ્ઞાન અર્જિત કરૈए આ ઓર જ્ઞાનસઁ અપન જિનગીકેઁ સુલભ વના અસલી જિનગી જીવૈ। લોક પઢ઼િ-લિખિ ડાક્ટર-ઇંજિનિયર, ઓફિસર, કવિ, લેખક આ ઉપદેશક ઇત્યાદિ વનૈ। અચ્છા ઈ કહઉ જે તૂઁ કી વનવઽ?”

વૌઆ વાજલ-

“હમ પઢ઼િ-લિખિ કોનો કાજ કઽ સકૈ છી મુદા કવિ-લેખક નૈ વનવ। સભ કમા કઽ સુખ-મૌજસઁ જિનગી વિતવૈ છૈથ મુદા કવિ-લેખકકેઁ કોનો કમાઇ નૈ હોઇત છૈન। અખવારમે પઢ઼લિએ જે મરલ વાદ પુરસ્કાર ભેટૈ છૈ।”

ઓ

ઘૂસહા ઘર

મુખિયાજી પંચાયતક ગામે-ગામ આમ સભાક વૈસાર લેલ ઢોલહો દિયૌલૈન। ગામક લોક સભ એકજુટ ભઽ આમ સભામે પહુઁચલ। સભાકેઁ સમ્વોધિત કરૈત મુખિયાજી વાજલ-

“એ વૈસારમે સભ કિયો મીલિ નિર્ણય લિઅ જે પંચાયતક ગરીવ આ મસોમાત, જિનકર ઘર ટુટલ-ફાટલ હોઇ વા રહવા યોગ નૈ હોઇ, ઓર વેકતીક સૂચી વનાએલ જાઉ। હુનકા સભકેઁ સરકાર તરફસઁ ઘર વનવૈલે ઇન્દિરા-આવાસ યોજનાસઁ રૂપૈયા ભેટતૈન।”

વાર્ડ સદસ્યક સહયોગસઁ મુખિયાજી લગ ઇન્દિરા આવાસવલા સૂચી પહુઁચલ। વહિનેસઁ મુખિયાજીક દલાલ સભ સૂચીમે નામાંકિત વેકતીસઁ ભેંટ કઽ એક-એકટા શાર્મ દઽ કહિ દેલક જે શાર્મ ભરિ કઽ મુખિયાજી લગ જમા કરૈ જાઉ આ વૈંકમે ખાતા સેહો ખોલવા લેઇ જાઉ। સંગે સંગ પાઁચ હજાર રૂપૈઆ સેહો દિઅએ પડ઼ત। તખન ઇન્દિરા આવાસ ભેટત।

વહુત ગોટે તઁ અપન ગાએ-મહીસ-વકરી-છકરી-ગહના-જેવર જેકરા જે રહૈ વેચિ કઽ રૂપૈઆ દઽ રૂપૈઆ ઉઠેલક। કિછુ આદમી એહનો છલ જેકરા સકર્તા નૈ ભેલૈ ઓ વંચિત રહિ ગેલ। વદલામે પાઇવલા લોક અપના નામે ઉઠા લેલક।

કિછુ દિનક વાદ રઘિયા મસૌમાત ઇન્દિરા-આવાસ લે શાર્મ ભરિ મુખિયા જી લગ પહુઁચલી। મુખિયાજી શાર્મ પઢ઼િ વાજલ-



"પહિલે ઇન્દિરા આવાસમે પચીસ હજાર ભેટૈ છલૈ આવ ચાલિસ હજાર ભેટૈ છૈ મુદા આગૂસઁ સાઇઠ હજાર ભેટતૈ। જઇમે પચ્ચીસમે પાઁચ હજાર આ અખન ચાલિસમે દસ હજાર ખર્ચા લાગૈ છૈ મુદા આગૂ સાઇઠમે પન્દ્રહ હજાર લાગતૈ।"

નથિયા સુનતિ કાન-કનૈપ કઽ અપન મજદૂરી સુનૌલકૈન। મુખિયાજી મુડ઼ી ડોલૌત વજલા-

"ધરૂ કાકી, હમરે કેને કૈ ને હોઇ છૈ, ડેગ-ડેગ હાકિમ-હુકુમ વૈસલ છૈ। ઓહો તઁ કટિયા સોન્હા કઽ રખને રહૈ છૈ તેકરા કી હેતૈ। આ હમરો કોનો દરમાહા ભેટૈ છૈ હમહૂઁ તઁ ઓહીમે નિમહૈ છિઐ। તઁ ઇ હેતૌ જે હમ અપનવલા નૈ લેવો।"

નથિયા સભ વાત સુનિ પરિસ્થિતિ વૂઝિ આપસ આવિ ગેલી।

વુચની વુઢ઼િયા ગામમે સભસઁ ઉમેરગર। જુઆનિયેમે ઘરવલા વાઢ઼િ ડુમિ કઽ મરિ ગેલખિન। દૂટા વેટાક સંગ વુચની કહિયો હિમ્મત નૈ હારલી। સંઘર્ષ કરૈત આત્મ-નિર્ભરતાપર ધિયો-પુતોકેઁ સફલ વનૌને છૈથ। હલાઁકિ આર્થિક રૂપે કમજોર છૈથ।

એક દિન મુખિયાજીક નજૈર વુચની વુઢ઼િયાપર પડ઼લૈન આ દેખતે પુછલખિન-

"ગામક વહુતો લોક સભ લાભ લેલક મુદા તૂઁ કોનો સ્કીમો નૈ જનલીહી? તોરા તઁ દૂટા લાભ ભેટતૌ। એકટા વૃદ્ધા-પેંસન આ દોસર ઇન્દિરા આવાસક।"

વચની વજલી-

"ऐમે કોનો ખર્ચો-વર્ચો લાગૈ?"

મુખિયાજી-

"હઁ, વૃદ્ધા-પેંસનમે પાઁચ સએ આ ઇન્દિરા-આવાસમે પન્દ્રહ હજાર।"

વુચની-

"હમ ઇ લાભ નૈ લેવ।"

મુખિયાજી-

"કથિ નૈ લેવ?"

વુચની-

"ઘૂસ દઽ કઽ ઘર વનાએવ તઁ ઓઇ ઘૂસહા ઘરમે રહૈવલા કેહેન હેતૈ?"

મુખિયાજી આ વુચની વુઢ઼િયાક ગપ અપના ઘરક કોનચર લાગસઁ નથિયા મસોમાત સુનૈત છેલી અપના મનકેઁ વુઝૈત વજલી-

"ઇન્દિરા આવાસ કથિ ઘૂસહા ઘર કહિયૌ ને।"



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

શ્રો

ગંગા નહાએબ

કાતિક માસક પુર્ણમાસિ ઉગાયિાએઉ સાઉક તેનહમ માસ, વેસી પાવૈન-તહિાન મેને હાથો પ્પાઉીએ, મુદા ગામમે દઉમઉતિ હોરૂએ- ગંગા નહારૂઉ સમિનયિા ઘાટ ળાએવ।

એવેન પુનુપ્પસઁ વેસી ળનાનીએ સજ ગંગા સ્નાન કનએ ળારૂઉ છાઉ છીઉનૌ। તીનૂ ટોઉક ળનાની સજ ગુદુન-શ્રુસુન કનૈમે જાન-જાન દિનિ ઉગાઉ। યનનદેવ઼ જોમે ઉઠિ ગાએ-વનદકેઁ કુટ્ટી-સાની ઉગા યનપ્પેતી દસિ વ઼દિ। જેઉ કા વિડ઼કી જૌળી શ્રા સાવ઼ત્િની માએ ઙેઢ઼યિાપન શ્રાવિ ગેઉી। વડ઼કી જૌળી મુસ્કી માનિ વિળઉી-

"વૌશ્રા યનનદેવ઼, સુનૈ છી ગામક ઉીક સજ ગંગા નહારૂઉ ળા નહઉ શ્રછિ। શ્રહાઁ નરૂ ળાએવ। કહિયિા પુર્ણમાસિ છિએ।"

યનનદેવ઼ દનિ-તથિિ ગિનિત વાળઉ-

"પનસુએ પુર્ણમાસિ છી। હમન તઁ હાથે પ્પાઉી શ્રછિ, તહન છુય઼્છે હાથ ળાએવ કેના। એવેન નરૂ ળાએવ। ગંગા મૈયા ળઁ એ સાઉ નકિ-સુપ્પે નપ્પઉૈન તઁ એગાઉ સાઉ શ્રવસ્સ ળાએવ।"

સાવ઼ત્િની માએ વળઉી-

"યનનદેવ઼, એહનો વાત ઉીક વળૈએ! ગંગા નહારૂઉ તઁ વનિા ળતનો-કે-ળતના વનવૈએ, શ્રહાઁ કિએ મુઁહ મોડ઼ૈ છી।"

ગંગા નહારૂક યન્ય સુનિ એક્કે-દુરૂએ ળનળાિતિ સજ સસૈન-સસૈન શ્રાવિ યનનદેવ઼કેઁ ઘેનિ ઉિઉી। વડ઼કી જૌળી યૌઉ કનૈત કહઉપ્પનિ-

"યૌ શ્રહાઁ સજ દનિક વહન્નાવાળ છી, સે વહન્ના છોડ઼ૂ ળે હાથ છુય઼્છે શ્રછિ। શ્રપનો યઉૂ શ્રા હમનો સજકેઁ નેને યઉૂ। નહઉ પ્પન્યાક વાત, હમ તઁ પ્પન્યા દેપ્પવે ને કનૈ છી। ઘનેસઁ પ્પેનારૂ-પીનારૂક સમાન વના ઉ઼ ઉેવ। નેઉગાડ઼ીમે મેઉાક જીડ઼ નહવે કનત, ટકિટ કોનો ઉગાવે ને કનત। એક ગાડ઼ીસઁ નાતયિ઼-નાતિ ળાએવ શ્રા દોસન દનિ ઘન ઘૂમિ યિઉિ શ્રાએવ। ને કોનો ઘનક કાળ પછુશ્રાએઉ શ્રા મંગાનીમે ગંગા નહા ઉેવ। ળપ્પન મેઉામે કોનો યીળ-વ઼ૌસ કીનવે ને કનવ તપ્પન પ્પન્ય વેસી કિએ હએત। શ્રહૂઁ તઁ સયિાન ગુઁહકેઁ પનવત વનવૈ છી।"

વઙ્કો મૌળી ગાપક વપ્પાડ઼ી પ્પોઘ યાનૂ દસિસઁ યનનદેવકેઁ ગછાનિ ઉઉ। યનનદેવ સકદમ બઽ ગેઉ। કછિ ઉત્તન નર દેઉક। ળનળિાનિ સિબ સમૈહ્ ગેઉ ળે યઉૈઉ તૈયાન બઽ ગેઉ।

યનનદેવ મને-મન સોચઘ ઉગાઉ ળે વેદ-પુનાાાસઁ ઉઽ કઽ સાસ્યો પોથીમે ગંગા સ્નાનક વઙ્ પૈઘ મહત વનૌને અછિ। સત્યુગસઁ ઉઽ કઽ અપ્પન યનિ અપન દેશક ઉક આ આનો દેશક ઉક ગંગા નહાસ્ઘ તઁ યનનદેવ કહિ પાછૂ નહત। હમહૂઁ કહિ ને ઉાઉે સૂનમે વેડ઼ા પાન બઽ ળાસ।

ઘમહન બનાયિ દનિમે ળનળિાનિ સિબ પેનાસ-પોનાસક ઓનાયિાનમે ઉગિ ગેઉ। કયિો અનવા યાઉનક નોટી, અઉૂક બુળયિા વનૌઉક તઁ કયિો પનોડા-બુળયિા, તઁ કયિો ચૂડ઼ા-મુનહી, સતુઆ-નોન આ મચિયાસક મોટની વાન્હ યિઉૈઉ તૈયાન બઽ ગેઉ।

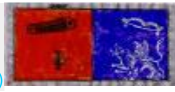
પચીસ-તીસ ગોટે સઁહુકે ગાડ઼ી પકડ઼ૈઉ ટેશિન દસિ વિદા ભેઉ। નચિમઉીસઁ સકની ળાસત-ળાસત બીઙક કાનામે વુનૂ દેહક મોઉ છુિટ ગેઉ। મુદા કોનો યનાની બોને-બોન સમિનાયિા ટીશન પહુઁચ ગેઉ। કછિુકાઉ ટેશિનેપન અઁટકૈ ગેઉ આ અન્હનોપ્પે ગંગા ઘાટ દસિ સબ કયિો વિદા ભેઉ। ટેશિનસઁ ઘાટ યનિ ચુટી ળકાઁ સત્તૈન ઉાઉ ઉક। કેતૌ કનીયોઁ ળગહે નર ળે ડાઢો બઽ ઉક ળીડ઼ાઘત।

સસતૈત-સસતૈત કહુના ગંગા ઘાટ પહુઁચ ગેઉ। દસિા-મૈદાનસઁ આવિ યનનદેવ દતમનિ કિનઘ ઉાઉ। ગામેસઁ સાહોનક દતમનિ અનને છેઉઘ। મુઁહ-હાથ ઘોય વેના-વેની ગંગામે નહાસ ગેઉ। ઘોન ઉચક્કાક કોનો કમી નસ, ળઁ ઘકેવેન સબ કયિો નહાસઉે ળેસ્તઘ તઁ હોડ઼ા-હૂટી ઉઽ પાન બઽ ળસ્તઘ।

ઉક તઁ ગંગા નહાસ્ત અછિ પુન્ય સમૈહ્ કઽ મુદા પાપો કનૈવઉ આતઘ વેસી નહસ। સબ કયિો નહા ઘક-ઘક ડવ્વા ગંગાળઉ બનિ આનિ ઊપન નપ્પઉક। પાનિ તેતે ઘોન-મટ્ઠા ભેઉ ઘનિાઘઉ છેઉૈ ળે મુહોઁમે નસ ઉસકે મન હોસ્ત। ઘાટસઁ હટિ ઊપનમે ઘકટા મન્દિર છઉ। આતસ ઘકટા યાપાકઉ સેહો છઉ। સબ કયિો યક્કમ-ચુક્કા કનૈત કઉ ઉા પહુઁચઉ। ભૂપ્પ-પયિાસ સબકેઁ ઉાઉ છેઉૈ અપન-અપન પ્પાઘક નકિાસઉ પ્પા-પ્પા પાનિ પીવ, મોટની-ચોટની વાન્હ ઉિઉક।

સવહક વિચાન ભેઉ ળે ગાડ઼ીમે વઙ્ દેની છૈ તઁઘ હમ સબ તાવે મેઉ ઘૂમિ દેપ્પવ। ઘૂમિ-ઘૂમિ ગંગા ઘાટક મનોનમ છવકિ આનન્દ ઉેવ। સબ કયિો ઘુમૈત દછિન-પૂવ દસિ ગેઉ। ળેતઘ પ્પાઉિ મુનદે ળનૈ છેઉૈ। ઉાસ અયળૂ હોસ કિ પાનિમે યસ્ઞાનિ-યસ્ઞાનિ કઽ બઁસા દસ છેઉૈ। તસ વગાઉેમે ઘોક ઘનિાઘઉ છેઉૈ ળે થુકો સ્ઉકનાસ અપનાવે વુહૈ છઉ। નાક-મુઁહ મુનિ સબ કયિો પડ઼ાઘઉ।

ગંગા કાતમે કછિુ દૂન તક ઘાટ વનઉ। નહાસક બીઙ્ આએવે નસ કનૈવઉ। તપ્પન ઘુમૈત સબ કયિો નાળેન્દ્ન પુઉ ઉા આવિ ગેઉ। ળેના પુઉ કયિો દેપ્પને નસ છઉ તહિના આઁપ્પિ સ્ઞાનિ-સ્ઞાનિ પુઉકેઁ દેપ્પઽ ઉાઉ। ઘુમૈત-સ્ઉડ઼િત સબ થાકિ-હાનિ ગેઉ। કાતકિક દુપહનયિાક તપ્પિન નૌદ ભેને ગનમી વઢિ ગેઉ। છાહૈનક કોનો અસે નસ। બળિઉાહા વસ્ત્ન માથપન નાપ્પિ હાથસઁ પકૈડ઼ હઁાંહ વના-વના સબ ઘુનયિા કઽ વૈસઉ।



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बैसल-बैसल लोक सभ गंगा महात्मक चर्च करए लगल। जेकरा जे बुझल-सुनल आकि मनमे फुराइ से बजै छल। तखने बड़की मौसी आ कुपहावाली काकीकें तरह-तरह कऽ मन होमऽ लगलैन। बोकरा-बोकरा भरली। गंगामे कखनो मरलाहा जीव-जन्तुकें भँसैत जाइत देखै तँ कखनो मुरदाकें, तहिना चारूकात जे घिनाएल देखै से परपंचे ने होइ।

चनरदेवक मनमे गंगाक प्रति श्रद्धा-भक्ति आ आस्था छल ओहो कमए लगलै। कथा-पुराण आ साधु-संतक प्रवचनमे गंगा-महात्म पढ़ने-सुनने रहए ओ साँच छी की झूठ तइ ओझरीमे ओझरा गेल। तैयो चनरदेव मनमे सगुन बान्हि सोचए- जेतए चारू जुगमे लोक गंगा-महात्मकें मानैत आएल छैथ, तेतए हमरा मानने वा नइ मानने की हएत। एतेक लोक जे गंगा नहाइए, की ओइ पुण्य-प्रतापे सभ स्वर्ग जाइए? आ जे गंगा नइ नहा पबैए ओ की नरक जाइए? तखन तँ केहनो कुकर्म करैत रहि आ गंगा नहा स्वर्ग चलि जाउ, सुकर्मक कोनो जरूरते नइ!

तही बिचमे सुगापट्टीवालीकें बड़बड़ैनी धेलकै। अकचकाइत बीरपुरवालीकें कहलक-

"दीदी, एगो बात पुछैछी कऽ बुझा दथु। जखन गंगा अपने एते घिनाएल अछि आ लोक सभ नहा कऽ अपन पाप धोइए तँ एतेक गन्दगी आ पापकें गंगा मैया केतए जमा करैए?"

बीरपुरवाली काकी सुगापट्टीवालीकें समझबैत कहलखिन-

"देखै नइ छहक गंगा मैयाकें कोनो बखारी आकि गोदाम छै जे ओइमे जमा राखत।"

सुगापट्टीवाली-

"तखन गंगाजी अपना पेटमे सोन्हि-मोइन बना रखैत हेती।"

तैपर बीरपुरवाली बजली-

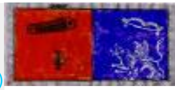
"हे हइ, एना अनरगल कहि बजै छहक! गंगा मैया एहेन नइ छैथ जे एतेक रास पाप आ गन्दगीकें जमा करत। कथीले करत आ कहि जमा करत। पाप आ गंदा तँ लोक करैए जे करत से ने भोगत। ओ अपने ने पाप करैए आ ने गंदा। सभटा लोककें बाँटि दइए।"

सुगापट्टीवाली-

"से केना दीदी। एतेकालसँ छी, कहाँ कहियो बँटैत देखै छी गंगाजीकें।"

बीरपुरवाली काकी बजली-

"हइ सुगापट्टीवाली, तोरा सनक सोझमतिया जनानी अहू जुगमे अछि से हम नइ बुझने छेलौं। एक गाममे जनमल आ दोसर गाममे गनिथाइर बनल छहक से ओहिना। देखहक गंगा केना पाप आ गन्दगीकें बँटै छथिन। जेते लोक गंगा नहा कऽ पाप धोइए ओ अपना-अपना मनक भरम दूर करैए। जखन ओ डुबकी मारि डिबियामे जल घरक खातिर भरैए, जइ जलसँ लोक तन-मन शुद्ध करैए तखने जेकर जे पाप केलहा रहै छै, तेकरा गंगा बाँटि दइ छै।"



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

વચ્ચેમે કુપહાવાઓ કાકી આ વડ઼કી મૌળીકેં વષિયસઁ જૅસયિાશ્ગ દેપ્ય સાવિત્રી માએ વળઓ-

"વૌઆ યનાદેવ, હમ ત઼ઁ કાન પકડૈ છી એહેન કામ ળનિગીમે સ્વન કહયિો ને કનવા ઈ ત઼ઁ દેખૌસ કેઓ। અસઓ ગંગા ત઼ઁ સવહક મનેમે વસૈણ ળે કયિો દેખ્વે ને કનૈણ કહવયિો છૈ, મન યંગા ત઼ઁ કઠૌતીમે ગંગા। નહઓ ગંગા નહા કઽ પાપ ધોઅવ આ પુણ્ય ઉટવા ત઼ઁ ળખન પાપ કનવૈ ને કનવ ત઼ઁ પુણ્યક કોન કાળ અછિ। ળખન કનમકેં યનમ વૃદ્ધિ કનવ તખન અયનમ કએિ હએત। ળે ળેહેન કનત તેકન સ્વઓ ત઼ઁ તેહને ઓકના ભોગએ પડ઼ત। હમના વુદ્ધે ઈ સબટા મનક ભનમ છિએ।"

ગપ-સપ્પક વીય દુપહનિયા વતિઓ કતિખને ઘન ળાસ્ઓ ગાડ઼ી યુયુઆશ્ગ આવિ ગેઓ। સભ કયિો ગાડ઼ીપન યઢ઼ વિદા ભેઓ। ટશિનસઁ યઓ ળખન ગામક સીમા કાત આએઓ તખને સભ કયિો તીન-તીન વેન ગંગાળી કેં ગોડ઼ ઓગ વાળઓ ળે એહેન દનિ નઈ કનહિ ળે દોસન વેન આવ કહયિો ગંગા નહાસ્ઓ ળાએ પડ઼એ। કાન પકૈડ઼-પકૈડ઼ ળનિગી ભનકિ ઓઓ ગંગાળી સઁ માસ્ફી માંગ ઓઓક।

ઓ

શક્ષિાક મહ્ગ

ળીવછ ઘનળમૈયા છઓ। હુનકન પત્ની નયયિા, માએ-વાપક એકઓતી વેટી વડ઼ દુઓન છિઓ। નયયિાક પતિાકેં યાન વીઘા યાસ-વાસ, કઓમ-વાઁસ આ ગાએ-વડ઼દ છઓ। ખેતી-વાડ઼ીસઁ ળનિગી યઓ છૈઓન। સોહ્મતયિા નહને કોનો છઓ-કપટ નૈ નહૈન। પતિમૂ છઓ। પનવિાનમે અક્ષનક વોય કેકનો નૈ નહૈન ખાઓ ળીવછ ટ-વ કએ કઽ સાક્ષન છઓ। નયયિાક પતિા ળૂનત પડ઼ઓપન ળખન સમાળમે કોનો ઓન-દેન કનૈ છઓ ત઼ઁ અૌઠક નશિાન દઈ છઓ।

એક સાઓ એહેન સમએ ભેઓ ળે સ્ઓકાક સ્ઓકા વાઢ઼િ-પાનસિઁ દહિ ગેઓ। ને નેવાન કનૈઓ અન્ન આ ને દાઁત ખોદહૈઓ નાન-પુઆન ભેઓ। દોસન સાઓ નૌદી ભઽ ગેઓ। એક ત઼ઁ વાઢ઼કિ માનઓ, દોસન નૌદીક ળનઓ। ગનીવ-ગુનવાકેં ગુળન કટનાઈ પહાડ઼ ભઽ ગેઓ। કેતેકો પનવિાન ત઼ઁ આન-આન ગામ અપન-અપન કુટુમૈતી ળા કછિુ દનિ સમએ કટઓક। મુદા ઈ સુવયિા સવહક નશીવ નૈ છૈઓ। ગામક નમહન ળમીનદાન, માઓકિ-ગુમસ્તા ળે છઓ હુનકા ત઼ઁ પહુઓકે સાઓક પુનના અન્ન વખાનીક-વખાની ભનઓ છૈઓન। હુનકા સભકેં કોનો યન્તિા નૈ છૈઓન। નયયિાક માએ-વાપ વૃઢ઼ નહને આન ગામ ળા કેના કાળ કનત। ઓ દુનૂ ગામેમે માઓકિસઁ કહયિો મનૂઆ ત઼ઁ કહયિો યાન ત઼ઁ કહયિો છાઁટી યાઉન કન્ળા ઓઽ સમએ કાટૈ છઓ। કન્ળા દેનહિાન માઓકિ સભ વપિતકિ સમૈમે ગનીવક શોષણ સેહો કનૈત। એક મન અન્નક વદઓ દૂ મન આ દોસન સાઓ યુકેઓપન તીન મનક કનાનીપન કન્ળા ઓગવૈત।

तेकर बादो औंठाक निशान एकटाकेँ के कहए जे तीन-तीनटा छाप कागतपर लइ छेलखिन। गरीब अपन परान बँचाएत आकि छापक परवाह करत। कर्जा खेनिहार थोड़े बुझै छल कि छाप देबै कागतपर आ हमर जमीन जत्था चलि जेतै तक्खापर।

एक दू साल समए बितलै। जीवछ अपन सोसराइमे सासु-ससुरक सेवा आ खेती-बाड़ी कऽ गुजर-बसर करै छल। किछु समए पछाति सासु-ससुर मरि गेलखिन। श्राद्ध-कर्मसँ निवृत भेल छल आकि गामक मालिक-मुख्तार लोकैन अपन-अपन कागत लऽ जीवछ ऐठाम पहुँचए लगल। कहला तँ करारीपर देने रहैन। ओ समय बीति गेल छल। कर्जा खेनिहार पहिले कागतपर छाप देने रहैन। ओइ कागतपर मालिक-जमीनदार लोकैन जमीनक खाता-खेसरा नम्बर लिखि कऽ अपन नाओं कऽ लेलैन। गरीब सबहक जमीन मालिक-मुख्तार हरैप लेलकैन। जइमे नयनाक जमीन सेहो चलि गेल। आब जीवछ-नयनाकेँ दूटा बेटी, एकटा बेटा आ परिवारक भरन-पोषण करनाइ कठिन भऽ गेल। जीवछ कमाइ खातिर बाहर चलि गेल। बाहरमे पढ़ल-लिखल आदमीकेँ नोकरी जल्दीए होइ छैक आ बेसी दरमाहा सेहो भेटै छैक। जीवछ बेसी पढ़ल तँ नै मुदा साक्षर छल। जइसँ शिक्षाक महत जिनगीमे केतेक होइ छै से मोने-मन महसूस करै छल।

जीवछ ट-व-ट काए कहुना कऽ चिट्ठी लिखि घर पठेलक। ओइमे बेटा-बेटीकेँ पढ़बैले नयनाकेँ प्रेरित करैत कहै छल जे पढ़ाइमे जेते खरच लागत, हम कमाए कऽ पठाएब मुदा अहाँ धिया-पुताकेँ पढ़बैमे कोनो कोताही नै करब। नयना मोने-मन सोचै छेली जे ठीक लोक बनबाक लेल शिक्षाक बड़ महत छै। जे हम आ हमर माए-बाप जँए नै पढ़ल छेली तँए ने सभटा जमीन मालिक-मुख्तार हरैप लेलैन। जखन पढ़ल रहितौं तँ ई मुसिबत नै अबितए। हम सभ जे केलौं से केलौं मुदा धिया-पुताकेँ जरूर पढ़ाएब। अइले हमरा जे परिश्रम आ त्याग करए पड़त ओ करब। ओ सभ दिन अपन धिया-पुताकेँ समैपर संगे जा स्कूल पहुँचाबए लगली।

नयनाक टोलमे बुच्ची बाबू छल। बुच्ची बाबू अंचलमे बड़ाबाबू छैथ। छुट्टीमे घर आएल छैथ। हुनका काल्हि भोरे ट्रेन पकैड़ ड्यूटीपर जेबाक छेलैन से नयनाकेँ कहलखिन-

"नयना, किछु समान अछि अखनि गाममे कएक गोटेकेँ कहलिऐ जे काल्हि भोरके ट्रेन पकड़ब से कनी समान स्टेशनपर पहुँचा दिअ, मुदा कियो तैयार नै भेल। तूँ कनी पहुँचा दे। हम तोहर बड़ उपकार मानबौ।"

नयना बाजलि-

"ठीक छै, कअए चलै चलब। कहि दिअ हम समान पहुँचा देब।"

बुच्ची बाबू बजला-

"सात बजे भोरेमे चलब। किएक तँ आठ बजेमे ट्रेन छै। तीन-चारि किलो मीटर स्टेशन दूरो छै।"

नयना भोरे उठि सभ काज कऽ जल्दी बना धिया-पुताकेँ खाइले दऽ बजली-

"तूँ सभ जल्दीसँ खो, आइ कनी पहिनहियेँ तोरा सभकेँ स्कूल पहुँचा दइ छियौ, तखन बुच्ची बाबूक समान पहुँचबैले टीशन जाएब।"



एम्हर बुच्ची बाबू तैयार भऽ रधियाक बाट तकै छल। पाँच मिनट पछाति रधिया पहुँचल। बुच्ची बाबू तमसाइत बजल-

"रधिया, तोरा कहने छेलियौ साते बजै चलैले, देरी भऽ गेल। ट्रेन छूटि जाएत। तोरा कोनो चिन्ता नै।"

रधिया बजल-

"अपने तमसाउ नै। धीरे-धीरे बढ़ू हम समान लेने लश्करल पटरीपर आबि रहल छी। कनी धिया-पुताकेँ स्कूल पहुँचबैमे देरी लागि गेल।"

बुच्ची बाबू-

"पहिल समान पहुँचा दइतै, हमरा ट्रेन छूटि जाइत। एक दिन तोहर बेटा-बेटी स्कूल नै जेतौ तँ की हेतौ। एक्के दिन कोनो पढ़ि कऽ कलक्टर बनि जेतौ?"

रधिया मोने-मन सोचए लागल, कहै छथिन आगू बढ़ैल से उमरि ने होइ छैन। हम तँ लश्करल हुनिकासँ पहिनहि पहुँच जाएब। ट्रेन थोड़े छुटतैन। अपने बेगरते आन्हर छैथ। अनेरे गछलौं।

ओ

ई छी हम्मर मजबुरी

जमुना बाबाक दुआरिपर सतसंग-प्रवचन होइ छैक। भीड़ देख हमहूँ ससरि कऽ गेलौं आ बैस सुनए लगलौं। प्रवचनकर्ता सेहो ज्ञानी आ विद्वान बूझि पड़ल। ओ मनुष्यक जिनगीक समरूपता बतबै छल। कहब रहैन जे सभ मनुष्य एक समान छी। सभ एके ईश्वरक सन्तान छी आ सबहक आत्मामे एके परमात्माक अंश रमि रहल-ए।

मुदा हम तँ बड़ अन्तर देखै छी। सबहक क्रिया-कलाप, रहन-सहन आ खानो-पानमे बड़ पैघ भिन्नता अछि। केकरो बोरे-बोरे नून आ केकरो रोटियोपर ने नून। कोइ खाइते-खाइते मरैए आ कोइ खाइए बिनु मरैए। केकरो बीघा-बीघे कोठा-सोफा केकरो खोपड़ियोपर आफत। कोइ रौदे-बसाते जरि-मरि काज करैए तँ कोइ एसीमे मौज करैए। कियो उड़न जहाजसँ देश-विदेशक यात्रा करैए तँ कियो परने चलि-चलि सड़केपर परान तियागैए। कनिको बिमारीक इलाज करोड़ो रूपैआसँ विदेशमे होइए तँ कनिको परान साधारन इलाज बिनु चलि जाइए।



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

ઐ સભ મુદ્દાપર સોચ-વિચાર કરૈત ળખન પ્રવચન ખતમ ભેલ તખન હમ હુનકા લગ ળા કહલિઐ-

“મહરાળ, અપને પ્રવચનમે સભ મનુષ્યકેં સમરૂપ વતૌલિઐ। મુદા હમ તઁ વડ઼ અન્તર દેખૈ છી। સે કની સ્ફડ઼છિ કઽ કહિયૌ।”

પ્રવચનકર્તા મધુર સ્વરમે વળલા-

“સે તઁ ઠીકે અહૂઁ કહૈ છી। હમ ળે પ્રવચનમે કહલૌ સેહો ઠીક આ અહાઁ ળે કહૈ છી સેહો ઠીક। સત્ ઈ છૈ પ્રકૃતિ દ્વારા ળે સુવિધા મનુષ્યક લેલ ઉપલવ્ધ છૈ આ સમરૂપ છૈ। મુદા મનુષ્યક વીચમે ળે અન્તર છૈ સે અન્તર વ્યવસ્થામે કમીક કારણે છૈ। મનુષ્યે મનુષ્યક દુશ્મન છથિ। ળે ળેતે સવલ છૈ આ ઓતે દોસરાક હક મારિ વ્યવસ્થાકેં દુરૂપયોગ કરૈ છૈ। ળહિના હાથીકેં દૂટા દાઁત હોઇ છૈ એકટા ખાઇવલા આ દોસર દેખવૈવલા તહિના વ્યવસ્થા કરૈવલાકેં દૂ ચરૈત્ર હોઇ છૈ। કથની આ કરનીમે અન્તર રખને છૈ। ઐ સભ વાતક વિચાર-અનુભવ મનુષ્યકેં અપને કરઇ પડ઼તૈ। ઓકર સમાધાન લેલ સઘર્ષ કરઇ પડ઼તૈ। વિનુ માંગને તઁ ભીખો નૈ ભેટૈ છૈ। ઈ તઁ અહાઁ અધિકારક વાત કરૈ છી। ળૌ હમ પ્રવચનમે સમરૂપતાક વાત નૈ કહવૈ તઁ વ્યવસ્થા હમરા નૈ ને ળીવઇ દેત। અહાઁ ળકાઁ ળૌ હમહૂઁ પ્રવચનમે વાળવ તઁ કહિયા ને હમરા ળમપુરી પહુઁચા દેતે રહિત। ચહઇ છી હમર મળવૂરી।”

અ

વાલ વોધ

દુખીલાલકેં દુખક પહાડ઼ માથસઁ કહિયો નહિયેઁ નૈ ભેલ। વૃદ્ધ માઇ-વાપક સેવા ટહલ, તૈપર સઁ દૂટા ભાઇઠેરવા વેટી, છોટ-છોટ દૂટા વેટા, પત્ની આ અપને કુલ આઠ વેકતીક પરિવાર। પત્ની- સુલિયા- પરિવારક કાળમે પસિઝલ છેલી। સાસુ-સસુરક ટહલ-ટકોરા આ સેવાસઁ પલખૈતે ને। ઊપરસઁ એકટા પોસિયા ગાઇ, એકટા ભળૈતિયા વરદ। મુદા દુનૂ વેટી ચઠલગાતિ આ હુનગાતિ છૈન। ઘરક કમૌઆ દુખીલાલ અસકરે દિન-રાતિ સ્ફિકિશિન રહૈત। ઘરક ખર્ચા પુરવે ને કરૈત ળે પલખતિ ભેટત। ખેતિયો-પથારી કમ્મે ભેને ળને-વુત્તાપર ઘરક ખર્ચા ચલૈત અછિ। ળખન ખેનાઇઓ-પીનાઇઓમે ઢનસને તખન વેટા-વેટી પઢત કેના? વર્ખક પેસતે દુખીક માઇ લકવા રોગસઁ મરિ ગેલી। પછાતિ વૃદ્ધ વાપ સેહો રોગસઁ રોગા-સોગા દમ તોડ઼ દેલકૈન। શ્રાધ-કર્મ આ ભોળ-ભાત કર્ળે હાથે ભેલ।

દુખીલાલકેં એક-સવા કટ્ઠા ડીહ, તીન કટ્ઠા ચૌમાસ આ છહ-સાત કટ્ઠા તીન-સ્ફસલિ ખેત છૈન। ળઇસઁ છહ માસ પરિવારક ગુળર ચલૈ છૈન। ળન-મળદૂરી કઽ શેષ છહ માસ વતિવૈત અછિ। મુદા અખન તઁ ચૌમાસ આ તીન-સ્ફસલિ ખેત દસ

હળાનમે ઉઢા સૂદપિન ભનના ળગ઼િગે૭ અછિ ગૈપન સઁ દૂટા વેટીક વશ્રિાહક અ૭ગે। દુનૂ વેટા અપ્પન વા૭-વોય! સમસ્યા-પન-સમસ્યા ૭દ૭ ળા નહ૭ અછિ ળઁ યાનિ-પાઁચ સા૭ પ્પેન-ભનના નૂપૈશ્રાક સૂદનિ ભનવ નઁ પ્પેનો સૂદપિ નને યવિ ળાયતા ગાપ વકિ૭ યનવાહપિમે કહવી સન હ્યના

એક દનિ દુપ્પી૭૭ વૈસાનીપ છ૭। કછિુ સોચૈત છ૭ શ્રાકા મિનમે ઉપકઠે પ્પેનક ભનના। ળર પ્પેનસઁ હમન વાપ-દાદા પનવિાન યઠવૈ છ૭। વ઼પહ પ્પેન હમનો ળીવકિા અછિ। મુદા શ્રાવ વૂહિ પિઙૈપ શ્રો પ્પેન વઠિટ ળાયતા ઐ ક્નમમે સોચૈત દુપ્પી૭૭ ટહૈ૭ મા૭કિ પ્નમૂનાથળીક દનવળ્ળાપન પહુઁચ૭। પ્નમૂનાથળી દુપ્પીકેઁ દેપ્પતે કહ૭પ્પાનિ-

"શ્રાવહ દુપ્પી, એમકો વહુત દનિપન ભેઁટ કનપ એ૭હ।"

દુપ્પી૭૭-

"મા૭કિ, અહઁસઁ કથી છુપ૭ અછિ। પ઼ોક દનિસઁ માપ-વાપક કહુના ગીન ઉગાનવૈ મુદા અપનેક ગીન કેના યુકાપવ સે શ્રુઙૈવે ને કનૈય।"

પ્નમૂનાથળી-

"કેના યુકેવ઼ સે નઁ ગોહન કાળ છશ્રિ। નરવે હમ કપિ મગળમાની કનવા સાવે-સાવે હમના નૂપૈશ્રાક ઙીનહ સૂદનિ વઢૈત ળેતહ। પાઁચ સા૭ક કનાઙી છહ, નૈ યુકેવહક નઁ પ્પેન છોઙહ પઙતઽ"

દુપ્પી૭૭-

"મા૭કિ, એના નૈ ને વાળૂ। પ્પેનક નાશ્રો સુનિ હિમન કનેળા શ્રાટિ ળારયા ઙ પ્પેન હમન પ્પનદાનક પૂળી શ્રા રળ્ળનિ છૈ। અપના ળીવૈત હમ કેના વઠિટપ દેવ।"

પ્નમૂનાથળી-

"સે નઁ નૂઁ ઠીકે કહૈ છહ। નૂપૈશ્રાક સૂદનિ ળોઙિ યુકના કઽ દહક શ્રા અપન પ્પેન છોઙા વૈહ।"

દુપ્પી૭૭-

"મા૭કિ, અહીક દનવાનમે ળન-મળુની કઽ ળીવ વૈ૭। નહ૭ અહઁક નૂપૈશ્રાક સૂદનિ, નર એવળમે હમ અપન દુનૂ વેટાકેઁ અહી ઐઠામ નોકની નાપ્પિ દિર છી। વઁચ૭ોહો વાસિ-વિનહટ પ્પા ળીવ વૈત શ્રા અહૂઁક કાળ યઠતા ળાયનિ અહઁક નૂપૈશ્રાક સૂદ-મૂન નૈ સયત નાયનિ અહીક દનવાનમે નોકન વનિ પ્પિટિ દેત। નૂપૈશ્રોક યુકતા ભઽ ળાયત શ્રા હમનો પ્પેન છુટિ ળાયતા"

પ્નમૂનાથળી-

"કહ૭હ નઁ વઙ નીક। પુક્નયિો નોહન નીમન છહ મુદા।"



દુખીલાલ-

"માલિક 'મુદા' કહિ કહલૌ?"

પ્રમૂનાથળી-

"મુદા એ દુઆરે વળલૌ કરિોહ્ન વેટા દુનૂકેં તેં દેખને નૈ છી। અવોય અછિ આકરિ વાલ-વોય "

દુખીલાલ-

"વાલ-વોય અછિ ઠેકનગાનિ, એકવેન સેનાયિા કઽ વતા દેવૈ તેં દોસન વેન અઢવએ નૈ પડ઼તા દેખતે-દેખતે શુન્ન-શુન્ન કાળ કઽ દેતા એક્કો મસિયિા અસકતાયિા નૈ અછિ"

પ્રમૂનાથળી-

"વેસ કાલ્હયિ દુનૂકેં વળૌને આવહ। નૈનસઁ દેખાયિો લેવ આ કાળ કનૈ ળોકન અછિ કિ નૈ સેહો ઠેકારન લેવા"

દુખીલાલ-

"વેસ માલિક, ળાર છી કાલ્હયિ દુનૂકેં સંગે નેને અવે છી।"

દુખીલાલ અપન કન્તવ્યકેં હીન વૂહ્ યિનિ્તામે ડૂમ ગેલા હમ કેહેન વાપ છી ળે વાલ-વોય વેટાકેં મોળન-વસ્ત્ન-શક્ષિા સ્વાદિ પૂન નૈ કઽ અપને વેગાનતે નોકની લાવૈ છી। વેટા-વેટી નાળાક હુઅએ આકગિનીવક સમાકેં અપન સન્તાન દુલૂઆ હોર છૈ। ળખન નમહન-વુયગિન-ઠેકનગાન હએત તેં કી કહતા હમન વાપ કેહેન નષ્ઠુિન છૈથ ળે હમના સંગે એહેન અન્યાય કેલૈના મુદા હમના લાગ નસ્તે કોન અછિ દોસન કોન ઉપએ લાગ સકવા મોનક વાત મોનમે નખૈત હ્ૃદૈકેં સક્કત કઽ વહિાને મને પનિપિઆર કના સંગે નેને પ્રમૂનાથળીક દનવાન પહુઁચલ દુનૂ વાલ-વોય માએ ગાંગી-ળમુની, દેખૈઓમે વડ઼ નુનુઆગન, ઉમેનો આઠ-દસ વન્ખક। પ્રમૂનાથ ળીકેં મનમે મેલૈન વડ઼ નીમન ટહલૂ હએતા મુદા અનઠૈત વળલ-

"દુખી દુનૂ વૌઆ તેં અપ્પન લેવુનયિ અછિ હમના એઠામ કોન કાળ કનતા એઠામ તેં મીડ઼ાન કાળ અછિ"

દુખીલાલ વૂહ્ગેલ ળે માલિક હમના ટાડ઼ નહલ અછિ વાળલ-

"માલિક, છોટ દેખ હુહુઆઉ નૈ। ઘનક છોટ-છોટ સમ કાળ કનતા ગાએ-વનદક કુટ્ટી-સાની, દનવળ્ળા, માલ-ળાલક વથાન આ ગોહાલ ઘનક હ્રાન-વહ્રાન કનતા ગોવન-કનસી ઢલ-ઢાલકેં હટાએતા અહૂઁકેં કયિો ટહલ-ટકિોના કનૈવલ નૈ અછિ સેહો અપન સમૈહ્ કનતા અહૂઁ અપને પોતા સન વેવહ્રાન કનવૈ। ઘને ને વદૈલ ળૌતે મુદા નહૌ તેં ગામેમે। અહાઁ લાગ નહત તેં હમ નશ્ચિકિન્તિ નહવા ઓના હમહૂઁ તેં અવતિ-ળારતે નહવા"

પ્રમૂનાથળી-

"દુખી, તૂઁ ને ગામ-ઘનક વાત કનૈ છહ। લેક તેં શહન ળારલ ળાન ગમૌને અછિ"

દુખીલાલ-

“માલિક કી કહવ, લોક તઁ ચડ઼િ ભ઼ ગેલ અછિ। જેતે પેટ ભરૈ છૈ ઓતે ખોતા વના નૈહિ અછિ।”

પ્રભુનાથજી-

“સે ઠીક। હમરે બેટાકેઁ લૈ દેખૈ છહક। ગામ-સમાજ છોડ઼િ હૈદરાબાદમે રહૈ। પાઇન-તહિર તઁ હમ જાવૈ જીવૈ છી તાવે કહના ક઼ દર છિપ, લૈ તઁ ઘરક દેખનાકેઁ એક યુગક પાનિયોઁ કે દેત।”

દુખીલાલ-

“માલિક, છોડૂ દુનિયોઁ-દારીક ગપ-સપ્પ। હમરો કાજપર જારૂક અછિ। ઓર ગપ-સપ્પ દોસરો દિન હેતૈ। દુનૂ બાલ-બોધકેઁ સમ્હારૂ।”

પ્રભુનાથજી-

“દુખી, કહી આર બૈસહ। ઈ દુનૂ બૌઆ અનાથિરાહ અછિ। કહી બતિયા લઇ છી। નાઓ બૂઝલ રહત તઁ સમૈપર સમહા-બુઝા દેવૈ। લૈ તઁ પોસો લૈ માતત। તૂઁ તઁ બુઝવે કરૈ છહક જે હમરાસઁ દુનૂ બૌઆકેઁ ખટપટ તઁ લૈ હએત મુદા હમર બુઢ઼િયાક સોભાવ આ વેવહારકેઁ તઁ તૂઁ નીકસઁ જનૈ છહ, ઓ મક્કે લાવા જકાઁ દિન ભરિ સ્થિટસ્થટાઇતે રહૈ છૈથ। તેહેન હનકાહિ અછિ જે કેકરોસઁ પટબૈ તે ખાર છૈ। દિન-ભરિ પૂજે-પાઠમે લાગલ રહૈત, દિનિક ભોજન બારતિ આ રાતુકા ભોરમે પારણ કરૈત। જઁ કિયો લાગિયો-ભીરિયો દેતૈ તઁ કહત જે હમર સભ કછુ છુવા ગેલ। એકબેર કે કહએ જે તીન-તીન બેર નહાએત આ ગંગાજલસઁ શુદ્ધ કરત। બેટો-પુતોહુ આ પોતા-પોતી જખન અબૈએ તઁ દેખતે વનરની જકાઁ લડ઼તિ રહૈત। તખન હમર જતિગી કેહેન અછિ સે બતુ કહને બૂઝિ ગેલ હેવહ।”

દુખીલાલ-

“માલિક, ઈ તઁ ઘરક વાત છી। ઓઇમે હમ કપિ દખલ દેવ। મનુખો કોનો એક્કે રંગાક હોઇએ। લોક અપન સુખ-દુખક સંતુલન અપને કરૈત। અપજશ દોસરકેઁ લાગૈત।”

વાત સમટૈત દુખી દુનૂ વાલ-વોધક દિસિ ઇશારા કેલક।

પ્રભુનાથજી પુછલખિન-

“વૌઆ, નાઓ કી છિઅ?”

દુનૂ ભાઁઇ એક્કે સ્વરમે અપન-અપન નાઓ વાજલ-

“વુધન-વેચન।”

પ્રભુનાથ-

“મુઁહ સૂપ્પ૭ છહ। કહ્છિ પ્પેવહ?”

દુનૂ ભાઁ૨ વાળ૭-

“ભૈ, પનીપિશ્રા૨ કઽ ઉેને છી।”

પ્નમૂનાથળી-

“ળોહ્ન વાપક કહ્વ અછિ ળે દુનૂ ભાઁ૨ અહીંગમ કાળ કનાળ સે કનવહક ને?”

વુચન-

“હઁ।”

પ્નમૂનાથળી-

“અપન કાળ કહુના સભ કનૈપ મુદા વીનાનક કાળ કયિ઼ો કનૈપ આ કયિ઼ો નૈ કનપ યાહૈપ।”

વુચન-

“હમ અપન આ વીનાનમે અન્તન નૈ વુહૈ છી। કાળ કનવા”

દુપ્પીભ૭ વૂહ્િગેભ ળે વાળ વઢ઼િ ળાપળ। વાળકેં સમ્હાનૈળ વાળ૭-

“માભકિ ગીવક વેટાકેં કથી પનીક્ષા ભ૨ છપિ। ળે કહ્વૈ સે કનળ। અવેન ભઽ ગેભ કાળપન ળા૨ છી।”

પ્નમૂનાથળી-

“કની દનમાહ઼ા સ્ત્નશ્ચિા ઉેહ ળે પછા૨ળ કોનો મુહઁ-ડ઼ી ને હુઅપ।”

દુપ્પીભ૭-

“માભકિ, દનમાહ઼ા કી હૈ। અહાઁસઁ નૂપૈઆ દસ હળાન નેને છી। સાભમે પનનહ હળાન હપળ। પઁચ-પઁચ સપ નૂપૈઆ મહિનાક હિસાવસઁ દુનૂ ભાઁ૨ક એક હળાન ભેભ। પનનહ મહિનામે અહાઁક નૂપૈઆ સ્તનપિ઼ા ળાપળ, નૈ માનવ નઁ એક માસ વેસીપ પ્પટિ દેત। હમનો પ્પેત છૂટિ ળાપળ। ને અહાઁકેં દશ્ચિ પડ઼ત આ ને હમના। દુનૂ ભાઁ૨ અહીક દનવાનમે પ્પાપળ-પીઅત કાળ અહાઁક અનુકૂ૭ કનળ।”

પ્નમૂનાથળી-

“ડીક છૈ માનિભભશ્ચિ। નૂ નઁ હમનોસઁ ળેળ નકિ૭૭હ। હમ નઁ વાભ-વોયક સ્તેનમે અવોય વનિગેભૈ।”

આો

अविश्वास

काल्हिये नून बाबूक बेटीकेँ विवाह छी। नून बाबू विवाहक सभमाव सबहक ओरियानमे लागल छथि। गरिहत आ सम्पन्न परिवार नहियो नूपैआक अभाव छैहैन। चारि लाख टाका, पाँच भरि सोना आ एकटा मोटर साइकिल देहेजपर विवाह ठारल भेल छथि। दुल्हा इंजीनियरिंग कौलेजक छात्र। सुच्चो सम्पन्न परिवार। दुल्हाक पिता मोहन बाबू एस.डी.ओ. ओफिसक बड़ाबाबू। ठीक कमेने-धटेने छैथ। तँए नून बाबू अपन बेटी सुचिताकेँ हुनके घरमे कुटमैती करैक निर्णए लेने छैथ।

नून बाबू बहुत परियास कैरत तीन लाख नूपैआ मोटर साइकिल, दू भरि सोना तिलकक समैमे जुकता कऽ देलैन। शेष तीन भरि सोना बेटीक गहना स्वरूप विवाहे दिन देब आ एक लाख नूपैआ जे बँकियौता रहि गेल ओ बेटीक नामे एल.आइ.सी. बीमामे जमा अछि। जे दू तीन मास पछाइत मिचित सेहो जुकता कऽ देब। तिलक भेल पछाइत विवाहक दिन ठेकल गेल। मुदा दुल्हाक पिता मोहन बाबू बड़ लोभी। ओ मोने-मोन सोचैथ, पुतोहु जखन हमर हएत तँ एल.आइ.सी.क नूपैआ आइ ने काल्हि हमरे हएत। बँकियौता नूपैआ विवाहसँ पहिने लऽ लेब तँ लाभमे रहब। मोहन बाबू विवाहसँ एक दिन पहिने समाद नून बाबूक घर पठौलैन जे हमर एक लाख टाका बँकियाह अछि ओ नूपैआ जुकता करि दिअ तखने बरियाती जाएत नै तँ अहाँ जानू। नून बाबूकेँ समाद सुनिते जेना देहपर बज्जर खसि पड़ल। ओ सोचमे पड़ि गेल। होश सम्हारि मोहन बाबूसँ भेँट कऽ बड़ विनती केलैन। अपन ऐ लेल माथ्थ दिअ। हम बेटीबला छी। बहुत चीज-बौसक ओरियान करए पड़त। तैपर सँ बरियातीक सुआगतमे सेहो बहुत खरच हएत। मुदा मोहन बाबू नून बाबूकेँ एकोटा बात नै सुनलकैन, आ ने आँखिक नोर पोछलकैन। तखने नून बाबू बजला-

> “ठीक, नै मानब तँ अहाँ बरियाती लऽ कऽ आउ, हम दरबज्जेपर विवाहसँ पहिने नूपैआ बरियातीए घरमे जुकता करि देब तखन विवाह करब।”

नून बाबू खेत भरना राखि नूपैआक ओरियान केलैन। बरियाती समैपर आएल। सबहक सुआगत भेल। दरबज्जेपर सबहक सोहेमे एक लाख टाका दुल्हाक पिता- मोहन बाबूकेँ जुकता कऽ देलैन। दुल्हाक परिछन भेल, बरमालाक काज शुरू हएत तखने एकटा नव बात चर्चा भेल जे दुल्हा पहिने दुल्हिनकेँ देखता। परसिन भेल पछाइत ने बरमाला आ सेनूरदान हएत। ऐ बातसँ कन्याँ पक्षमे खलबली मचि गेल आ आक्रोश सेहो बढ़ि गेल। अन्तमे निर्णए भेल जे ठीक छै पहिने कन्याँ देख लेल जाउ। तखने आगूक काज हएत।

दुल्हनि सुचिता तँ पहिनेसँ बरमाला लेल सजल छेली। एकटा कोठरीमे दुल्हाकेँ लोकनियाँ संगे बजौल गेल। ओही कोठरीमे दुल्हनि सुचिता सहेलीक संगे आएल। सुचिता इन्टर पास पूर्णामिक चान सन सुन्नरि। दुल्हा देख कऽ मोने-मोन खुश भेल। किछु गप-सप्प सेहो भेलै। तखने सुचिता बजली-

ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२)  मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

“𑒏𑒲 𑒨𑒾 𑒠𑒳𑒪𑓂𑒯𑒰𑒖𑒲, 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒮𑒲𑒢 𑒦𑒹𑒪𑒾?”

𑒠𑒳𑒪𑓂𑒯𑒰 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒲 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒣𑒲𑒚 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒯𑒿, 𑒏𑒲 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿।”

𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒞𑒳𑒩𑒢𑓂𑒞𑒹 𑒖𑒥𑒰𑒥 𑒠𑒹𑒪𑒏-

“𑒦𑒻 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒣𑒮𑒲𑒢 𑒢𑒻 𑒕𑒲। 𑒞𑒿𑒋 𑒂𑒥 𑒄 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒯𑒧 𑒏𑒐𑒢𑒾 𑒢𑒹 𑒏𑒩𑒥। 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒄 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒋 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒮𑒐𑒲-𑒥𑒯𑒱𑒢𑒣𑒰, 𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒣, 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒳𑒖𑒳𑒩𑓂𑒑 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱 𑒥𑒯𑒳𑒞𑒼 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒮𑒧𑒗𑒹𑒪𑒏𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒏𑒹𑒚𑒰𑒧 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒖𑒱𑒠𑓂𑒠 𑒡𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒪𑒱 𑒖𑒹 𑒌 𑒥𑒩𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒥।”

𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒥𑒩𑒱𑒨𑒰𑒞𑒲-𑒮𑒩𑒱𑒨𑒰𑒞𑒲𑒮𑒿 𑒦𑒩𑒪 𑒕𑒪। 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒪𑒑𑒪𑒹 𑒮𑒢𑒮𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒁𑒑𑒱𑒪𑒑𑓂𑒑𑒲 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒮𑒾𑒮𑒹 𑒑𑒰𑒧 𑒣𑒮𑒻𑒩 𑒑𑒹𑒪। 𑒥𑒯𑒳𑒞𑒼 𑒥𑒳𑒖𑒳𑒩𑓂𑒑 𑒪𑒼𑒏𑒻𑒢 𑒠𑒳𑒪𑓂𑒯𑒢𑒱𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒰-𑒮𑒧𑒗𑒰 𑒏𑓄 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒵𑒜𑓃𑒣𑒩 𑒁𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒪। 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒣𑒴𑒕𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒯𑒪𑒏-

“𑒖𑒐𑒢 𑒠𑒳𑒪𑓂𑒯𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒣 𑒂 𑒮𑒩-𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒢𑒏𑒼𑒣𑒩 𑒥𑒱𑒮𑒫𑒰𑒮 𑒢𑒻 𑒕𑒻𑒢 𑒞𑒿 𑒍 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒥𑒱𑒮𑒫𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒞। 𑒂 𑒯𑒧 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒣𑒩 𑒥𑒱𑒮𑒫𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒥। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒠𑒯𑒹𑒖𑒏 𑒐𑒰𑒞𑒱𑒩 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒂 𑒃𑒖𑓂𑒖𑒞 𑒥𑒹𑒔𑒥𑒰 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒻𑒟 𑒞𑒐𑒢 𑒍 𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒥𑒹𑒔𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒟 𑒏𑒢𑒱। 𑒞𑒿𑒋 𑒯𑒧 𑒥𑒲𑒐 𑒣𑒲𑒥 𑒧𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒁𑒥𑒱𑒮𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒂 𑒠𑒯𑒹𑒖 𑒩𑒴𑒣𑒲 𑒠𑒰𑒢𑒫𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒥। 𑒌𑒮𑒿 𑒢𑒲𑒏 𑒞𑒿 𑒯𑒧 𑒍𑒯𑒹𑒢 𑒠𑒳𑒪𑓂𑒯𑒰 𑒖𑒹 𑒑𑒩𑒲𑒥𑒹 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒢𑒹 𑒯𑒋𑒞, 𑒞𑒢𑒱𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒩𑒥, 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒃𑒖𑓂𑒖𑒞𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒼𑒏 𑒃𑒖𑓂𑒖𑒞 𑒏𑒩𑒞।”

𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒮𑒯𑒹𑒪𑒲 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒏𑒼𑒚𑒪𑒲𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒻𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒱। 𑒠𑒳𑒪𑓂𑒯𑒰 𑒂 𑒪𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒯𑒱 𑒏𑒼𑒚𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒥𑒢𑓂𑒢 𑒏𑓄 𑒞𑒰𑒪𑒰 𑒪𑒑𑒰 𑒂𑒿𑒑𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒱। 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒢𑒻 𑒦𑒹𑒪। 𑒄 𑒐𑒥𑒻𑒩 𑒩𑒰𑒞𑒨𑒱 𑒦𑒩𑒧𑒱 𑒔𑒾𑒞𑒩𑒤𑒰 𑒣𑒮𑒻𑒩 𑒑𑒹𑒪। 𑒣𑓀𑒔𑒻𑒞𑒲𑒏 𑒥𑒻𑒮𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪। 𑒣𑓀𑒔 𑒪𑒼𑒏𑒻𑒢 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒩𑒱𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓀𑒏𑒪𑓂𑒣𑒣𑒩 𑒁𑒛𑒱𑒑 𑒩𑒯𑒪𑒱। 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒠𑒯𑒹𑒖𑒏 𑒪𑒹𑒢-𑒠𑒹𑒢 𑒂 𑒮𑒳𑒂𑒑𑒞𑒏 𑒐𑒩𑓂𑒔 𑒦𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻 𑒍 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒂𑒣𑒮 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒋। 𑒠𑒳𑒪𑓂𑒯𑒢𑒱𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒢𑒴𑒢𑒴 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒪𑒰𑒐 𑒙𑒰𑒏𑒰, 𑒠𑒴 𑒦𑒩𑒱 𑒮𑒼𑒢𑒰, 𑒧𑒼𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒃𑒏𑒪𑒱 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒮𑒳𑒂𑒑𑒞𑒧𑒹 𑒠𑒴 𑒪𑒰𑒐 𑒙𑒰𑒏𑒰 𑒐𑒩𑓂𑒔 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒂𑒣𑒮 𑒏𑓄 𑒠𑒟𑒱 𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒳𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒦𑒹𑒙𑒞𑒻𑒢। 𑒢𑒻 𑒞𑒿 𑒯𑒧 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢𑒏 𑒬𑒩𑒝 𑒪𑒹𑒥 𑒂 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒥𑒰𑒣𑒴𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒯𑒪 𑒏𑒙𑒹𑒥𑒻𑒢।”

𑒮𑒦 𑒣𑓀𑒔𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒥𑒰𑒞 𑒞𑒿 𑒅𑒔𑒱𑒞𑒹 𑒢𑒹 𑒢𑒴𑒢𑒴 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒻𑒟। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒖𑒥𑒩𑒢 𑒖𑒳𑒩𑓂𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒞𑒿 𑒢𑒻।

𑒠𑒳𑒪𑓂𑒯𑒰𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒧𑒼𑒯𑒢𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒕𑒯 𑒪𑒰𑒐 𑒙𑒰𑒏𑒰, 𑒮𑒼𑒢𑒰, 𑒧𑒼𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒃𑒏𑒪𑒱 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒧𑓀𑒑𑒥𑒰 𑒢𑒴𑒢𑒴 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓀𑒔𑒏 𑒥𑒱𑒔𑓂𑒔𑒹𑒧𑒹 𑒂𑒣𑒮 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒢। 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒚𑒪𑒲𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒃𑒪 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒂𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒔𑒼𑒙𑒰𑒋𑒪 𑒏𑒳𑒏𑒳𑒩 𑒢𑒰𑓀𑒑𑒻𑒩 𑒠𑒥𑒾𑒢𑒹 𑒠𑒳𑒥𑒏𑒲 𑒠𑒻𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒰𑒙 𑒣𑒏𑒻𑒛𑓃 𑒮𑒼𑒗𑒹-𑒮𑒼𑒗 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒋 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪।

𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒳𑒩𑒗𑒰𑒋𑒪 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒠𑒹𑒐 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒱-



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“વાવૂળી, શ્રહઁ એક્કો પાર યનિ્ીા નૈ કનૂ। હમ મનુષ્ય સંગે વશ્રિાહ કનવા પઢ઼૭-૭પ્પિ૭ કમ્મો નહ઼ા ાર૭ એકો પાર યનિ્ીા નૈ। એહી પ્યાતિ ને એો હ઼મે૭ હોરણ એક્કો પાર યનિ્ીા નૈ કનૂ।”

શ્રો

ળાતિ ભોળ

શ્રાર શ્રુ૭વાવૂક વેટાક વશ્રિાહક ભોળ શ્રછિ। ગૌશ્રાઁ સભકેં શ્રાશા છે૭ૈન ળે ઈ ભોળ હમનો સભકેં પ્પેવાક શ્રવ઼સૈન ભેટા। કિપક ાઁ એ ભોળકેં સશ્રુ૭ વનેવાક ૭૭ વહ઼ુનો ળાા-વ઼િન્ાક ૭કક સહ્યોગ છે૭ૈન। કિયો ળાગૈન શ્રાનએ ાઁ કિયો સાશ્ર-સુથના કનણ કિયો વનાન-વાસન માળૈ છ૭। ગામક ડોમ વાઁસસઁ વન૭ છટ્ટિટા-પથિયા, ઢકૈસ, ડા૭-દૌના, યડેના વના દે૭ક।

મા૭ શ્રિુ૭ શ્રા શ્રુ૭ક મા૭, કુમહાન વ઼ન્ાન-વ઼ાસન, મહ૭ પોપ્પૈનસઁ માછ માના મિનક મન ઢેન ૭ગૌ૭ક। કોકો કનેગાન શ્રા હ઼૭શ્રાર સભ ભોળક સમગ્ાની વનવૈમે ભાિ૭ છ૭। ભોળમે સહ્યોગ ાઁ સભ ળાાિ ૭ક દ્વ઼ાના ભે૭। મુદા પ્યારક શ્રવ઼સન સભકેં નૈ ભેટૈ૭ન। શ્રોાવે નૈ, કનિકો નગદ ટાકા દે૭ ગે૭ ાઁ કનિકો ૩યાન નહ઼ૈ શ્રા કનિકો સીદહ઼ા ભેટૈ। મુદા ભોળ પ્યારક નોા સભકેં નૈ ભેટૈ।

ભોળક શ્રાયોળક ભઉઁ શ્રુ૭વાવૂ છ૭। મુદા કનવાની ાઁ સભ ળાાિ ૭ક છે૭પ્પિ। કિછુ ૭કક મનમે, ળનિકા સભકેં નોા નૈ દે૭ ગે૭ૈન। હ઼ુનકા સવહ઼ક મનમે ઈહો હોરન ળે કાળ ળપ્પન નૈ છુશ્રાર છૈ ાઁ પાઁામિ વૈસ પ્પે૭પન પાઁા કેના છુવા ળેનૈ।

ભોળ વડ઼ નીકા સમાનો સભ એક-પન-એક ૩ાામ શ્રા સ્વ઼ાદિષ્ટિ વન૭ શ્રછિ ળે પ્પે૭ક શ્રો સભ પ્નશંશા કનૌ નૈ થાકણ। મુદા ળે નૈ પ્પે૭ક શ્રો કહૈ- ળે ભોળ ને પ્યાએવ ારમે પાના મના ળાણ। ભોળ ાઁ સમ્પન્ન ભે૭ મુદા એક ળાયિા-ભોળ ભેને ભોળક વન૭ સમાનો ઢેનક-ઢેન ૩ગૈન ગે૭। શ્રુ૭ વાવૂ સોયએ ૭ગ૭ ળે એહેન મહ઼ગ શ્રા સ્વ઼ાદિષ્ટિ ભોળ્ય-પદાન્થકેં કેના શ્રેકવ। ાપ્પે મનમે એકટા વ઼યિાન શ્રાનો એ૭ૈન। શ્રેકવ નૈ ગનીવ ૭ક, છોટહ઼ા ૭ક સભકેં વળા પ્પુશ્રા દેવ શ્રા વાઁટયિો દેવ। ળઁ સે નૈ કનવ શ્રા શ્રેક દેવ ાઁ કુકુન-ભોળ ભઽ ળાણ।

સોય-વ઼યિાન કનૌ શ્રુ૭ વાવૂ નન્િપ્પએ ૭૭ૈન શ્રા નૌકન- હ઼ગાન્-કેં વળા કહ઼૭પ્પિ-

“ગામપન ળા ગનીવ, છોટહ઼ા સભકેં કહ઼િ દિહો ળે ભોળક સમાન વેસી વઁય૭ શ્રછિ સે શ્રાવિ ૭ઽ ળાઉ।”

हगारू गामपर जा गरीब-छोटहा सभकेँ कहलक मुदा ओ सभ बँचलहा लोकक समान ऊपरसँ स्वीकार कऽ देलक। किछु लोक तँ मुँहपर कहियो देलकै जे काज करबै बेरमे हमरा सभसँ छुबैत ने करै छैथ आ भार बेरमे छुवार छैथ तँ अपन लोक अपने भोथ। बँचलहा बसिया-तेवसिया आ आँठि-कुठि हिन सभ करिए लेत।

हगारू गामपर सँ घुमि आएल, मालिक शूल बाबूसँ बाजल-

"गामक गरीब छोटका सबहक कहब अछि जे हम सभ छोटहा छी तखन लोक केना खाएब, अहाँक लोक छुवा जाएत। तँए लोककेँ उचगारे लोक-ल रहए दियौ आ लोकक समानो ऊपरसँ स्वीकार कऽ देलक।"

हगारूक बात सुनिते शूल बाबूकेँ माथ चकरा गेलैन। चक्कर कटैत हगारूकेँ कहलखिन-

"जाउ राहि-बटोहीकेँ बजा-बजा खुआ दियौ। कौआसँ पैर की उठाएब।"

हगारू दू-तीन गोरेकेँ संग कऽ राहि-बटोहीकेँ बजबए चलि देलक। कहला-सुनला पछाति किछु लोक एबो करए आ किछु नहियोँ आएल। एकटा बुढ़बा बटोहि माथपर सनेसक मोटरीकेँ अँठेने भारने उत्तर अबै छल। समए कम आ दूरो बेसी रहने दुलकी चालमि चलैत आगू बढ़ैत रहैथ। जखन शूल बाबूक घरक कात बाटे जाइ छला कि शूल बाबूक नजैर बुढ़बापर पड़लैन। नजैर पड़िते बुढ़हा बटोहीकेँ अवाज देलखिन। लग अबिते पुछलखिन-

"नाओ की छी, कतए जाएब?"

बुढ़बा बटोहि कहलकैन-

"हमर नाओ सुखन छी, बड़ दूर बेटी लग जा रहल छी।"

शूल बाबू सुखनकेँ लोक खाइक आग्रह केलखिन। तैपर सुखन ठेकारन कऽ बाजल-

"हम तँ बटोहि छी, दूर जाए पड़त। तूमे हम ने तँ जीतल पंच छी आ ने अहाँक जाति-कुटुम छी तखन कोन विचारपर हम अपनेक लोक खाएब।"

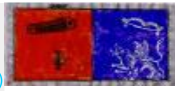
शूल बाबू बाजल-

"बातक बखेड़ामे की पड़ब, आग्रह केलापर तँ लोक केतौ खाइए।"

सुखन कहलकैन-

"हमरा खाइले जे आग्रह कऽ रहल छी से अहाँक गाम-समाजमे लोक खाइले पंच नइए, आकि ढाउ-बाजह केने अछि आकि अहि ढाउ-बाजह केने छी। जँ से नइ अछि तँ की कारण अछि जे बहरबैयाकेँ जीबैक नौतन आएल। जँ गौआँ ने तखन बहरबैया करिए खाएत। हमरा तँ लगैए अहाँ अपनाकेँ ऊँच बुझैत छिए आ दोसरकेँ नीच।"

सुखन बुढ़बाक बात सुनि शूल बाबूकेँ बकोर लागि गेलैन। किछु सुनेबे ने करैन।



શ્રુસન વુઢવા નળૈનસઁ શ્રુઠ વાવૂકેં ઊપનસઁ-નચિયાઁ યનાહિયૈઉના મૌકા પાવાપુનઃ વળઉા-

"શ્રહાઁક મનોભાવ દેપ્પાહિમના ઉઝૈ ળે મનમે ળાનાવિાદક દુન્ગાન્ય શ્રપ્પનો યનાઐછે નઁ નૂપ્પઉ છી નઁ ને પ્પાણવા ળઁ સે ને નહૈન નઁ ળાન-પાનસિં ઊપન ઉઠાગામ-સમાળક સભ વન્ગાકેં નીન દ૬ પ્પિવિની ને, સભ શ્રાનન્દિન હોસ્ણા સવહક પ્નેમ શ્રા ળશ સેહો મેટનિા સભ નઁ પ્નેમ શ્રા ભાવક નૂપ્પઉ હોસ્ય ને કાભાનક નૂપ્પઉ ળપ્પન શ્રપને ઉકકેં નીય વુહૈછથિ નઁ ને ઉકો શ્રહાઁકેં નીય વુહઉકા શ્રપને કહને ળઁ ઉક મડ઼ન હોસ્ણ નઁ સભ મડ઼ે ને કહાસ્વની ળીવકિા ઉઉ ને ઉક શ્રઉગ-શ્રઉગ કાળ કનૈણ મુદાસભ નઁ મનુપ્પે ળાનાભે છી સે ળઁ શ્રાવો ને વુહવે નઁ સાડ઼ામે ળાસ્વેન વૂહાકો કનવે એોક નઁ પ્પિયાઉ નાપ્પૈ પડ઼ન ળહનિ સભ ળાનામિઉાસમાળમે સવહક કાળમે મદૈન કનૈણ નહનિ ળઁ સભ ળાનામિઉાપ્પાનો-પીન, મેઉ-વેવહાન કનવ નપ્પન ને સમાળમે શ્રાપસી પ્નેમ-ભાવ વઢન શ્રહો શ્રભાવક કાનામે ને શ્રાસ યનાસમાળ પછુશ્રાણઉ શ્રછિ"

શ્રૂસન વુઢવાક વાન સુનાહિગાનૂકેં દમાગ ભક્-દે પ્પુળઉ દમાગ પ્પુઉનિ હગાનૂ શ્રૂઠ વાવૂકેં કહઉકૈન-

"માઉકિ હમિકન ડેકનગાન વાન સુના શ્રાસ હમનો શ્રકીઉ-ળ્ગાન ભેઉ ળહનિ નમહન ઘૈઉમે નાન્હટિ છેદ ભેઉાપન સભ પાનાનિસે-નસે યૂઇ ળાસ્ય નહનિ ને ઊઁચ-નીય ળાનાકિ ભેદ ભાવસઁ સમાળક નસ વહા-વહા ભૈથયિા ગેઉ શ્રછિ ળપ્પન નસે ને નપ્પન એક સાઁહ્ પ્પાસ્યે ક૬ કો હણ ળઁ શ્રપને કેઉાસઁ ભોળ હોસ્ય નઁ શ્રપને ઘનમે ભાન-દાઉા શ્રા દૂ-યાનાટ નૂશ્રા-વઘૂશ્રા, વની-હોડ઼ી વના ઉેવ શ્રા એક-દૂ સેન દૂયક સૌળવો દહો પૌડ઼ પનિવાન મઉાપ્પા ઉેવ નપ્પન ળાનાકિ ભોળ ઉક કનિ કનન કચિો પ્પાસ્ય, કચિો મુઁહ નકૈણ"

શ્રૂઠ વાવૂ વળઉા-

"હમ નઁ શ્રપ્પનો યનાભે વુહઉૌ ળે ઉક ળાન-ઉ કનિ મનૈણ સ્વાન્થ સાદ્દિય કનૈઉ શ્રાકાભાળનીનાકિનૈઉ ળાનાકિ પૈયક વીય શ્રૂઁસાહિમહૂઁ દૂનાભ૬ ગેઉૌ"

શ્રૂઠ વાવૂક ભોથયિાણઉ વાન સુના શ્રૂસન વુઢવા કહઉપ્પાન-

"એોક મગાળમાની ળે ળાન-ઉ ઉક કનૈણ શ્રોસ્સઁ કેકના કો પ્નાપ્ન ભેઉૈણ ળાના છોડ઼ા ળઁ માનવ ળાના ઉેઉ એોક કાળ કેને નહનૌ નઁ મહા માનવ વના ગેઉ નહનૌ"

શ્રૂઠ વાવૂ દુનૂ હાથ ળોડ઼ા શ્રૂસન વુઢવાક શ્રાગૂ વાનીનીક સ્વનમે વળઉા-

"વાવા, હમન વુયા ળાનાકિ ભોળમે ઘુસૈન ગેઉ ળે શ્રાવ વુહઉૌ"

"ળપ્પને ળાગી નપ્પને પનાન"

કહા શ્રૂસન વુહવા મોટની ઉ૬ વાદા ભ૬ ગેઉા

શ્રો



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

पानि

आसिन मासक चारिम सप्ताहक समए अछि। बरखाक पानि आ बाढ़िक पानि सेहो थीर भऽ गेल अछि। मुदा चर-चाँचरमे पानि जमल अछि। जइमे खेतहिर सभ पटुआ, सन्नइ, चन्नी, चन्ना काटि-छाड़ि गेड़ैत अछि। पानि गन्हा रहल अछि।

दू गामक बीच अछि तँए चर दूर तक पसरल अछि। बहुत पहिनेहिसँ दुनू गामक लोकक सेवा सेहो करैत बूढ़-पुरानक कहब छैन जे पहिने कोसी अही चर देने बहै छल। पछाति मुँह मारना जेने दोसर दिसि धार घूमि गेल। बरखा आ बाढ़िक समए उनटे कोसीक पानि आबि चरकेँ उपेछाल करि दइए। जखन बाढ़िक पानि घटैए तखन चरोक पानि स्वतः घटि जाइए। चरक पानि किनारि समाढ़सँ करियाएल, तइमे भैँटक फूल कोसो चरि फुल शोभा बढ़ेने रहैए। गैबीच सिल्ली, गागन, ललसर, पनि कौआ इत्यादि अनेको रंगक चिड़ै-चुनमुनीक क्रीड़ा स्थलक संग आराम स्थल सेहो बनल।

एक-दोसर गामक लोक जाइ-अबैत केतए-केतए समाढ़ हटा-हटा बीचमे सिपौर बना पानि टपैत रस्ता बनौने अछि। पानि बिसी रहने नावक साधन सभ अपन-अपन रखने। जे नै रखने अछि ओ भरि डाँड़ भरि जाँघ पानि टपि ए-पारसँ ओइ-पार करैत अछि। बेवस्थो कोसी क्षेत्र-ए बेमुखे अछि। ऐ क्षेत्रक नेता सभ क्षेत्रक विकास तँ करै छथि मुदा अपन विकास कऽ गामसँ दूर शहरमे बड़का फ्लैट बना रहै छैथ। तँ गाम बाढ़ि-पानिमे डुमैत कहि औत।। ई तँ गामबला बुझत जे गाम केकर छी। डीहवासूकेँ आकि बिहरबैयाकेँ। नेतासभ तँ पाँच बरखक पछाति चुनावी महाकुम्भमे मात्र नहाइले अबै छैथ। सभ पुण्यकेँ मोटरी बान्हि लेने चलि जाइ छैथ।

चुनावक समए आएल। नेता सबहक उजैहिया गामे-गाम आबि गेल। क्षेत्रक बोँट बटोरै खातिर ओहि कोसीक चर टपि ऐगल गाम जेबाक छैन। सोचैथ पएरे टपने लोक संघर्षशील नेता बुझत। जइसँ अधिक बोँट हएत।

नेता आ नेताक पीठलगुआ गामक कार्यकर्ता संगे सभ कहियो जाँघ भरि पानि टपि पार हुअ लगल। तहि क्रममे नेताजीकेँ एकटा नमहर पैलहिया जोक धऽ लेलकैन। पार होइते नेताजीक जाँघसँ छरछर खून निकलए लगलैन। छरछर खून बहैत देख नेताजी छटपटा उठल। संगी सभ निहारि देखलक तँ देखैए नमगर जोककेँ, जे खून पीब मोटा गेल अछि।

नेताजी जीवठ बान्हि जोककेँ हाथसँ पकैड़ खीच-तीर कऽ छोड़ैलैन। एक हाथसँ छरछराइत खूनक दाढ़केँ दबने आ दोसर हाथसँ एकटा संगीक लाठीक हूरसँ जोककेँ थोकैच-थोकैच मारए लगल।।

जोक तँ कठजीव होइते अछि। लाठीक हूरसँ नै मरैबल। तमसाएल नेताजीक मुहसँ निकलैन-

“तोरा आर कहियो ने भेटलौ जे हमरे खून पीबैले एलैँ। तोरा खूनू बोकराए मारि दिबौ।”

છટપટાશ઼ ળોક વાળઇ-

"હમહૂઁ ઁ અહીક ળાઁ છી, ળાઁ ળાઁપ઼િ ઇ઼ા ને ળાઇ઼ા અહાઁ ળે એહેન નષ્ઠિ઼ન મઽ હમના મનૈ છી સે ળાઁપ઼િપીન ને કનપ઼િઁ દયા-યનમ અછિ઼ા અપ્પન હમ કોનો અપનાયો ઁ નહિપ઼િં કેઇ઼ અછિ઼ા ઈ ઁ ળાઁકિ સોમાવ઼ છી।"

નેઁાળી ડઁટૈઁ વળઇ઼-

"ઁ ળઇકોટ, અસનયે પાનમિ નહૈવઇ઼ આ હમ શ્રેષ્ઠ મનુષ્ય શ્રઇટમે નહનાહિન, ઁપ્પન ઁ કેના હમન ળાઁ મઽ સકૈ છેં?"

ળોક કુહૈઁ વાળઇ-

"ળહિનિ અહાઁ ળનઁાક પૂન પીવૈ છી ઁહિનિ ને હમહૂઁ પૂને પીઇ઼ અછિ઼ા અહૂઁ પૂનપીવા આ હમહૂઁ પૂનપીવા઼ ઁપ્પન દુનૂ ગોટે ળાઁપ઼િ ને મેઇ઼ા ળાઁકિ સન્ટસ્ટિફિટક યાઇ઼-યઇનસઁ વઢ઼િ કઽ આનો કોનો નમહન પ્નમાણ હોઇ છૈ ળે દેવા એક ઁ પહિનહિસેં અહાઁ સન હમનાપન એોક અઁપિ઼ાયાન કેઇ઼ ળે હમ માગિ પિડા કઽ પાનમિ શનણ નેને છી।"

નેઁાળી આઁખિ઼ ઇ઼ઇ-પીઅન કનૈઁ વળઇ઼-

"ઁ અપન પ્નાણ વઁચવૈઇ ઈ ળુમઇ઼ા હમના સુનવૈ છેં। ઁોના વિનુ માનને હમ નૈ છોડ઼વૈ।"

વાળિ નેઁાળી અનચુન ઇ઼ઠિ઼ ળોકક દેહપન વનસાવએ ઇ઼ાઇ઼।

અચમનૂ મેઇ ળોક વાળઇ-

"અદના સન ગાઇ઼ીપન હમના સન અવ્વઇ ળીવ઼કેં ળાનસઁ માનૈ છી આ અહાઁ ળે ઇ઼પ્પક-ઇ઼પ્પ ળનઁાક પૂન શ્રેષ્ઠ મનુષ્ય મઽ પીવઁિ એઇ઼ આ પીવઁિ છી સે નીક ઇ઼ૌએ઼।"

ળોકક ઈ વાઁ નેઁાળીકેં આનો ઁનઢ઼ દેઇકૈના ઁપ્પને ટુણ્ડસઁ એક ગોટે કહઇકૈન-

"નેઁાળી, ચુન ઇ઼ાવૈક આદેશ દેઇ ળાએ, અપને પૂન વોકનએ ઇ઼ાઁ।"

ચુનક નાઓ સુનઁિ ળોક અપન પ્નાણક મીપ્ય મઁગૈઁ વાળઇ-

"ળેકન આચાન વના અહાઁ અપન ળીવ઼નક યાઁના કનૈ છી સે ઁ હમહૂઁ છીહે। દયા કનૂ! ળાઁપિન દયા કનૂ!"

ઓ



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

हहैती

मुनन आ घट्टन दुनू सहोदर भाँइ छैथ। दुनू भाँइ संग मिलि किसा-घटा कऽ परिवारक भरण-पोषण करै छैथ। बड़ भाय मुनन कमाइमे हुनरगर आ परिश्रमी, मुदा घट्टन कमकोढ़िया आ झंझटिया सोभावक अछि। मुननकेँ दूटा बेटी आ एकटा बेटा छैन। घट्टनकेँ चारिटा बेटी आ तीनटा बेटा अछि। अनपढ़ रहितो संयुक्त परिवारमे मुनन सम-रूपसँ मिलि-जुलि भरण-पोषण करैक परियास करैत रहल अछि। घट्टनक पत्नी चतुर-चालाक। घरक समान आ टाका-पैसाक चोरनी। कोसल कऽ नैहरमे रखै छेली तँए परिवारक प्रगतिक कोनो थाहे-पता ने लगै छल। धाइ-पीबैमे सेहो दनसन हुअ लागल।

एक दिन मुननकेँ पत्नी असगरमे कहलकैन-

“ई परिवार आब सम्हारमे नै चलत। हमरा तीनटा धिया-पुता अछि दू परानी अपने मिलि कुल पाँच गोटे छी, तैयो सभ करियो दिन-राति काज करैत-करैत खिया गेलौं। देखियौ घट्टनकेँ सातटा धिया-पुता आ दू परानी लगा नअ गोटे अछि, तैयो ने कोनो काम-धाम करैए आ उनटे बीख उगलैत रहैए। ई बरदास के करत। तीन भऽ जाउ। आब जनमे नै चलत-बनत आ ने परिवारक सम्हरत बँचत।”

पत्नीकेँ दमसाबैत मुनन बाजल-

“अहाँ नै बुझै छिऐ जन परिवारक महत्ता। खचन काजकेँ बाँटि-बाँटि करब तँ काजो बेसी हएत आ आनो लोक परिवारक संगठन देख सीखबो करत आ डरबो करत। दुखक समैमे एक-दोसरक सहयोगो करत। तीन भेलापर परिवार टुटि कऽ कमजोर भऽ जाइ छै आ समाजमे महैत सेहो घटि जाइ छै।”

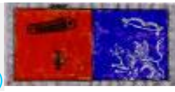
घट्टनक पत्नी बड़ हमेलिया, उनटे कोनो कनारप कऽ खेऽ दियादिनीसँ झगड़ मारि-पीटि केली। जखन घट्टन घर आएल तँ पत्नी उनटे बात बना चेकी-पर-चेकी चढ़बैत पतिकि कान भरि देलक। घट्टन ने आगू देखलक आ ने पाछू, सोहे जा भौजीकेँ मुकियौलक आ बखैन-बखैन गरियौलक।

जखन मुनन घर आएल तँ परिवारक बिगड़ल दशा देख मन मसुआएले मने दलानमे जा पड़ि रहल। एम्हर घट्टन आ हुनक पत्नी घरक समान- बरतन-बासन सभकेँ घरमे तेहिया-तेहिया सैत लेलक। मुनन सभकेँ समझाबैत कहलखिन-

“झगड़ा-झंझट करियो ने करह, मेल-मेयासँ रहह। सभ संगे खा-पीबह।”

मुदा घट्टन बड़ भाय- मुननपर तनि बाजल-

“आब जनमे कोनो काज आ खेनाइ-पीनाइ नै हएत, तीन भऽ अपन-अपन काज करू।”



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

बुढ़ापाक दुख के बुझत?

मोहन काका भोरबेमे जागि, घूर लग बैस चिलममे कंकर बोहि हुक्का गुड़गुड़बै छला। जाड़क मास रातियो पहाड़ सन बनल, ओढ़नपर सूतल-सूतल देह भरिया गेल छेलैन। करसी-गोइठाक तलसल आगि खोरि तापए लगला। जहिना घूरक आगि तलसए, तहिना मोहन कक्काक देहमे लागल आगि सेहो तलसैत रहए। हुक्का पिक तलक लगौन्हैन तँए उकासीपर उकासी हुअ लगलैन। खोखी करैत-करैत देह थरथराए लगलैन। तैयो हुक्कामे सोंट मारि-मारि खो-खो करिते छला आकि तखने पड़ोसिया बेचन उठि कऽ मोहन काका लग आगि तापए आएल।

मोहन काका बेचनकेँ देख थरथराइतो स्वरमे बजला-

"आबह बेचन बैस कऽ आगि तापि लिअह।"

बेचन बाजल-

"हँ काका, एतौ हेन आगियेँ तपैले। अहाँक खोखी सुनि हमरो नीन टुटि गेल। सोचलौं कक्कासँ बहुत दिन भेँट भेला भऽ गेल, भेँटो-घाँट कऽ लेब आ दुख-सुखक गप-सप्प सेहो बतिया लेब।"

किछु सोचैत बेचन पुनः बाजल-

"हौ काका, काकीक चलह-फहल नै देखै छी।"

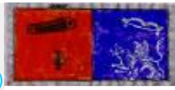
मोहन काका बजला-

"बेचन, तोरासँ लाथ की करब। तूँ तँ पड़ोसी छह तोरे सभपर तँ हमरो आशा अछि। दुख-सुखमे तँ तोहीं सभ ने देख-रेख करै छह।"

बेचन बाजल-

"काका, अहाँक दरशन तँ भाइए जाइए मुदा काकीक दरशन भेला बहुत दिन भऽ गेल तँए आइ दरशन कराए कऽ जाएब।"

मोहन काका बजला-



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

“કાકી ગોહન માસ દનિસઁ વેમાન છઇ। અપ્પૈન ગઁ ઐ વુઢાડીમે અપને હાથ-પએન હ્ડકાવએ પડૈએ। એક ઊટા પાનિયોઁ દેનહિાન નૈ અછિ। એકટા દવાર જોને મૂપ્પઊ પેટે પ્પાએ પડ઼એ, કની એક ઊટા પાનિ ફિનાનસઁ ટટકા જનિ કિ઼ આનિ દિએઇ।”

ઊટા ઊ઼ વેયન ફનાનપન ળા ઊટાકઁ માળિ-ચોર ક઼ એક ઊટા પાનિ કાકા ઊગા નાપ્પિ દેઊક।

મોહન કાકા દવાર પ્પા ક઼ વળઊ-

“કની કાકયિોકઁ હાઊ-યાઊ દેપ્પ ઊહક, વેયના એકટા દવારયો ળનુ સડઊ છે, નૈ હૈ ગઁ સેહો કની આનિ દિહિકા।”

વેયન વાળઊ-

“સે ગઁ હમ આનિ દેવ કાકા, મુદા એોક કષ્ટ ળે કાટૈ છઇ સે વેટા-પુગોહુકઁ કછિુ દનિ ઊઊ વળા ઊવહ સે નર?”

મોહન કાકા સોગાએઊ મને વળઊ-

“વેયન ગૂઁ ગઁ ળનૈ છહક ળે ઐ રકઊૈગવા મહેશક પ્પાગનિ કોન-કોન કનમ ને કેઊૈ। કેગોક દુપ્પ કાટિ પિઢેઊૈ-ઊપ્પિઊૈ। ળન-મળદુની કનૈગ-કનૈગ હાથ-પએનમે ળે ડેઊ-પન-ડેઊ પડ઼િગેઊ સે અપ્પની યનિ ને મેટાએઊ હેના સોચઊૈ ળે દુપ્પો કાટિ વેટાકઁ પઢા-ઊપ્પિા દર છી, કોનો નોકની કનગ ગઁ હમનો વુઢાડીમે સુપ્પ હએગ। વેટાક કમારસઁ ળનિગીક આગૂક દનિ નીકસઁ કટગ। મુદા ઉનટે જ઼ ગેઊ।”

વેયન વાળઊ-

“એના કપિ જ઼ ગેઊહ, કાકા? ળપ્પૈન સપેગા નોપવ ગઁ કઊકગયિા કપિ જ઼ ળાએગ?”

મોહન કાકા વળઊ-

“ગાછપન વસિવાસ અછિ ળે આ અપન ગુાાા-યનમકઁ સોઊહનની નૈ વદઊૈએ મુદા મનુપ્પકઁ વદઊૈમે ગઁ કોનો સમૈએ ને ઊગૈ છૈ। મહેશકઁ કહૈ છી ગઁ કહૈએ છુટ્ટીએ ને મઊિએ। પુગોહુ ગેહેન અઁઠઊિહિ અછિ ળે ડીન-પન-ડીન વૈસવે ને કનૈ છૈ। ળઁ કહયિો છુટ્ટી હેવો કનૈ છૈ ગઁ નૈહએમે વગિવૈએ। હમના કે દેપ્પૈએ। હમ ળેહેન કેઊૈ સે જોગિ નિહઊ છી, એહેન કષ્ટ ગઁ જગવાન સાગ-ઘન દુશ્મનોકઁ નૈ દેથુના।”

વેયન વાળઊ-

“હૈ કાકા, વેટા-પુગોહુકઁ યએહ યનમ વનૈએ?”

મોહન કાકા વળઊ-

“વેયન વૌઆ, આવ વેસી નૈ પુછહ, અગ્મા પ્પંગહૈન નહઊ અછિ હમ ળેહેન પ્પાયનિે પ્પુનઊૈ ળે મુહેઁ-જને અપને પ્પસિ પડ઼ઊૈ। હૈ વેયન, સમાળસઁ વઢિ કિ઼ કયિો ને હએગ। ગીગોમે સમાળ આ મુરઊમે સમાળ। ળનિગી જનિ ગઁ વેટે-ઊ સન કછિ કેઊૈ મુદા આવ પયગાર છી, ળે સમાળ-ઊ કછિુ ને કેઊૈ।”



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मोहन कक्काक बात सुनि बेचन बाजल-

“से तँ काका तूँ ठीके कहै छहक, तोरा तँ एकेटा बेटा-पुतोहु छल, जे नै करै छह, मुदा नवकिशनकेँ देखहक जे दूटा बेटा छैन, दुनू अधिकारीक पदपर नोकरी करै छैन। ओहो दुनू ठाँइ माए-बापकेँ घुमियोँ कऽ ने तकै छैन। नवकिशनक पत्नीकेँ पोताक मुँह देखैले मन लगले रहलैन आ मरि गेल। तीन दिन धरि इलाज घरेमे बेटा-पुतोहुक आशामे पड़ल रहल मुदा दुनू बेटा माएकेँ आगियो दइले ने एलै। तखन नवकिशनक भतीजा बुढ़ियाकेँ आगि दऽ अन्तिम संस्कार केलकै। कहु काका के अपन भेल? जखैन पढ़ि-लिखि कऽ लोक एक तरहक विकास केलकै तँ दोसर दिसि अपन करतबकेँ बिसैर गेल। लोको सभ तँ बेटा-बेटीकेँ ज्ञान-ले थोड़े पढ़बैए, पढ़बैए नोकरी खातिर। जे नोकरी करत ओ माए-बापकेँ की देखत। ओ तँ अपने गुलाम रहैए। लोको तँ अपने बेगरते स्वार्थमे आन्हर बनल अछि।”

गप-सप्प करैत दुनू बेकतीक मोन दुखा गेल। थोड़े कालक पछाति बेचन फेर बाजल-

“ऐसँ नीक तँ मुनर अछि, तीनटा बेटा-पुतोहु छै आ दर्जन भरि पोता-पोती। एहेन सम्हर परिवार रहितो ने मुनर आ ने ओकर बेटा सभ कहियो कमाइले परदेश गेल। नीढ़ो-दाहीमे सेहो अपने गाम-समाजमे जन-मजदूरी कऽ एक नम्मर जिनगी जीबैए। तीनू बेटा कोलहुक बरद जकाँ दिन-राति परिश्रम करैए आ अपन माए-बापकेँ तरहत्थीपर रखने अछि। कनिको मन खराब होइ छै तँ बेटा सभ कन्हेपर लादि कऽ डाक्टर ऐठाम इलाज करबए लऽ जाइए। देखबहक तँ लगतह मुनरक बेटा सभ ऐ युगक श्रवण कुमार छी। आब तोहीं कहह जे पढ़लाहा परिवारमे बुजुर्गक सेवा-सम्मान होइ छै कि बिनु पढ़लाहा परिवारकमे। हमरा तँ लगैए जखैन पढ़लाहा परिवारक ई हाल छै तँ आगू समाजमे बड़-बुजुर्गक समस्या दिनो-दिन बढ़बे करतै। जे पढ़ियो कऽ अपन माए-बापकेँ नै भेलै तँ ओ समाज-ले की करत! ”

बेचनक बात सुनि मोहन काकाकेँ मुँहक बोल जेना बन्नि गेलैन किछु ने बाजि हेला। बेचन काकीसँ भेँट कऽ दवाइयक पुर्जा जेबीमे रखि विदा भऽ गेल।

ओ

बिलाइ रस्ता कटलक

बहु-दिनक पछाति एकठाम मैथिली कथा गोष्ठी भऽ रहल छल। दूर-दूरसँ साहित्य-प्रेमी श्रोता, कथाकार आ समीक्षक लोकैन आएल छल। गोष्ठीक आयोजन-समैपर दीप प्रज्वलित करि विधिवत् शुभारम्भ भेल। समैपर दीप

प्रारम्भहि क' विभिन्न गोष्ठीक शुभारम्भ करए गेल। सत्रक अंतमे समीक्षक लोकैन पठित पाठ कथापर टिप्पणी करैत रहल।

ई सत्र चलिते आ तेसर सत्रक आरम्भमे आनन्द बाबू कथा वाचन शुरू केलैन। कथाक शीर्षक छेलैन- 'अशुभ यात्रा'। कथाक केन्द्रीय भाव छेलै जे बिलाइ रस्ता काटि दियए यात्राकेँ अशुभ बना दैत, जइसँ दुर्घटना भ' गेल। बाल-बाल बचलौं। ऐ तरहेँ कथा वाचन होइत सत्रक अन्तमे समीक्षा शुरू भेल। प्रोफेसर अमरजी कथाक चर्चा करैत कहल-

"सहीमे शुभ यात्राक समए जखन बनतुहानीमे लोक बढ़ि होइए तखन जौं बिलाइ रस्ता काटि दिअए तँ बुझू जे यात्रा निश्चित रूपसँ अशुभ भ' जाइए। घटना दुर्घटना तँ होबे करत।"

उदाहरण दैत पुनः कहल-

"एकबेर कारसँ सात गोरे हम-सब धनदेवीमे जाइ छेलौं आकि बीचेमे एकटा बिलाइ रस्ता काटि भागि गेल। ड्राइवर गाड़ी रोकि गाड़ीकेँ तीन डेग पाछू केलक आ सड़कपर थूक थूका क' आगू बढ़ल। कनिये कालक पछाइत गाड़ीक पहिया खुलि गेल आ गाड़ीक दुर्घटना भ' गेल। जइमे तीन गोरेक हाड़-पाँजर टुटल आ तीन गोरेकेँ कपार फूटि गेल। ड्राइवरक एकटा पएर कटि गेल।"

दोसर समीक्षक कशीश बाबू कहल-

"से तँ ठीके होइए। एक बेर हमहूँ बेटीकेँ परीक्षा दियबैले मोटर साइकिलसँ जाइ छेलौं कि बिलाइ रस्ता काटि देलक। मुदा हमरा जरूरी जेबाक रहए कारण तँ समए कम छेलै। आगू बढ़ैत गेलौं। कनिये दूर जा मोटर साइकिल चक्का अबाज क' गेल आ हम दुनू गोरे सड़केपर खसि पड़लौं। टाँग-हाथ टुटि गेल। बेटी परीक्षा की देत, अस्पतालमे भर्ती हुअ पड़लै।"

तेसर समीक्षक सेहो सहमति जनबैत कहल-

"हँ, यौ ई बड़ागड़बर आ अशुभ होइए जखैन बिलाइ रस्ता काटि दइए। ई हमरो अनुभव अछि। एक बेर हमहूँ ऐ चक्करमे पड़ि गेल रही। कहुना बँचैत-बँचैत बँचलौं बुझू जे माए खड़ौतिया केने रहए।"

समीक्षा होइते रहै मुदा कनिये कथाकार आ समीक्षक लोकैनकेँ अनरगल-अनसोहाँत आ अनोन-बिसनोन लगलैन। कहि बनि। मतउब समीक्षक लोकैन विषयसँ बोहिया रहल छैन! बनि मतउबक तँ पकड़ने जा रहल अछि। एतेक छोट गपकेँ तिलक-ताड़ बनौने जा रहल छैथ जे एक छोट जानवरक पाछू पड़ि क' मनुष्य सन विवेकी प्राणी पड़ि गेल छैथ। हमरा तँ बुझि पड़ैए जे ई कथा गोष्ठी पढ़ा-लिखाक धरबा-दुअरबा खेल तँ ने भ' गेल। आकि कोनो साजिश रचल गेल। ओहेड़ा-ओहेड़ा बाजि रहल छैथ। मुदा समस्या अछि जे एतेक पैघ विद्वान समीक्षक सभक मुँहपर जवाब के देतैन? जखन जवाब देनिहार जौं सरकारी नौकरी करैबला रहत तँ चक्रव्यूहमे फँसा लेत जेना। जौं कही प्राइवेटमे नौकरी करैत रहत तँ कान पकैड़ हटबा देत। जौं कही अखबार, पत्रिका वा रेडियो-बुकपर किछु टिप्पणी करत तँ धमकीपर धमकी पड़ए लागत। तँए बाजबसँ चुप्पे भला बुझै छल।



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

ñहि वयिमे सुमन वावूकें नै नहब गेबैन। ओ ससैन-सहैट क॰ बगमे ळा मैककें बपैक मुँहसँ सटा क॰ वळब-

"दुनियाँमे એોक घटना-दुर्घटना दनि-नाñ होइए की ñकन कानाम वबिइए नस्ñा कटने नहै छै? हळानो-हळान कबि-मीटनक सड़क-मार्ग, जेब मार्ग यातायाñ बेब वनब अछि, ñैपन हळानो ळानवन सन नस्ñा कटैए अथवा गाड़ीसँ टकना क॰ मनि ळाइए, ñकन ने कोनो यर्चा आ ने सनोकान बेक वुहैए मुदा वबिइ सन छोट ळानवनपन ळे એोक पनहान आ अत्यायान होइए से कएि? की वबिइकें ळीवैक अयकिान नै छै। ळौं नहि अछि ñँ बेक वबिइकें मानवियनीपन सँ उसनन कएि ने क॰ दइ छी। की उत्ñनांयबमे ळे એोक पनाक़ñकि हादसा जेबै ñँ से वबिइयेक कानाम। पंळावमे एकटा वस नहनमे गवि गेब छेबै, वसमे सवान सन बेक डूमि कि॰ मनि गेब, की वबिइए नस्ñा कटने छेबै? वहिानमे सहनसा बगा यमैना स्टेशनपन जेबसँ कटि वुहुनो बेक मनि गेब ñकनो वबिइए नस्ñा कटने छेबै? ळौं सहीमे वबिइक यबñे घटना होइ छै ñँ सनटा आनोप वबिइपन कएि ने बगौ छै।"

समीक्षाकें आगू वढ़वैñ मामकिान्ñ वावू वळब-

"आइ एक्कैसम सदीमे दुनियाँ એोक आगू वढ़ि गेब अछि। मुदा मथिबिंयबमे बेकक सोयव कएि એोक पछुआएब अछि ळे अपन गबñीकें सुयान नै कनैए आ वबिइ नस्ñा काटि दइ छै? ñैपन वर्गुबवा-यपिान बगेने नहै छैथ। आइक दनि अन्हनाकें वज्ञािसमे वसिवास होइ छै, मुदा आँप्पविबा कएि अंय-वसिवासमे ऍंसि सिनकें ऍंसा नहब छैथ। એहेन अंय-वसिवासमे ऍंसब बेक केना ळ्ञानी आ अळ्ञानीक स्नेमीकें स्रुटौñा? ñँए ने मथिबिक वज्ञािसमे अप्पनो यनि वबिइ नस्ñा कटने अछि।"

मामकिान्ñ वावूक वयिान सुनि सन समीक्षक सोयमे पड़ि गेब। ñप्पने गोष्ठीक अध्यक्ष महोदय मोळनावकाशक घोषामा केबैन।

ओ

छुñहन

पंयू वावा गामक गनीव वेकñी छैथ। समाळक पैघ बेकक सामने दवब छैथ, माने गामक माबकि-मुप्पतियािन सन हनिका ñनाळूक पासवो वनवैन महñ नइ दइ छैन। गाममे वेसी यनकि बेकक यब-यबñी नहने गनीव केहनो कावबि नहए मुदा वुड़विके होइñ अछि। मुदा गनीव नहिñो पंयू वावा अपन ळनिगीकें એोक सोद्गेने आ सनब वनेने छैथ ळे वाहनी ह्वाँट-वहिड़किं



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

કોનો પનવાહે ને કનૈ છૈથ। પનવિ઼ાનો કનૌઆ આ સમંગાન નહને કયિો કેકનો અવ્વે-નવ્વેમે ને નહૈ છૈથ। વૂઢ-પુનાન નહિતિ હુનક સોય પુનાન, કવકિ઼ોડિ઼[1] નૈ છૈન। નવ વ઼યિાન સંગે સમાળસેવી આ ળનહતિ કાળમે સેહો નૂયાં નિપ્પૈવઉ ઊક છૈથ પંયૂ વાવા।

સનિૂઆ પાવ઼ૈન ઉગાયિાએઉ અછિ। સન કયિો પાવ઼ૈનક આનયિ઼ાનમે ઉગાઉ અછિ। પંયૂ વાવા સનિૂઆ મેઉમે સન સાઉ આહન યીળ-વ઼ીસ કીનૈ છૈથ ળે પનવિ઼ાનમે સવહક ઉપયોગી હોઇ। અહી ગુન-ધુનમે પંયૂ વાવા ઉગાઉ છઉ। ગામક સટઉ નાનીગઢ઼ી પનીપન સનિૂઆ મેઉ તીન-દનિ ઉગૈઇ આ઼ઇ મેઉમે ગામક ળનિગીસઁ ળુડઉ ળનૂનક સન યીળ વ઼ીસ વકિાઇ કસિાનક હન, હનીસ, ઉગૈન, પાઉ, યૌકી, પઉંગ, હઁસુઆ, પ્પુનપીસઁ ઉઽ કઽ કુમ્હાનક કુમ્હનૌટી માટકિ ગઢ઼ઉ વનતન વાસન-કુસન, વયુયા-વેદૂક પ્પિૈનાક સંગ સવ તનહક દોકાન હાટો-વળાનસઁ વેસી સળઉ નહૈઇ।

પંયૂ વાવાક મનમે ઉપકઉ- અહુના યૈત-વૈશાપ્પક નૌદક સૂપ્પઉ આ આવામે પકઉ માટકિ વનતન-વાસન પકગાન નૂનગાન આ વૌકાન હોઇત મેઉમે ઐવેન પાનિ નિમૈઉ ઘૈઉ આ અયાન નપ્પૈઉ કનાયિ઼ા નંગાક મોહના હઁપના ઉગાઉ કીનવ। ળેકન પ્પગતા પનવિ઼ાનમે ઐછે। ઘૈઉ કીનૈ કાઉ પોતા પુછઉકૈન-

"દાદા, ળપ્પન પાનિ નિમૈઉ ઘનમે દૂટા તમઘૈઉ ઐછે તપ્પન માટકિ ઘૈઉ કી હએત?"

પંયૂ વાવા પોતાકેં કહઉપ્પિ-

"વૌઆ, તૂં અપ્પની નૈ વુહવીહી। માટકિ ઘૈઉક પાનકિ ળે મહત મનુપ્પક ળનિગીમે અછિ સે કોનો આન વનતનક પાનકિ નૈ હોઇત। તૂમે ગનમી સમૈમે તઁ અમૃત માનઉ ળાઇત।"

સાઉ ને ઉગાઉ, સાત-આઠ માસક પછાઇત ળાડ઼ક સમૈમે મોહન વાવૂક વડ઼ માય યનૂદૂ વાવૂ સ્વર્ગવાસ મઽ ગેઉ। હુનકા દૂ વનપ્પ પહિને ઉકવા માનિ દેને છઉ। નોગસઁ નોગ ઊથ મઽ ગેઉ છઉ। શનીનમે પ્પાઊ કપેટા વઁયાં ગેઉ નહૈન।

મૃત્યુ મેને પનવિ઼ાનક ઊકકેં કોનો શોક-સન્તાપ તઁ નૈ મેઉ। પનવિ઼ાનમે તીનટા વેટી છૈન ળે સશ્રિાન-મઉઢેનવા, એકપઠિયિ઼ા તનાઊપની અછિ આ દૂટા છોટ-છોટ વેટા પત્નીક માથપન માન છોડ઼િ ગેઉ। સે પૈઘ સમસ્યા મઽ ગેઉ। તૈપન સઁ શ્નાદ્ધ-કન્મ આ મોળ-માતક પ્પન્યાક યન્તિ। સેહો। છુતુક મેને કેશકટ્ટા દયિાદ સન માટકિ વાસન-છુતહન, ઘૈઉ, તૌઉ, પતઊ, કનહી, પ્પાપૈડ઼ સમટા ઉઠા કઽ વઁસવટ્ટિમે સેક આએઉ। મુદા પંયૂ વાવા દયિાદ નહિતિ અપન ઘનક માટકિ વનતન-વાસન નૈ સેકઊન।

ઘનક ળનળિાતસિઁ ઉઽ કઽ આનો પનવિ઼ાનક ળનળિાતિ સન કનસુસકી કનએ ઉગાઊ।

"દૂ દનિ વતિયિ઼ો ગેઉ હેન મુદા પંયૂ વાવક અઁગનામે ઘૈઉયીપન ઘૈઉ અપ્પનો તઁ ઐછે! આહી ઘૈઉક પાનિ પીવ નહઉ છૈથ।"

કનસુસકી વઢ઼ૈત-વઢ઼ૈત સૌસે સમાળમે પસૈન ગેઉ।

છૌન-હઁપ્પી માને તેનાતકિ પછાઇત સમાળક સમ્મત-સઉહ ઉઉ વૈસાન વૈસઉ। તઇમે પંયૂ વાવાપન સન કયિો કનપ્પડ઼ઉ નહ્વે કનએ। ગામક દેવાન- વળઉ-



“छुतुक लेल घैल-छुतहर रखैत एक गोत-नेवालक परम्परा अपना समाजमे पहिने छल आ अखनो अछि, तखन पंचू बाबा की करि सकैथ?”

पंचू बाबा ठाढ़ होइत बजला-

“छुतुक माटियो बरतनमे करि लगत, तखन तँ धातुओक बरतन नै करि सकल जाइए सभ तँ बरतने-बासन नै छी। जखन बरतनक ग्राम-घरमे छुतुक लेल कोनो परिवर्तने नै होइए तखन करि सकैत देवा आखिर की कारणसँ माटियो बरतनकेँ छुतहर मानब आ रखैत देब? एेसे ओकर कोन दोष जे ओकरा एहेन सजा देल जाइए। जखन जनूर नहिए तँ गोसाँइ घरसँ लऽ कऽ पूजा-पाठ, देव घरमक काजमे माटिक बरतनकेँ शुद्ध शुभ मानल जाइ छी आ अन्य-बसिवामे पड़ि गेलाँगेमे ओकरा रखै छी, से केहेन उचित भेल?”

पंचू बाबाक बात सुनि सभ दकियानूसी विरोध करैत बाजल-

“अहाँ समाजकेँ उल्लंघन केलिऐ, अहाँ छुतहरक परिपाटी छी! अहाँ अछोप छी तँए अहाँ दकियानूसी आ समाजसँ दूर रहू आ अपने आगिये-पानियेँ निमाहु करू।”

ई गप सुनि पकैड़ समाजक आनो पंच सभ सुनि आनो बरगर बना देलक। कुकर्मीक करैत सभ कहियो बाजए लागल-

“पंचू बाबा जाबे जुरमिाना समाजमे नै देता ताबे बाड़ल रहता। समाजमे हुनका संग हुक्का-पीअब सेहो बन्न रहता।”

पंचू बाबा हमितगर छथि, हारि नै मानथिन। सही कर्मकेँ धरम बुझै छैथ। ओ ने धर्माधर्म आ ने बटिन्डी छैथ। असगरे समाजक सामने अरि गेला आ गरजैत बजला-

“हम कोनो चोर आ हत्यारा नै छी जे अहाँ सबहक सामने सजि हूका माथी मांगि लेबा सभ कहियो माफि पहने श्रद्ध-कर्मसँ नीपिट लिअ तखन हम शरहाबाद सभा-पंच आ जवानी-पंचक बीच पंचैती देबा जे फैसला हएत से मानब।”

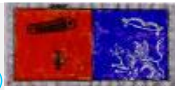
समाजक देमानकेँ बाबाक बात जँचल। ओ आगू पंचैतीक निर्णए दऽ उठि गेला।

पंचू बाबा घर दसि बढ़ि गेला मुदा मनमे खुद्बुदी उठए लगलैन। समाज तँ समाजे छी कखनो प्रबल होइए तँ कखनो दयावान सेहो होइए। मुदा रोर मनमे भेलैन- की हएत तेकर ठेकान अखैनियेँ करब से नीक नै हएत। ई तँ सत्य छी जे सत्यक विजय सदखिन होइत आएल आ हेबो करत से विश्वास तँ मनमे एेछे।

एम्हर दकियानू सबहक मन टुटल, बुझिार केलक जे पहिने अगुआएल काज तइ सभसँ नीपिन भऽ जाइ छी तखन पंचैती चैनसँ हएत।

पंचू बाबा समाजसँ अलगा तँ कऽ देलैन मुदा मन घुघुर-पुघुर करए लगलैन। एक मन कहलकैन-

“ठीक सबहक कहब छै जे पहिने ने पंच-परमेश्वर होइ छल, मुदा अखुनका पंच तँ घुसेश्वर होइए। एक दिशि समाज उलैट पड़ल अछि आ दोसर दसि हम असगरे राम टेकने छी। तखन पंचैती कोन करोट लेत से तँ महेश्वरे ने कहता।”



દોસર મન કહલકૈન-

"જહિયા જે હેતૈ સે હેતૈ, તરૂઉ અપ્પૈન કહિ મગજમારી કરવા જખન ઉપ્પરાયિમે મુઁહ દેને છી તઁ સમાડક કેતેક ડર કરવા।"

શ્રાદ્ધ-કર્મ આ ભોજ-ભાત સમ્પન્ન ભેલા પછાતિ પંચૂ બાબાક દરબજ્જાપર સમાજકિ બૈસાર બૈસલા જઇમે સભ તરહક પંચ, જવારી-પંચ આ સમાજક બારહો-વર્ણક મુખ્ય પંચ બૈસલ છલા। પંચૈતીમે તર્ક-વિતર્ક શુરૂ ભેલા બહસા-બહસી હોઇત-હોઇત સભા-પંચમે આ જવારી-પંચમે મતભેદ ભેલ આ સમહર પેચ ફઁસિ ભાત-પીટક માહૌલ બનલા મુદા બઁચલા સભા પરહક પંચક કહબ ભેલ જે પંચૂબાબા સમાજક બાત કહિ ને માનલૈન, તેકર જુરમાના દણ્ડ પડ઼તૈના મુદા જવારી-પંચક કહબ રહૈન જે અદની સન બાત-લે જુરમાના કહિ દેતા।

પંચક બીચ એક-મત બનબે ને કરએ, બેર-બેર ધક્કમ-ધુક્કા હોઇત રહલા તખન પંચૂ બાબા હાથ જોડ઼િ પંચ-ભગવાનસઁ વિનીત સ્વરમે બજલા-

"હમરા ખાતિર કિયો મારા-પીટ નૈ કરૂ। મુદ્દા અછિ, છુતહરા તરૂઉ અપનામે કહિ લડ઼િ-ઝગડ઼ મરવા હમ છુતહરકેઁ અહી સબહક બીચ રાખ્ખિ દઇ છી। અપને સભ મર્જિ માઁગિ-શ્રોતિ દિયૌ આકિ શ્રેરસઁ કોનો વિચાર કરિયૌ।"

બજૈત પંચૂ બાબા અઁગનાસઁ છુતહર આનિ પંચક બીચ રાખ્ખિ દેલખિન। પંચમે સભ કવિકાઠીએ તઁ નહિયેં છલા કનિકો મતિ-સુમતિ તઁ કનિકો કુમતિ સેહો હોઇએ।

કે પંચ ઈ છુતહરકેઁ માઁગત-શ્રોતત? ઈ એકટા પ્રશ્ન બનિ ઠાઢ઼ ભેલા સભ ચુપ કિયો ને કિછુ બાજૈથ।

સભકેઁ ચુપ દેખ્ખ છુતહર દીન-ભાવસઁ બાજલ-

"કની હમરાપર વિચાર કરૂ જે હમર કી કસૂર અછિ ને હમ કનિકો કિછુ વિગાડ઼ને છી આ ને કનિકો સાતેને છી। હમ તઁ સદખિન અહાઁ સબહક સેવામે આદિયે કાલસઁ લાગલ રહલૌ આ અખનો કરૈત તૈયાર છી। તખન ભરલ સભામે હમર રજ્જત ઉતારિ હિચ્યા કરૈત કહિ ઉતારૂ છી?"

છુતહરક બાત સુનિ સભ પંચકેઁ વુકૌર લાગિ ગેલૈના કનિકો કિછુ ફુરબે ને કરૈના અવસર દેખ્ખ છુતહર શ્રેર બાજલ-

"હમ અપ્પૈન ચુપ નૈ રહબ, હમ ઔર બાજબા જખન પૂજા-પાઠ, હોમ-જાપ આદિ જિનમસઁ લડ કડ મરમ-કરમ ધરાયિ સંગ દઇ છી। સભ કિયો હમરો માન-સમ્માન દઇ છી, મુદા મરામ દનિ છુતરહ કહિ કહિ બઁસવટ્ટિ, ડબરા આકિ ખ્યિત્તામે શ્રોરિ-માઁગિ કડ શ્રેકૈ છી? કી વરતન-વાસનક રૂપમે સબહક ઘરમે હમહીટા છી? આન-આન વરતનકેઁ કહિ ને છુતહર કહિ શ્રેકૈ છી? જઇ દનિ આન કોનો વરતનક જનમ નઇ ભેલ છલ તહિ દનિસઁ હમ અહાઁ સબહક રજ્જત રખ્ખૌ આ આઇ અહાઁ સભ છોટહા વુઝૈ છી! ઈ અવગુણ તઁ હમરામે નૈ અછિ જે કનિકો સંગ ઊઁચ-નીચક ભેદ કેને હોઇ કનિકો દલિત આ કનિકો મહાદલિત વુઝને હોઇ, કનિકો છૂત આ કનિકો અછૂત વુઝને હોઇ। એ તરહક બેવહાર હમ ને આઇ ધરિ કનિકો સંગ કેલૌ આ ને ભવિસમે કરવા એકબેર આઁખ્ખિ ઉઠા કડ દેખ્ખિયૌ અહાઁ સભ અપના સમાજમે જે કેહેન-કેહેન કુકર્મી આ અત્યાચારીકેઁ સ્થાન દેને છથિ।

करि हमरा सभ निर्दोषकेँ छुतहर कहि दियौ करै छी? तैयो हमरा मनमे अहाँ सबहक प्रति कोनो द्वेष नै मुदा अहाँ सभकेँ हमरा प्रति मिनतोग करिए? तेकर वियोग तँ अहीं सभकेँ ने करए पड़त।"

ओ

मोछक लड़ाइ

दुनूकेँ अपन धतार-लतार हरियरी देख मन उमकल। मन की उमकल, अपन ऐतिहासिक घमण्ड छेलै जे हम बड़ गुणकारी आ उपकारी छी। हमरासँ पैघ पवित्र शुभ कियो ने!

पोरे-पोर गोड़ा रोपने धरतीसँ सटि कियनो करोड़ौ छोड़ैत तँ कप्पनो सीरकेँ लालसँ झूमकिँ जलियाह बनबैत अपन लहकी लहलहाइत जिनगी आ वंशजकेँ धरतीपर पसारि राज करैत जे अमरत्व प्राप्त केने छी, तैपर घमण्ड करिए ने करब?

घमण्डक निशाँमे मातल दुनू बड़बड़ाइत बाजल-

"हम अमृत पीब अमर छी। औषधीय गुणसँ गुणवान छी, केतेक जानवरक भोजन बनि पेट भरै छी। धरतीकेँ वैद्यमे सेहो मददगार छी। मनुष्योकेँ पूजा-पाठसँ लऽ कऽ सभ शुभ काजमे काज अबै छी। बेटियोक विदाइ बेर खोंइछमे जा एक गामसँ दोसर गाममे परिवारकेँ हरियरी दइ छी। कियो एकटा-दूटा काज करैए तँ घमण्डसँ घमण्डी बनि जाइए आ हम तँ सहजे दिन-राति सबहक काजो करै छी आ उपकारो। तखन घमण्ड करिए ने करब।"

दुनूकि घमण्ड आ बढ़ल-चढ़ल बोली सुनि पड़ोसी अमरलत्तीकेँ अनसोहाँत लागल। ओ हुलकी दऽ टोकारा दैत बाजल-

"सभ दिन तूँ बताहे बनल रहबह। कहै छहक हम बड़ पैघ छी, की पैघक यएह लक्षण होइए। गाओ दायवती आ देह उघारे! अपन बड़ाइ जे अपने मुहेँ करै छहक से की शोभा दइ छह? जखन दोसराक मुहेँ सुनबहक से ने नीक होइ।"

टोका-चाली होइत रगड़ासँ झगड़ामे बदैल गेल। दुनू एक-दोसरकेँ बप्पैत-बप्पैत गारियैलक।

उलहन दैत दुनू बाजल-



“તૂ અછોપ છેઁ તઁએ ને ઊક ળમીનપ૧ સઁ ભગા દેઉકો ળે ગાછપ૧ શ્ઢઁસી ઉગા ઉટકઉ ૧હે છેઁ। દેહક કોનો ગાતનમે ઊળે ને છી, દોસનેકેઁ ખૂન પીવિ ળીવો કનૈ છેઁ। હમ આતમ-નિભન છી આ તૂઁ પનળીવી છેઁ, તખન હમનાસઁ પૈઘ કેના ભઽ સકૈ છેઁ તૂઁ?”

અમનઉતીકેઁ દુભકિ વાત સુનિ સૌસે દેહમે આગિ નેસ દેઉક। અગિયાએલ મને વાળઉ-

“હમ કોનો નમિોછા છી, તોના એહેન હાલ કનવૌ ળે મન નહતૌ। અનહના દુસએ ઙઠિનાકેઁ। અછોપ તઁ અપને ને છેઁ ળે ઊકો આ ળાનવનો મુડી કાટિ લિ઼ છી આ ઉતયિવો-થુકયિવો કનૈ છી। પૈઘ વનૈએ!”

દુભિ અપન શવદભેદી વાણ યઉવૈત અમનઉતીકેઁ કહઉક-

“હમ પૈઘ આ પવિત્ર કોનો આરસઁ છી। અમૃત પીવ અમન છી પૂળો-પાઠમે સવહક સભિ યઢિ નિક્ષા કનૈ છી। સવહક માન-સમ્માન કનૈ છી આ સભ હમનો કનૈએ। તખન હમ અછોપ કેના ભેલૌ?”

વનહ્માસ્ત્ર યઉવૈત અમનઉતી દુભકિઁ કહઉક-

“યાઉૅન દુસૈએ સૂપકેઁ, મુદા અપને સૌસે દેહ સૂને-સૂન તેકન પનિ તૂઁ કનૈ છેઁ। તોના ઈ નૈ વુહ્લ છૌ ળે હમહૂઁ અમૃત પીને છી, તઁએ ને હમન નાઓ અમનઉતી અછિ। હમ તઁ તોનાસઁ છૂવાર ખાતિ ળમીન છોડ઼િ દોસનકેઁ માથપન વસિ નાળ કનૈ છી। તોનાસઁ વુયિળીવિ સેહો છૌ ળે ઓકને ખૂન યૂસિ-યૂસિ ળીવો કનૈ છી આ વિનુ પનિશ્રિમ કેનહિ મિઉર ખારત નહે છી। હનિ નામ ળપિ સિદમ્પિન હનિયિની દેને નહે છી।”

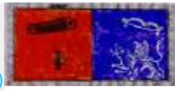
ળેહને નગડ઼ાહ દુભિ તેહને અમનઉતી। દુનૂક વીય હગડ઼ા નહત તખન ને સોહનાએ। મુદા ઈ તઁ વાતક નગડ઼ા છી। તૂમે મોછક ઉડ઼ાર દુનૂક વીય વહુત દિન યનિ સુઉ-સુઉ આ કનાનિ ચિઉત નહઉ। સ્નિછોઠક કોનો સંયોગે ને વનએ મુદા, એકેક વયિાન દુનૂક મનમે નહે ળે પડ઼ોસીસઁ હગડ઼ા નૈ, મેઉ-પ્રેમસઁ નહવાક યાહી। કહિક તઁ સભ કછુ વદઉઉ ળા સકૈએ, મુદા પડ઼ોસી નૈ વદઉઉ ળા સકૈએ। કછુ દિન વિતઉ તખન અમનઉતીકેઁ નશિઁ ટુટઉ। દુભિ લિગ આવિ વાળઉ-

“યૌ, પડ઼ોસીક નાતે તઁ દુખ-સુખક વાત વાળિ સકૈ છી। ઈ મોછક ઉડ઼ાર કેતેક દિન યનિ લિઙવ। ઉઙવ કો, સોયૈત-સોયૈત સોગા-નોગા કઽ યતિાપન યઢિ ળાએવ। તરસઁ નીક નગડ઼ાક સ્નિયિઠ કનૈઉ તેસન પડ઼ોસી ઉગ યઉઉ ળાએ, ળે અપના દુનૂક વાત સુનિ પંચ વનિ દૂયક-દૂય આ પાનકિ-પાનિ વિડ઼ા દેત।”

દુભકિઁ અમનઉતીક કહવ ળઁચઉ, ‘હઁ’મે ‘હઁ’ ભનઉક।

વહિાને ભેને દુભિ આ અમનઉતી તેસન પડ઼ોસી- ખળૂન- ઉગ ળા અપન-અપન દુખના વેના-વેની સુનૌઉક। સભ વાત સુનિ ખળૂન વાળઉ-

“અહઁ દુનૂ ગોનેક વીય કોનો હક- હસ્સિાક ઉડ઼ાર તઁ નૈ છી, ઈ તઁ મોછક ઉડ઼ાર છી। સુસિ વાતક હેઉમે પડ઼િ ળે ‘હમ પૈઘ તઁ હમ પૈઘ’ પનેશાન છી। મુદા, અહઁક પંચૈતી હમ નૈ કનવ, કયિો દોસન કનત। હમ તઁ અપને છોટ-અછોપ છી ળે કાતે-કનોટમે નહિ દિખૈ છી ળે કયિો છોટો કાળ કઽ નમહન વનિ ગેઉ અછિ આ કયિો પૈઘ કાળ કનૈત, નયિાગ કનૈત



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

मनाएल गेल। मुदा पैघ नै बनि सकल। अप्पन जनितेँ हमरा वनस्पति विभागमे बान्ह-छान्ह केने अछि, तखन हम पंचैती केना करब।"

फगुआक बात सुनि दुनू भाँइ अमरलतीकेँ दुखो भेलै आ अचरजो लगलै। दुनू पुछलकै-

"एना किए बजलौं, हमरा दुनूकेँ अहाँ देखिया कऽ लगबए चाहै छी? दुखी भऽ हम दुनू गोरे अहाँ लग एलौं जे हमरा सबहक ओझरीकेँ सोझरा देब आ अहाँ मुँह मोड़ै छी।"

फगुआ बाजल-

"हम अपन बतिआह बात कहब तँ बसिबासे ने हएत। अप्पन अहाँ दुनूक सुनलौं, जँ समए अछि तँ हमरो दुखरा सुनिये लिअ।"

दुनूक गप तँ दुखित मनसँ नहि भेल। फगुआक आँखि नोर सौनक झड़ी सन झहरए लगल। बाजल-

"हम आ नारियल दुनू दियादे छी। दुनू एके गाछमे अन्तर एतबे जे एक सन नारियलकेँ ऊँच स्थान दऽ पूजा करै छैन आ हमरा छोटोमे छोटहा मानैए। जखन कि हम कारो आ तरियागो वेसिये केने छी। हम अपन खून पसीनाकेँ एकक मन भरै छी, अड़ो गुड़ सन मीठ होइए, मुदा नारियल तँ उपरसँ कठोर, भीतरका गुद्दाक सुआद ने तीत आ ने मीठ होइ छै। तखन ओकरा एक पूजापर ऊँचगर आसनपर बैसा महंथ बनौने रहै छै। अहीं दुनू गोरे कहू जे हमरा न्याय आइ धरि कियो केलक?"

फगुआक बात सुनि दुनूकि संग अमरलतियोकेँ ज्ञानक आँखि खुजल। मुड़ी डोलबैत बाजि उठल। फगुआ सेहो बाजल-

"जखैन अपनेमे लड़ि-झगड़ि मरब तँ आनक लड़ाइ के नाककट्टी के टोकत? आइ धरि जे तरियाग आ बलिदान केलिए तेकर तँ न्याय भेटबे ने करए आ अड़ोसि जे मोछक लड़ाइ लड़ै छी तेकर न्याय के करत?"

ओ

केते उचित

જૂષામ વાવૂ ગામક ળમીનદાનક ૨કઊૈતા પુત્ન છૈથ। ગામોમે શ્રા શ્રાનો ગામમે શ્રાદન-સમ્માન હોૈ છૈન। જૂષામ વાવૂ ઊેકપનયિ છૈથ। ૩પકાની સોભાવ છૈન। વેટાક ળન્મ દૈત પત્નીક મૃત્યુ પ્નસવે કાઊમે ભ૬ ગેઊૈન। જૂષામ વાવૂ ૩દાસ શ્રા યનિ્તાિ નહિતો ખેતી-વાડ઼ી નોકન, હનવાહ શ્રા ળન-મળદૂનક સહયોગસઁ કનવૈ છૈથ। વેટાક ઊેઊન-પાઊનપન વ઼િશેષ યિયાન નખૈ છૈથ। તીન પીઢ઼ીસઁ એક-પુનખયિ઼ાહે શ્રાવિ નહઊ છૈન।

જૂષામ વાવૂકેઁ પત્ની નૈ નહને ગામક શુભયનિ્તક ૨ષ્ટ-મતિ્ન સભ યુમૌન ક૬ ઊેવાક સઊાહ દૈત નહૈન-

"વાવૂ સાહૈવ, શ્રસગામે ળનિગી કેના યઊત। ળખન ઘનમે ઘનની નૈ નહત તઁ ઘન બનક સન ભ૬ ળાએત।"

મુદા જૂષામ વાવૂ ઊેકક વાતકેઁ શ્રનઠયિ઼વૈત નહઊ। મનમે હોૈ છૈન ળે યુમૌન કનવ તઁ વેટા- ઊઊ વાવૂ-ક ળનિગીમે સતમાએ વાયા વનત। કહી સતમાએ કુભેઊ કનતૈ શ્રા વેટે ળઁ મનિ ળાએત તખન તઁ વ઼ંશ નાશ હએત।

ળખન ઊઊ વાવૂ પાઁચ વન્ખક ભેઊ તઁ ભોન-સાઁઝ પઢ઼વૈઊ દૂટા ગુનુળીકેઁ ઊગૌઊેન। દૂ વન્ખ યનિ ઘનક શિક્ષા દેઊ વાદ ઊઊ વાવૂકેઁ શહનક મસહૂન સ્કૂઊમે દાખિઊ કનવૈક વ઼િયાન ઊઊ વાવૂક મામાસઁ પુછઊખિ।

ઊઊ વાવૂક મામા ઊખનઊ શહનમે નહિ સિનકાની દશ્તનમે કાળ કનૈ છૈથ। સઊાહ ઊ૬ ઊખનઊ શહનક નામી શ્રંગ્નેળી સ્કૂઊમે ઊઊ વાવૂકેઁ નાશ્રો ઊખિ, ભન્તી ક૬ દેઊખિ।

ઊઊ વાવૂ વચ્ચેસઁ મેઘાવ઼ી, શ્રમ્ટન પ્નથમ શ્નેમીસઁ પાસ ક૬ મેઙિકઊ પનીક્ષામે સશ્ઊતા પૌઊક। પૂમા મેઙિકઊ કાળેળમે પ્નવ઼ેશ ક૬ ઙાક્ટનીક પઢ઼ાૈ શુનૂ કેઊક। યાનિ વન્ખક પછાશ્ત ઙાક્ટન વનિ ઘન શ્રાપસ એઊ। ગામક ગનીવ-ગુનવાક ૨ઊળ મંગનીમે કનએ ઊગઊ। કનકિ દનિમે શ્રો ઊેકપનયિ ભ૬ ગેઊ। ઙાક્ટન ઊઊ વાવૂક ૩દ્દેશ્ય શ્રછિ ળે શહનમે વહુત સુવ઼િયા- સાયન, પૈઘ-પૈઘ ઙાક્ટન શ્રા શ્રસ્પતાઊ શ્રછિ મુદા ગામ-ઘનમે ગનીવક ૨ઊળ ઊેઊ ને સાયન શ્રા ને ઙાક્ટન શ્રછિ તંએ હમ શ્રપન સેવ઼ા ગામ-ઘનમે કનવ।

ચૈત માસ, ગહુમ-કટની યઊિ નહઊ શ્રછિ જૂષામ વાવૂ ળન-મળદુન ઊગા ગહુમક કટની-દૌની કનવૈ છૈથ। તેળ નૌદમે નહને જૂષામ વાવૂક મન પીત ગેઊૈન। વેમાન પડ઼િ ગેઊ। તખન ખેતક ૩પળા-વાડ઼ીક કાળ કે દેખત, તેકન યનિ્તા સેહો હોૈન। મુદા દોસન દનિ ઊઊ વાવૂ પતિાળીકેઁ પનપાશ્રિ કના, વોખાનક દવાૈ ખયિ઼ા ક૬ કહઊકૈન-

"વાવૂળી, શ્રહાઁ શ્રનામ કનૂ હમ ખેતક કાળ દેખએ ળાૈ છી।"

પતિાળી સઊાહ દૈત કહઊખિ-

"એહેન કપનશ્રોના નૌદમે તૂઁ નૈ ળાહ। તોના ને ખેત દેખઊ છહ શ્રા ને કાળક હૂનન છહ।"

ઊઊ વાવૂ પતિાકેઁ કહઊખિ-

"શ્રહાઁ વીમાન છી, શ્રનામ કનૂ। ળખન હમ ઘન શ્રાએઊ છી તઁ ખેતક કાળ દેખવ તખને ને સીખવો કનવ। નોકન- નઘુ-કેઁ સંગ ક૬ ળાએવ। શ્રો સભ કછિુ વતા દેત।"



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

लल बाबू बूढ़ा भेल। ओना, खेतक-मुँह आँखि निहारि देखने छल। मुदा तैयो पहुँचल। गहुम ओसरि देख लल बाबू खुश भेल। रघु कहलकैन-

"डाक्टर साहेब, ई बीस-बघिया प्लौट अपनेक छी। जइमे गहुम अछि। गामक पछबरिया बाधमे दस-बारह बीघा गहुम आरो कटबैक अछि। तीस-पैंतीसटा मजदूर कटनीमे लागल अछि। पाँच-छह दिनमे कटनी आ दू-तीन दिनमे दौनी करा निश्चिन्त भऽ जाएब। किएक त' अपन पछिया हवाक लहकी चलि रहल अछि। ई समए गहुमक कटनी आ दौनी लेल उत्तम अछि। ऐमे जे किसान पछुआएल ओ साल भरि कानत।"

लल बाबू बजला-

"रघु, तूँ बड़ नीक बिचार देलह। सएह करब। मुदा तूँ घर जा, नीकसँ भोजन बना बाबूजीकेँ भोजन करबिहऽ आ हम कटनीक देख-भाल करै छी।"

चैतक रौद चण्डाल रूप लेने छल जे डाक्टर लल बाबूक कोमल देहकेँ कुम्हला देलकैन। घामे-पसीने जखन तर-बत्तर भऽ गेल तखन गाछ-वृक्षक खोजमे नजैर दौड़बए लगल। खेतसँ कनि दूर हटि रस्ता कातमे एकटा आमक चतरल गाछ देखलैन। ओइ गाछक छाहैरमे जा सुस्ताए लगल।

दिनक एगारह बजैत छल। बोनिहार सभ काटल गहुमक बोझ बान्हि दौनीक स्थानपर रखि-रखि अबै छल। गाछतर बैसल लल बाबू अपन परिवारक दशा-दिशापर बिचार करए लगल। एतेक जमीन आ सम्पैत अछि मुदा खेनिहार त' दुइए बापुत छी!

फेर लल बाबूक नजैर दोसर दिस बढ़लैन। जखन एतेक जमीन अछि तखन हमरा गाम-घर छोड़ा शहरमे रखि डाक्टरी किए पढ़ौलैन? डाक्टरी-पढ़ाइ त' बिपरीत भेल। जखन एतेक जमीन अछि तखन एग्रीकल्चर-पढ़ाइ करितौं। उन्नत खेती करितौं। आ बेसी-सँ-बेसी लोककेँ मजदूरीक अवसरो। गामक किसानीक बिकास सेहो नीक जकाँ होइत। मुदा से त' नै भेल।

लल बाबूक मनमे फेर उपकलैन। गाममे रहि डाक्टरी बनि। ओसि-ओसास लेने करब। तहूसँ समाजक भलाइ हएत। संगे आधुनिक तरीकासँ खेतियो कराएब।

रंग-बिरंगक बिचार लल बाबूक मनमे उठैत रहलैन। तखने दस-बारहटा स्कूलिया छात्र-छात्रा आबि ओहि गाछ लग जमाए लगल। गामक बिद्यार्थी। पाँच किलो मीटर दूर जा हाइ-स्कूलमे पढ़ैत।

डाक्टर लल बाबूकेँ ने ओ बिद्यार्थी सभ चिन्हैन आ ने लल बाबू बिद्यार्थी सभकेँ चिन्हैत रहथिन। लल बाबू बिद्यार्थी सभसँ परिचए-पात करए लगला। जखन सभ कियो गामेक छी कहलकैन, तखन निःसंकोच बात शुरू भेल। चारू लड़कीसँ पढ़ाइक बात पुछलखिन। जइमे एकटा लड़की जे मैल-कुचैल वस्त्र पहिरने छलि, मुदा सुन्दर-सुशील छरहर काया, जेना चानकेँ मलिन करैत। डाक्टर लल बाबू ओइ लड़कीसँ नाओं-पता पुछलखिन।

ओ बचिया कहलकैन-

“નાશ્રો યમ્પા છી, ૩Ո૧વ઼ાનિ ટિ૭ક મહેસ૧ળીક એકળીતી વેટી છી।”

યમ્પા પઢૈયોમે તેળ શ્રા દેહો-દશા છ૧હ૧। મૈટ્૧કિમે પ્૧થમ શ્રેણીસઁ ૩ત્ી૧્ા। શાસ્ટ૧ક તૈયાની ળીન-ળાનસઁ કચૈત। ળ૭ વાવૂ પ્૧ભાવ઼િત ભેળ। ળાભાગા વીસ મનિટ સમય નક્કૈ૭ ગે૭ છ૭। સભ વ઼દ્િયાર્થી શ્રોતણસઁ વ઼દિ ભઽ ગેળ।

ગહુમક કટની સમ્પન્ન ભેળ પછાશત ડાક્ટ૧ ળ૭ વાવૂ ઘ૧ શ્રાવિ પિતાળીસઁ હાળ-યાળ પૂછિ દોસ૧ ખોનાક દ્વાર દઽ વળળ-

“વાવૂળી, શ્રપ્પન શ્રનામ કનૂ। હમ નહા-ખ્ા કઽ ગહુમક દૌની કન્ય યળિ ળાએવા”

સાઁઝક સમય ઝૂષામ વાવૂસઁ ભેંટ ક૧ય યાનિ-પાઁચટા મિત્ર શ્રા દૂટા પડોસી એળ। ગપ-સપ્પ હુશ્ર ળાળ। વહુતો ગપો ભે૭ શ્રા સળાહો-વ઼ચિાર ભેળ। ળઽમે ઝૂષામ વાવૂક એકટા મિત્ર- ગનિયાની વાવૂ- સળાહ દૈત કહળકૈન-

“કેતેક દનિ કષ્ટ કાટવ, ળખ્ખન યુમૌન શ્રપને ભૈ કેળી તઁ વેટાક વશ્રિાહ કઽ ળશ્રિ। વેટા ડાક્ટર ભેળ, શ્રો શ્રપન ડાક્ટરી ક૧ત કશ્રિઁક સેવ઼ા ક૧ત। મુદા પુતોહુ તઁ ઘ૧મે ૧હતી દુનૂ વક્તક ભોળન સમૈપ૧ ભેટત શ્રા ઘ૧ક શ્રાનો કાળ દેખતી।”

વાતકેં ળકૈત શ્રા શ્રાગૂ દસિ સ્કૈત દોસ૧ મિત્ર- વપિન વાવૂ- વળળ-

“યૌ, ઘૂપમેિ શ્રપને સવહક ળાતિ શ્રમ૧ યન્દ્૧ વાવૂ એસ઼ડીશ્રો છૈથ। હુનક૧ વેટી- નાની- વીએ પાસ કઽ મડિયિાક કૉળ-સેન્ટ૧મે કાળો કચૈ।”

શ્રાનો ળડ઼કી સવહક યન્ય ભેળ। મુદા ઝૂષામ વાવૂ ૩ત્ત૧ દૈત વળળ-

“દેખૂ હમના તઁ ળ૭ વાવૂ એકેટા વેટા શ્રછિ। વશ્રિાહ કચૈસઁ પહિને હુનકોસઁ ૧ાય-વ઼ચિાર ને ક૧ય પડ઼ત। ળઁ ઽનકાર યળિ ગે૭ તખ્ખન કી હએત।”

વપિન વાવૂ વળળ-

“શ્રો કોનો પૈઘ સમસ્યા તઁ ભૈ છી, શ્રદનાસન વાત-ળ વેસી મગળમાની કએિ ક૧વા શ્રખ્ખે ડાક્ટર સાહેવ ળગ ળા વ઼ચિાર કઽ ળઽ છી।”

૩ઽિ ડાક્ટર ળ૭ વાવૂક કોઠળીમે ળા ગપ-સપ્પ ક૧ય ળાગ। તહી વીચમે વશ્રિાહક યન્ય ૩ઠૌળખનિ શ્રા કેતેકો ૩દાહ૧ણ દેળખનિ। મુદા ડાક્ટર ળ૭ વાવૂ કોનો વચ્ચા તઁ ભૈ છૈથ। શ્રપન પ૧વિ઼ા૧ક સ્થતિ શ્રા દશિા-દશા દેખૈત ૩ત્ત૧ દૈત વળળ-

“વશ્રિાહ ક૧વ મુદા પહિને હમ શ્રપન વ઼ચિાર સુના દઽ છી, તૈપ૧ સભ કયિો એકમત ભઽ ળાએવ તખ્ખન ને।”

વપિન વાવૂ વળળ-

“શ્રપને સ્પષ્ટ ભઽ કઽ વાળૂ ને ળે કી મત શ્રછિ તખ્ખન ને એકમત હએવ કિ શ્રનેક મત।”



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

ડાક્ટર ભાભ વાવૂ વળભ-

"હમ ઓહના ભડ્કીસઁ વિઆહ કરવ ળે પઢભ-ભિખ્ભ હુઅએ આ કમિાનક વેટી હુઅએ ળે પરિવારક કાળ કરૈત હમરો દેખત આ હમરા પતિળીકેં સેવો કરત। શહરી નૈ ગામક ળનિગીસઁ ળુડ્ભ કુભ-કન્યા હુઅએ વનિા દાને-દહેળ ભેને વિઆહ કરવ।"

વપિીન વાવૂકેં માથ ચકરા ગેભૈન। સમહ્વૈત ભાભ વાવૂકેં કહભખ્ખનિ-

"દેખૂ ભાભ વાવૂ, અહાઁ પૈઘ કુભ-ખ્ખનદાનક છી। અહાઁક વરવૈર પરિવાર અપના પરોપટ્ટામે નૈ અછિ। વિઆહક સમ્વન્ધ તઁ ભેક વરાવરીમે કરૈત અછિ।"

ડાક્ટર ભાભ વાવૂ ચુપ ભ્ડ સોચ-વિચારિ વપિીન વાવૂકેં કહભખ્ખનિ-

"અપને પતિાક સમાન છી। હમરા વિચારસઁ સભ મનુખ્ખ એકે ળાતિ છી, ભેઁ કાળ આ વ્યવસાય અભગ કરૈત ળનિકા ળર કાળક હૂનર રહૈ છૈ ઓ સે કાળ કરૈત ળનિગી ચભવૈત।"

વપિીન વાવૂ વળભ-

"તખ્ખન આગૂ કી કરવ, સેહો ખ્ખુભિ કડ વાળૂ।"

ડાક્ટર ભાભ વાવૂ અપન વિચાર સ્પષ્ટ કરૈત આગૂ વળભ-

"ભડ્કી ખ્ખોળૈભ દૂર-દૂર ળેવાક ળરૂરત નૈ અછિ। અપને ગામક ઉતરવારિ ટોભમે મહેસરળીક પુત્રી છૈન, સુન્દર-સુશીભ સભ ગુણસઁ સમ્પન્ન। ળઁ સમ્ભવ હુઅએ તઁ સમ્વન્ધ કરૈક વિચાર કએભ ળાએ।"

ઇ વાત સુનતિ વપિીન વાવૂ તમસાકૅ ઉઠિ કડ ભૂષણ વાવૂ ભગ ળા ળોર-ળોરસઁ વળભ-

"વાવૂ સાહેવ, અપનેક વેટાક મતિ કુમતિ ભડ ગેભ અછિ। ઓ ળાતિ-પાતિ કિછિ ને માનૈએ આ નીચ ળાતિમે વિઆહ કરૈક મન વનૌને અછિ। ળે કિયો ને કેભક સે અહાઁક વેટા કરત આ સમાળમે સવહક નાક કટા કુભ-ખ્ખનદાનકેં ચૈંસા દેત!"

ભૂષણ વાવૂ મિત્રક વાત સુનતિ તમસા ગેભ।મનમે ળેના આગિ ભગિ ગેભૈન। મુદા મનક આગિ મિહ્વૈત વિચાર કરએ ભગભ। સમસ્યા પૈઘ અછિ ળઁ હૂસિ ળાએવ તઁ ન઼ૅહકમે સભ કેભહ પાનિમે ચભિ ળાએત। નિર્ણએ ભેભૈન- ળેના વેટા ખ્ખુશી રહત તહિના કરએ પડત। અરૂભ હમરા આમભિ પીને આરો ગડવડ હએત। એકભૌતા અછિ, ળઁ કોનો દોસર દિસિ ડેગ વઢા ભેત તઁ નમહર મુસવિતમે ફઁસિ ળાએવ।

આગૂ-પાછૂ સોચૈત ભૂષણ વાવૂક મનમે એભૈન- મહેસર ગરીવ આ છોટ ળાતિક છી, ળઁ સમ્વન્ધ કરવ તઁ ગામક ભેક હઁસત। આર ભેઁ વેટા પઢિ-ભિખ્ખિ ડાક્ટર વનિ ગેભ મુદા અછિ તઁ વચ્ચે। વચ્ચા મનમે અવતિ ભૂષણ વાવૂકેં મન પડ્ભૈન, ભાભ વાવૂ અછિ તઁ વચ્ચેસઁ ળદ્દિચાહ આ એક વોભિયા!

खण्डन-मण्डन करैत भूषण बाबू बेटा लग जा बजला-

"बौआ, अहाँ एहेन निर्णय किए लेलौं?"

डाक्टर लल बाबू आदर-भावसँ पितीकेँ कहलखिन-

"बाबूजी, अहाँ पुरना रीति-रेवाज, जाति-पाति, उच्च-नीचक भेद-भावकेँ मनसँ हटा कऽ देखियौ-सोचियौ तखन जे अहाँक हृदय कहत ओ मानि लिअ। अहाँ जनिका गरीब, नीच मानै छिऐन वएह लोक सभ काजो कऽ दइए आ दुख-सुखमे सहयोगो करैए। लोक काजसँ छोट-पैघ होइए मुदा इज्जतमे बराबर होइए। सबहक देहमे लहू एके रंगक होइ छै। हुनके सबहक परिश्रमक बले समाज आ देश टिकल अछि। ई तँ लोकक नजैर बदलल छै जे नीककेँ अधला आ अधलाकेँ नीक बुझैए आ लोके की, ई दोष बेवस्थाक छी।"

बेटाक नीक बात सुनि भूषण बाबूक मन घूमि कऽ घुरियाए लगलैन। घुरियाइते मने विपीन बाबू आ पड़ोसिया सभ लग आबि बजला-

"बेटा हमर जे निर्णय लऽ नेने अछि, से बदलत नै तँए सभ ओहिनी छोड़ि विआह केना सफल हएत तेकर उपाय करू।"

विपीन बाबू बजला-

"ऐ काज लेल अगुआ के बनत। जे अगुआ बनबो करत तेकर मुँह समाजमे थकुचल जाएत।"

भूषण बाबू-

"मित्रक असल पहचान लोक दुखक समैमे करैए। अहाँ हमर लंगोटिया मित्र छी, ऐ दुखक घड़ीमे संग नै देब से केहेन हएत? ऐ काजक भार अहींकेँ दऽ छी। कालहिये अहाँ दू-तीन गोरे महेसरजीक घर जा एकान्तमे बसि समझा-बुझा कऽ मनाउ। तइले अहाँकेँ जे करए पड़त से अपने विवेकसँ करू। मुदा धियान राखब जे आन कियो ने सुनए।"

तैपर पड़ोसिया- चन्दू- बाजल-

"बेसी लोक कहि जाएत, जखने बेसी लोक जाएत तखने काने-कान बीआ-बात भऽ जाएत। ऐ काजक लेल विपीन बाबू असगरे ठीक छैथ।"

विपीन बाबू-

"जँ कहीं महेसर इनकार कऽ देत तखन?"

भूषण बाबू-

"तखन आग्रह-विनती करैत गपकेँ आगू बढ़ाएब।"

વર્પીન વાવૂ મહેસ૧ ઐઠામ ઌેનાર ૩ચ્ચતિ નૈ વુહ્ઉૈના શ્રો સોચ્-વ઼ચિા૧ ક઼ ૧ઘુકૈં મેળ મહેસ૧કૈં વળા એકાન્તમે વૈસ કહઉચ્ચનિ-

"મહેસ૧ળી, શ્રહાઁ શ્રપન વેટી ચમ્પાક વશ્રિાહ ડાક્ટ૧ ઊઉ વાવૂસઁ ક૧ૂ। તઁએ શ્રપનેકૈં વળેઊૈ હેના"

વાત સુની મહેસ૧કૈં મળાક વૂહ્ પિડ઼ઉૈના વળઊ-

"ઈ સભ કહ હિમના કપિ વેશ્ળ્ળત કપૈ છી। કેતએ હમ શ્રા કેતએ જૂષામ્ર વાવૂ! કેના હમના ઐઠામ સમ્વન્ધ ક૧ત!"

મુદા વર્પીન વાવૂ જૂષામ્ર વાવૂક ચ્ચાઁટી મિત્ર છથિન। દૂડ઼-શ્રૂસક માઁળમે કહિયૌ ને ૧હૈવઊ ઊક છૈથ। મહેસ૧ ચૂપ। વર્પીન વાવૂ મહેસ૧ દિસ તકૈથ શ્રા મહેસ૧ વર્પીન વાવૂ દિસ।

વહુતો પ૧ચિ઼ાસસઁ મહેસ૧કૈં સમ્વન્ધ ક૧વા ઊ મના ઊઉચ્ચનિ। વાત માનતિ મન હ૧ચિ઼ૈના મનક મૌચ ટપકએ ઊ૧ઉૈના ચ્ચુશીક માહૌઉ દેચ્ચ વશ્રિાહક દિન નશ્રિતુકો મેઉ શ્રા તૈચ઼ા૧ીમે સભ ળુટિ ગેઊ। વિનુ દહેળક વશ્રિાહ, ચ્ચૂવ ધુમ-ધામસઁ સમ્પન્ન મેઊ। મુદા ળચ્ચન વેટીક વ઼િદાઇક સમએ શ્રાએઉ તચ્ચુનકા દ઼ૃશ્ય દેચ્ચઉ નૈ ગેઊ। એતેક દર્દનાક ૧હએ ળે સવહક શ્રાઁચ્ચિસઁ નો૧ વહએ ઊ૧ઊ।

ળહિના દુઉહ મર્ટુગા૧ તહિના દુઉહિનો। સમાળક ઊક સભ વાળએ- ચમ્પાક મા૧ક શ્રભાવક પુ૧ા કે ક૧તી। ચમ્પાકૈં સાસુ૧ વસને મહેસ૧ શ્રસગ૧ે શ્રનાથ ળકાઁ વુઢાડ઼ી કેના કાટત?

ચમ્પા વ઼િદા૨ મઽ સાસુ૧ ગેઊ। સાસુક શ્રભાવ મેને ઘ૧ક કાળ શ્રપનેસઁ ક૧એ ઊ૧ઊ। પુતોહુક ઊ૧-ઢંગ દેચ્ચ જૂષામ્ર વાવૂ ચ્ચુશ ૧હએ ઊ૧ઊ। સ્વર્ગક સમાન ઘ૧ક વાતાવ૧ણ વની ગેઊ।

ચમ્પાક પતિ શ્રસગ૧ૂશ્રા। શ્રસગ૧ૂશ્રા ળનિગી મેને મહેસ૧ળીક ઘ૧ ન૧ક સમાન ઊૌત।

કછુ દિનક પછા૧ત શ્રનચોકેમે જૂષામ્ર વાવૂ મહેસ૧ળીક ઘ૧ એઊ। શ્રવતિ સમૈચક દશા દેચ્ચ મન દુચ્ચા ગેઉૈના મનમે ૩ઠઉૈન, સમૈચક દુચ્ચક ળનિગી કેના વાઁટઉ ળાએ?

કની કાઊક પછા૧ત જૂષામ્ર વાવૂ વળઊ-

"સમૈચ, શ્રાવ શ્રપના સભ એક મેઊૈ। એક ચ્ચૂન શ્રા એક ૧સ્તાક પ૧વાિ૧ મેઊ। શ્રહાઁકૈં શ્રસગ૧ દેચ્ચ હમ૧ વ઼ચિા૧ શ્રછિ ળે એકેઠામ એકે પ૧વાિ૧મે ૧હી। ળેહને હમ૧ વેટા પુતોહુ તેહને શ્રહૂઁક વેટી ળમાએ"

મહેસ૧ળીક મનમે કેતેકો વાત શ્રાવએ ઊ૧ઉૈના એક તઁ શ્રોહિના સમાળક ઊક ૧ંગ-વિ૧ંગક વાત વળૌએ, ળે મહેસ૧ એના કપિ કેઊક। ચમ્પા ગામક વેટી મેઉ શ્રાકિ પુતોહુ? જૂષામ્ર શ્રા મહેસ૧ ગામક મૈચ઼ા૧ી મેઊ શ્રાકિ સમૈચ? ઇત્યાદિ શ્રા તૈપ૧ વેટી ઐઠામ ૧હવ કેતે ૩ચ્ચતિ?

શ્રો

इज्जतक सवाल

गामक मुँहपुरुख मुखियाजी चंचल बाबूक बहिनिक बियाह छी। गौआँ सभ पहिनहिसँ नाचक ओरियान करैत मुखियाजीसँ कहने छथिन। मुखियाजी नाचक कम्पनी पूसूस्ठ रहमानकेँ बजा नाचक साटा बनौने छथि। रहमान कम्पनीक नाच ऐ परोपट्टामे नामी अछि।

जखने नटुआपर चोट पड़ैए कि कोस भरिक नाच देखनिहार जमा भऽ जाइए। जहिना ऐ नाच पार्टीमे एक-पर-एक नचनियाँ-गवैया अछि तहिना ढोलक-नटुआक संग आनो-आन साज-बाज। सभ साज-बाज आ नचनियाँ-गवैयाक संग ताल-मिलानी सेहो सुन्दर अछि। तेतबे नै, बीच-बीचमे रसमंजरी लल लोकगीत आ भाव नृत्यक बेवस्था सेहो नीक अछि। जइमे इलाकाक मशहूर दूटा डान्सर कलाकार लखना आ बुचना अछि। एक तँ नाच मशहूर तैपर फिल्मी गीतक संग डान्सो होइत।

दिनमे मुखियाजी पूसूस्ठ रहमानकेँ बजा कहलकैन-

"देखू रहमान, आइ इज्जतक सवाल अछि। बरियातीसँ लऽ कऽ गौआँ-घरूआ सभ रहत, कनिको कोनो अभाव नै होइ। नीकसँ नाच हुअए, कोनो हल्ला-फसाद ने उठए तेकर धियान रखिहऽ। जगह देख नाचक मंच जतए नीक बैसत से सभ अपने बना लएह।

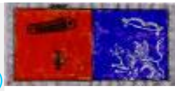
नाचक मेरियामे जेतेक कलाकार सभ छैथ, सभकेँ समैसँ पहिनहि बजा, खुआ-पीआ दिहक।"

कम्पनी रहमानजी मुखियाजीक बात सुनि मंच बनबैक ओरियानमे भीर गेल। मंच बनि तैयार भऽ गेल।

साँझक समए नाचक सभ मेरिया पहुँच गेल मुदा दुनू डान्सर नै पहुँचल। कम्पनी रहमानजीकेँ चिन्ता बढ़ि गेलैन। इज्जतक सवाल अछि, जँ नाच गड़बड़ हएत तँ हमर कमाएल इज्जत माटिमे मिलि जाएत। ऐ समाजमे जे नाचक खातिर हमरा प्रतिष्ठा भेटल अछि से डूमि जाएत।

लखना आ बुचना दोसर कम्पनीक नाचक मेरियामे नाचए गेल छल। ओना ओ साटा काल्हियो तकक रहै, मुदा नाच सुन्दर भेने दुनूकेँ रोकि लेने छल। दोसर कम्पनी लाल बिहारीसँ पूसूस्ठ रहमानकेँ दोस्तियारी छैन। लाल बिहारी कोसी बेल्टक नामी नाच कम्पनी छैथ। कोसी बेल्टमे रंगदारियो बेसी छइहे, कछु रंगदार लाल बिहारीकेँ घेरने छल जे एक राति नाच देखा जइहह। जे पाइ लेबह से लिहह।

कम्पनी लाल बिहारी सोचै छल जे बेसी रुपैआ हएत तँए दुनू डान्सरोकेँ बेसी रुपैआक लोभ देने छल। तैपरसँ चारि-पाँचटा भोलन्टीयरकेँ सेहो लगौने छल जे कही लखन-बुचना भागि ने जाए। नाचो सबेर-सकाल शुरू करबाक छेलै। गामक लोक सभ नाच देखैले बेहाल। घर दरबज्जासँ सटल नमहर चौमास खसल छल। तहीमे नाचक स्टेज बनि तैयार छल। लाल बिहारीक मन चपचपाइत जे आइ हमर नाम आरू इलाकामे बढ़त। मुदा जे इज्जत नाच खातिर लाल बिहारी कमबए चाहै छल तइसँ बेसी



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रहमान कम्पनीकेँ रुपैयाक सवाल छलैक आर रहमानक नाच नै जमतै तँ कमाएल रुपैया माटिमे मिलि जेतइ। दोसर, मुखियाजीक रुपैया सेहो।

पूसूस्ठ रहमानक मनमे शंका हुअ लगलै जे कोनो साजिश रचि लल बहिनी हमरा संगे छल कऽ रहल अछि। से तँ हम अपना जीबैत नइ हुअ देबै। दोसर-तेसर साँझ पड़ल। तीनटा बलन्डागर संगीकेँ संग कऽ रहमानजी लखना-बुचनाक खोजमे निकलल। चलैकाल रहमानजी नाचक मनेजरकेँ कहि देलक जे अहाँसभ समैपर नाचक ओरियान करब। हम बुझू गेलौं आ एलौं।

रहमानजी चारू गोरे लस्टैत कदमाहाक पुबारि टोल दिसि चलल जे कोसीक छोटका धारक पुबरिया छीटपर भरगिर बस्ती अछि। छोटका नाहसँ पार भऽ लल बहिनीक घर पहुँचल।

लल बहिनी दलानमे लोकक भीड़, अपने लल बहिनी महीस दूहै छल। महीस दूहि ओहि दूधक चाह बना आ काजकर्ता सभकेँ पीऔत आ तेकर बाद नाचक ओरियान करत। घरसँ सटल नाचक स्टेज बनल देख रहमानजी बूझि गेल जे ऐ खातिर लल बहिनी लखना-बुचनाकेँ रोकने अछि।

रहमानजी दरबज्जासँ दूरे रहए तखने जोर-जोरसँ लल बहिनीक नाओ लऽ लऽ पुकारए लगल। अवाज दैत लगमे पहुँचल आ बाजल-

"हमर समांग लखना-बुचना केतए अछि, अखन तक गाम नै पहुँचल हेन?"

लल बहिनी करिया खाइत बाजल-

"जनत भगवान, हम सभ अखने कनियेँ पहिने गाम एलौं। बड़का कोसीक ओइ पारसँ। लखना-बुचना ओहि पारमे नदी छीलैल गेल छल तखने नाह खुजि गेल। अखन रातिमे नाह नै आएल तँए ओ दुनूगोरे ओहि पारमे रहि गेल।"

मुदा रहमानजी नाचक ओरियान आ स्टेज बनल देखने, कछु ने नाचक खातिर लखना-बुचनाकेँ नुका कऽ रखने अछि। बाजल-

"लल बहिनीजी हमरा संगे अहाँ कपट केलौं। दोस्तीमे कुस्ती करब की?"

कहि रहमानजी बड़का कोसी दिसि बिदा भेल। बस्तीसँ हटि रहमानजी बिचार केलक जे अछि तँ दुनू छौड़ा अहिठाम। से नइ तँ नाच शुरू होइसँ पहिने मेकप करबे करत। पहिने मेकप करत तखन ने स्टेजपर जाएत। तहि घड़ी पकैड़ लेब आ गाम दिसि बिदा भऽ जाएब।

एकटा संगी बाजल-

"आ जखन गौआ सभ लैड़ करत तखन की करब?"

रहमानजी अपने रंगबाज, हिम्मतगर लोक। अपना जमानाक खलिस्ता। बाजल-

"किछु ने कियो कऽ सकत। खाली दुनूकेँ पकड़ पहिने।"


मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

रहमानजी चानू गोरे बाँटा-बाड़ीमे नुका कऽ बैस गेल। किछु कालक बाद जखन नायक सूरसार भेल तखन चानू गोरे सोहे मेकप तुमने जा दुनूकेँ पकड़लक। दुनू गोरेकेँ दुनू दिसिसँ दुनू गोरे दुनू बाँहि पकैड़ सोहे गाम दिसि बढ़ि भेल। एक सब देखते रहि गेल। जहिना पिजरासँ पक्षी उड़ि जाइए तहिना।

बुधनाकेँ रहमानजी कहलक-

“एकोटेर बजेले नँ नस काटि चारमे फँसिया देबौ।”

रहमानजीक बात सुनि दुनू छौड़ाक होश उड़ि गेल। छोटाक कोसी चार पार भऽ ससौलीमे दूटा मोटर सांस्कृतिक बेवस्था कऽ साढ़े दस बजे रातिमे स्टेज लग पहुँचल।

नायक स्टेजपर बाजा गनगनाइत छल। देखनिहार एक कतार लगल छल। गौआँ सब बरियातीक स्वागत करैत छल।

लखना-बुधनाक मेकप भेलै छेलै, स्टेजपर चढ़ा देलकै।

प्रार्थनाक गीत भेल पछाइत स्वागत गीत आ डान्स शुरू भेल-

“परदेसे रहबे दो परदा न उठाओ।”

बरियातीक स्वागतक पछाइत मुखियाजी रहमानक खोज केलैन। खोजैत नायक स्टेज दिसि एल। रहमानपर नजैर पड़ति मुखियाजी रहमानक मन दुखी देखलैन। पुछलखिन-

“रहमान भाय, मन दुखी देखै छथि! किछु भेलह हेन की?”

रहमान बाजल-

“भेल तँ किछो मुदा कनी परेशानी नँ उजुरक खातिर होइते छै।”

मुखिया रहमानक बात नै बुझलैन। रहमान बाजल-

“अपन अपनका काज निपटए दिऔ, काल्हि भिनसर सब बात कहि सुनाएब।”

ओ

लेखक महंथी



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

ળેઙ્શ્રા સમય ગમ્ભીક તપશિ શ્રા ઉમ્મસ નહને હવા ગુમ-સુમ બેઉ અછિ બામ્હડાન કોશમે થોડવે ચટિસ્કટાહ કનિયાએઉ મેઘ વૂહ઼િ પિડઉ। કછિુ વેગા વનખ્ખાક શ્રાગમ માનિ ટિનન-ટનન કનય ઉગાઉ। ળખ્ખને બામ્હડાન કોશમે મેઘ ળુટ્શ્રા દેખાઇય તઁ ઉકો સબ શ્રનુમાન કનય ઉગૈય ળે કછિુ-ને-કછિુ વનખ્ખા હેવે કનત। તૈપન વેગાક વોઉ સુનિ પૂન્નમૂપેન ઉક વૂહ઼િ ળાઇય ળે વનખ્ખા હયત। વનખ્ખા હયત તખ્ખને ને ઉક વોશ્રા-વાઉ પાડત। બેઉ સયહ। હવો ઉડઉ શ્રા વનખ્ખો બેઉ। નીક વનખ્ખા બેઉ। ખ્ખત્તા-ડવના બનિ ગેઉ શ્રા ખ્ખેતોમે ડકના હાઉ બડ ગેઉ। ખ્ખત્તા-ડવનાકેં બનને વેગા સબ શ્રપન-શ્રપન ળગાહ પકૈડ ટનટનાય ઉગાઉ। સબ વેગા ખ્ખુશી મનવૈત કયિો ટનટનાઇત તઁ કયિો ગીત ગવૈત। તૈવીય એક્ટા વેગા પનવ઼ચન કનય ઉગાઉ-

"હમ વેગામે શ્રેષ્ઠ છી, ળ્ઞાની છી, સે શ્રહાઁ સબ માનિ ઉશ્રિ। કિયેક તઁ હમ વનહમસિયા વેગા છી। સવહક સબ દિનિ સેવો કનૈત સુખ્ખે ળમીનપન શ્રા પાનિયોંમે દુખ્ખ-સુખ્ખ સહિ ળિનિગી વિતિવૈ છી। મુદા શ્રહાઁ સબ તઁ સમૈયા વેગા છી। ળખ્ખન વનખ્ખા હોઇય તખ્ખને ઝુનુકવા ળકાઁ ઝુક-દે ઉગા દિન્શન દઇ છી। વાઁકી સમય વિઉાએઉ નહૈ છી। તઁય શ્રહાઁ સબ શ્રપનામે ઠીકસઁ વ઼ચિાનિ કડ હમના કાળ-બાન દિશ્રિ।"

ઢૌસા વેગા વાળઉ-

"શ્રસઉ વેગા તઁ હમ સબ છી, શ્રહાઁ કેના એળે છોટ નહૈત નમહન પદક બાન ઉવય ચાહૈ છી।"

કડવેગા વાળઉ-

"હમના છોટ શ્રહાઁ ને વુહૈ છી, મુદા પઢિ-ઉખ્ખિ ળ્ઞાની વનિ પિનવ઼ચન ળે કનૈ છી શ્રા ળ્ઞાન વઁટૈ છી તખ્ખન મહંથ કેના ને વનવ।"

કડવેગાક વાત સુનિ એક્ટા ઢૌસા વેગા સસૈન કડ કડવેગાક ઉગામે શ્રાવિ વાળઉ-

"શ્રપને ળે કહૈ છી 'હમ મહંથ વનવ' સે કેના વનવ? વેગા નહિતો શ્રપનેક મહત વેગાક શ્રોમીમે શ્રછિ કેતે? ઢૌસા વેગા સામને શ્રહાઁકેં કે પૂછત? શ્રસઉમે વેગાક સનદાન ઢૌસા શ્રછિ શ્રો કેના શ્રપન ળાતકિ મુઁહ-પુનુખ્ખી શ્રહાઁકેં દડ દેત? ળે વળઉ સે વળઉ, એતયસઁ સોહે શ્રાપસ બડ ળાઉ।"

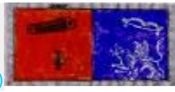
કડવેગા વાળઉ-

"એોક દિનિ ને હમ પછુશ્રાએઉ નહિ, મુદા શ્રખ્ખૈન તઁ ચોગ્ય છી તખ્ખન શ્રહાઁ સબ મહત્ત કહિ ને દેવ।"

ઢૌસા વાળઉ-

"શ્રપને છોટ બડ કડ એોક છી શ્રા હમનામે ળે સેનસઁ ઉડ કડ શ્રઢૈયા તકક શ્રછિ, ળે શ્રહાઁકેં કખ્ખનો ખ્ખા-પચા સકૈય, સે કછિુ ને? છોટ-મુઁહ શ્રા નમહન વાત! બાગૂ નઇ તઁ સબટા પનવ઼ચન ઘોસાઇન દેવ।"

કડવેગા હમ્મિતગાન, હવા પીવ દેહ હનુમાન ળકાઁ શ્રુઉવય-વઢવય ઉગાઉ। તૈવીય દોસન ઢૌસા વેગા ઉગા શ્રાએઉ શ્રા વાળઉ-



"અહાઁક વળ-જુળકીસઁ હમ સભ થોડ઼વે ઙળવા અહાઁ અપ્પન યળ વેંગ ળાળકિ ઊઇ કી સભ કેઊરિ હેના ને ળાળમિ મણિ કઽ નહઊરિ આ ને કોનો ળયિાગી-ળપસ્વી વળ ળાળકિ ઉદ્યાન કેઊરિ, ળપ્પન મહ્થી કેના યાહૈ છી।"

એમહન સભ વેંગ અપન-અપન ઘેઘ સુઊા-સુઊકા ભો-ભાઁ કનએ ઊગલ। મુદા કઙવેંગ હેહન-થેથન વળ ટિસસઁ મસ નઽ ભેઊ। ળપ્પને ળેસન ઢૌસા વેંગ યૌકન્ના હોઇ ઊગ આએઊ, વૃદ્ધ પિઙઊ ળે ળાળકિ સેનાગન સનદાન છી, વાળઊ-

"અપને અસઊમે પનવચન કન્ળા છી આકહિઊ-સાઊમે ઢોગી વળ ળાળમિ યાક ળમવએ યાહૈ છી? આઇ યળ દીસનાક સુળઊ પનવચન કેઊરિ કિ અપન વચન ઊકકેં સુનેઊરિ? ળગિની કેહેન નહઊ અછિ ળૈપન પહિનિ વ઼યિાન કનૂ ળપ્પન ને સમાળ મહળ દેળ ળપ્પન સમાળકિ ળગિગી નહળા।"

સવાલક ળવાવ દૈળ કઙવેંગ વાળઊ-

"અહાઁ સભ ળઁ અસઊમે અવસનવાદી સામન્ળવાદી કમળિયિા છી સાઊમે ળીન-યાન મિસ પાળકિ યળકિ ભેને દન્શન દઇ છી, મુદા હમ ળઁ વાનહી માસ સવહક સામને અપન સમાળમે નહૈ છી। ઊકક કઊયાણ કનૈ છી। સે કેના સેહો સુળયિેં ઊચ્ચિ- ળપ્પન નૌદી ભેને ઊક ળટ-ળટીન વનપ્પા પ્યાળિ પ્યૈઊએ ળપ્પૈન ઉકપ્પૈનમે દઽ હમના સમાઙસઁ કુટેએ આ હમ વેદમોમે વાળ-વાળ મિઘકેં વળવૈ છી આ વનપ્પા હોઇ છૈ। ઊકક કઊયાણ હોઇ છૈ। હમ કેના ને ઊકક હિળ-કઊયાણ ઊઇ ળયિાગ આ વઊદાન કનૈ છી? છૈથ કયિો હમના સન ળયિાગી, ળઁ હુનકા સામને આનૂ, હુનકે મહ્થી સભ મણિ દઽ દેવૈના।"

કઙવેંગક વાળ સુનિ ઢૌસા-સનદાનકેં મન ગનમેઊઇ। ગનમાઇને ઊપૈક કઽ કઙવેંગક ગનદૈન પકૈડ઼ કુશ્ળી કનએ ઊગલ। મુદા હમિળગન કઙવેંગ, અપન ળાન ગમવૈઊ ળૈયાન હોઇ ઙઁટઊ નહઊ।

એકાએકી વહુળો ઢૌસા વેંગ આએઊ આ સનદાન વેંગકેં કહઊક-

"સનદાનળી, નાઁહકમે અપન ઊન્ળાકેં કહિ નોકસાન કઽ નહઊ છી। એોક દનિ અપના સભ મહ્થી નેને નહી, મુદા આવ કછિુ દનિ હનિકે મહ્થી દઽ દયિૌ। ળપ્પન ળાન ગમ્વૈઊ ળૈયાન અછિ, માટપિન નહૈક આદળ છૈ, માનિ કઽ યઊ ને ળે સમાળ ઊઇ ળનૂન કનળા।"

આો

[1] આોહન કવ઼ ળિનિકન વ઼ાયા કન્મામા વહુળ અન્ળન નહૈ।



ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

३. पद्य

३.१ आशीष अनचिन्हार- २८ गजल

३.२ **ओम प्रकाश- गजल**

३.३ बाबा वैद्यनाथ-आठटा गजल

३.४ जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल- गजल

३.५ पल्लवी मण्डल- समय

आशीष अनचिन्हार- २८ गजल

गजल

१

हमरो समय बीति जेतै

हुनको समय बीति जेतै

ओकर स्वादक सहारे

सड़ल समय बीति जेतै

उज्जर पीयर नील हरियर

ललको समय बीति जेतै

बंदूक संदूक जे छै

ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२)मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

ળકનો સમય઼ વીતિ ળેતૈ

પુનના સમય઼પન નૈ હઁસયિ઼ૌ

નવ઼કો સમય઼ વીતિ ળેતૈ

સગ઼ પાઁતમિ ૨૨૧૨ + ૨૧૨૨ માત્નાક્નમ અછિ

અંતમિ શેનક પહિલ પાઁતમિ એકટા દીન્ઘકેઁ લઘુ માનવાક છૂટ લેલ ગેલ અછિ

૨

૬ હઁસી ભાવા છૈ

ઓ ખુશી જુળ્ળા છૈ

છૈ હમન દુખ્ખ કાશી

સુખ્ખ હુનક કાવા છૈ

દેહ પૂના પૂની

મોન કછિુ આયા છૈ

ડોન છૈ ળડ઼કુન સન

આઁપ્પિ વિસ ડાવા છૈ

ખાગ ંગાક સીમા

પ્રેમમે વાયા છૈ

સભ પાઁતિમે ૨૧૨+ ૨૨૨ માત્રાક્રમ અછિ

ઐ રચનાપર અપન મંતવ્ય <u>ગગાળેનદ્રા૦વિદિહાચોમ</u> પર પઠાઉ।

ઓમ પ્રકાશ

ગળલ

સનિહક યયના પળરલ કએ નૈ
ઉછેહક સાગર ઉમડ઼લ કએ નૈ

કછિો નૈ રહલૈ હમ આવ ઓકર
ળપ્પન ઓ હમના વસિરલ કએ નૈ

કળેકો યક્કા સહ સિહ વિયલ છૈ
નગર ઈ યાદકિ ઉળડલ કએ નૈ

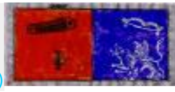
હમર આઁપ્પિસઁ પ્રનક નીર હહૈ
હુનક છવિ મોનસઁ સસરલ કએ નૈ

ળરૈ છી હમ દનિ આ રાતિ સિદપ્પિન
કરેળા 'ઓમ'ક કુહરલ કએ નૈ

માત્રાક્રમ અછિ ૧-૨-૨-૨, ૨-૨-૨, ૧-૨-૨ પ્રત્યેક પાઁતિમે એક વેર।

ઐ રચનાપર અપન મંતવ્ય <u>ગગાળેનદ્રા૦વિદિહાચોમ</u> પર પઠાઉ।

વાવા વૈદ્યનાથ



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२९६ संतोष बनल अछि "बाबा"दुनियाँ बड़ सम्मान दैत अछि

सभक नजरिमे हम पूजाकेर मानू 'अक्षत-दूर्वा' रहल छी।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल
गजल
ई जे घर आ आँगन छै
सबहक अपन जीवन छै

छै कहियो बरखी ककरो
कहियो ककरो मूड़न छै

सकुनी के चलती समाजमे
जै- जै ठाँ दुर्योधन छै

कहनो ककरो नै टारू
सभ ले' ई आयोजन छै

बाजार- दहनक मेलामे
जनियौ कतौ बाजार छै

मात्रा-क्रम : २२२२-२२२

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA



𑒣𑒪𑓂𑒪𑒫𑒲 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪, 𑒑𑒰𑒧 𑒥𑒹𑒩𑒧𑒰, 𑒖𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲

𑒮𑒧𑒨

𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒢𑒥𑒰𑒏𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿
𑒮𑒧𑒨 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒥𑒢𑒴𑒿
𑒖𑒹 𑒢𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱!
𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢
𑒢𑒹 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒪𑒹𑒪 𑒩𑒳𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱
𑒂 𑒢𑒹 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼𑒮𑒿 𑒢𑒤𑒩𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞
𑒂𑒩𑒼 𑒞𑒹𑒖 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱
𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒍 𑒃𑒧𑒰𑒢𑒠𑒰𑒩𑒲𑒮𑒿 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱
𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒖𑒹 𑒋𑒏 𑒥𑒹𑒩
𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒰𑒢𑒴 𑒫𑒰 𑒧𑒰𑒟𑒰 𑒣𑒲𑒙𑒴
𑒍 𑒂𑒣𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒋𑒞
𑒖𑒿 𑒔𑒪𑒥 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑
𑒄 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒧𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒱𑒞 𑒏𑒋
𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒤𑒪 𑒥𑒢𑒰𑒋𑒞

𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒐𑒰𑒮 𑒢𑒯𑒱



ओकर कियो अपन विश्वास नहि
ने कनिको बैसी, ने कनिको कम
समय अछि ई जे अछि
सबक लेल एक रंग! !

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

बालानां कृते
विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम
भाषापाक
७□ शशधिर कुमार

ऊद या ऊदबिलाड़ि (बाल कविता)

कोना करै छै, देखहि एकरा,

ऊदमाति चऽ लेलकैए।

की छी ऊद आ केहेन ऊदमाति,

ककरा चऽ लेलकैए ??

ऊद छी जीव, जमीनक बासी,

तइयो छै बड़ पानि प्रिय।

पानिमे हेलए, डुम्मी काटए,

ओकरा छै बड़ माछ प्रिय॥

देहमे ओकरा बड़ छै स्फूर्ती,

बुट्टी - बुट्टी चमकै छै।

की जमीन, की पानिक भीतर,



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

મસ્ત - મગન શ્રો નમકૈ છૈ ॥

વૈસનિ નહ્રછ શ્રો નયિનસઁ,

પાનમિ કનૂછ વડ઼ છ઼ઉમઉ।

ગૈં કહવી છૈ - ઉદમતાયિઉકૈ,

ળકન મોન વેસી યંયઉ॥

ઉદમતા મોન ને નહ્રપ થીન,

ઉગાઉ એમ્હન, ઉગાઉ શ્રોમ્હન।

ળેના "ઉદ" ને નહૈછ થીન,

એપ્પને એમ્હન, એપ્પને શ્રોમ્હન॥

<u>સંકેત શ્રા કછુ નોયક તથ્ય</u> -

ઉદ વા ઉદવિળાડ઼ મુપ્યતઃ સ્થઉીય ળીવ શ્રછિ શ્રા મીઠ પાનકિ ળઉાશય સભસઁ ઉઽ કઽ સમુદ્રક નોનગાન પાનાિ યનિ મેટૈછ। શ્રો માંસાહાની ળીવ શ્રછિ શ્રા માછક શકિાન કનવામે વહુત માહિનિ હોશ્ત શ્રછિ। શ્રો પાનમિ ડુમ્મી કટવામે શ્રા ગોતા ઉગાએવામે શ્રત્યન્ત કુશઉ હોશ્ત શ્રછિ। વાંગ્ઉાદેશમે એકના પોસુશ્રા વનાએ પ્નશિક્ષિત કએઉ ળાશ્ત શ્રછિ શ્રા પ્નશિક્ષિત ઉદ મનુક્પ્યક ઉેઉ નદીમેસઁ માછ પકડ઼િ કઽ શ્રાનૈત શ્રછિ।

ઐ નચનાપન શ્રપન મંતવ્ય <u>ગગાળેનદ્દના૦વિદ્દિહ્યોમ</u> પન પઠાઉ।

વ઼દિહ



મૈથઉિ સાહિત્ય શ્રાન્દોઉન



ejournal 'विदेह' २१२ म अंक १५ अक्टूबर २०१६ (वर्ष ९ मास १०६ अंक २१२) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA


सिद्धिरस्तु